पिता के पत्र पुत्री के नाम

जवाहरलाल नेहरू

पिता के पत्र पुत्री के नाम

जवाहर लाल नेहरू

विषय-सूची

नवम्बर

प्राय: बच्चे अपने माता-पिता को आराध्य मानते हैं, लेकिन सब माता-पिता अपने बच्चों के उतने अच्छे साथी नहीं होते जितने मेरे थे। मेरे पिता हर चीज़ में रुचि रखते थे ओर दूसरों को भी इसके लिए उत्साहित करते थे और ऐसा करने में उन्हें आनन्द आता था। मेरे मन में अनेक प्रश्न उठते रहते थे और इसलिए उन्होंने मुझे दुनिया के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं, इस दुनिया में रहने वाले स्त्री-पुरुषों के बारे में बताया और उन लोगों के बारे में बताया जिन्होंने अपने विचारों और कार्यों द्वारा तथा साहित्य और कला के माध्यम से दूसरों को प्रभावित किया। उन्हें सबसे ज्यादा आनन्द आता था हमारे अद्भुत देश के बारे में बोलने-बताने और लिखने में, इसकी प्राचीन उपलब्धियों और इसके गौरवमय इतिहास तथा बाद को इसकी अवनति तथा गुलामी के बारे में बताने में। एक बात जो उनके दिमाग में सबसे ज्यादा रहती थी वह थी स्वतंत्रता की—केवल भारत की ही नहीं बल्कि दुनिया के समस्त लोगों की स्वतंत्रता।

ये चिट्ठियां जब मैं 8-9 साल की थी तब मुझे लिखी गई थीं। इसमें बताया गया है कि पृथ्वी की शुरूआत कैसे हुई और यह भी बताया गया है कि मनुष्य ने अपने आप को कैसे धीरे-धीरे समझा-पहचाना। ये चिट्ठियां केवल पढ़कर रख देने के लिए नहीं थीं। ये चिट्ठियां एक नई दृष्टि प्रदान करती हैं और लोगों के बारे में सोचने-विचारने की भावना पैदा करती हैं और विश्व में चारों ओर क्या हो रहा है इसके बारे में जानने की अभिरूचि उत्पन्न करती हैं। इन चिट्ठियों से यह शिक्षा भी मिलती है कि प्रकृति को पुस्तक समझकर उसका अध्ययन करना चाहिए। मैं कंकड़-पत्थरों पेड़-पौधों तथा कीड़े-मकोड़ों के जीवन का तथा रातों को सितारों का दिलचस्प अध्ययन करने में घंटों व्यतीत कर देती थी।

ये चिट्ठियां पुस्तक रूप में विभिन्न भाषाओं में पहले प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि यह आकर्षक नवसंस्करण बच्चों को भाएगा और उनमें नई चीज़ों को जानने की अभिरुचि पैदा करेगा जैसा कि मूल चिट्टियों को पढ़कर मेरे साथ हुआ था।

इन्दिरा गांधी
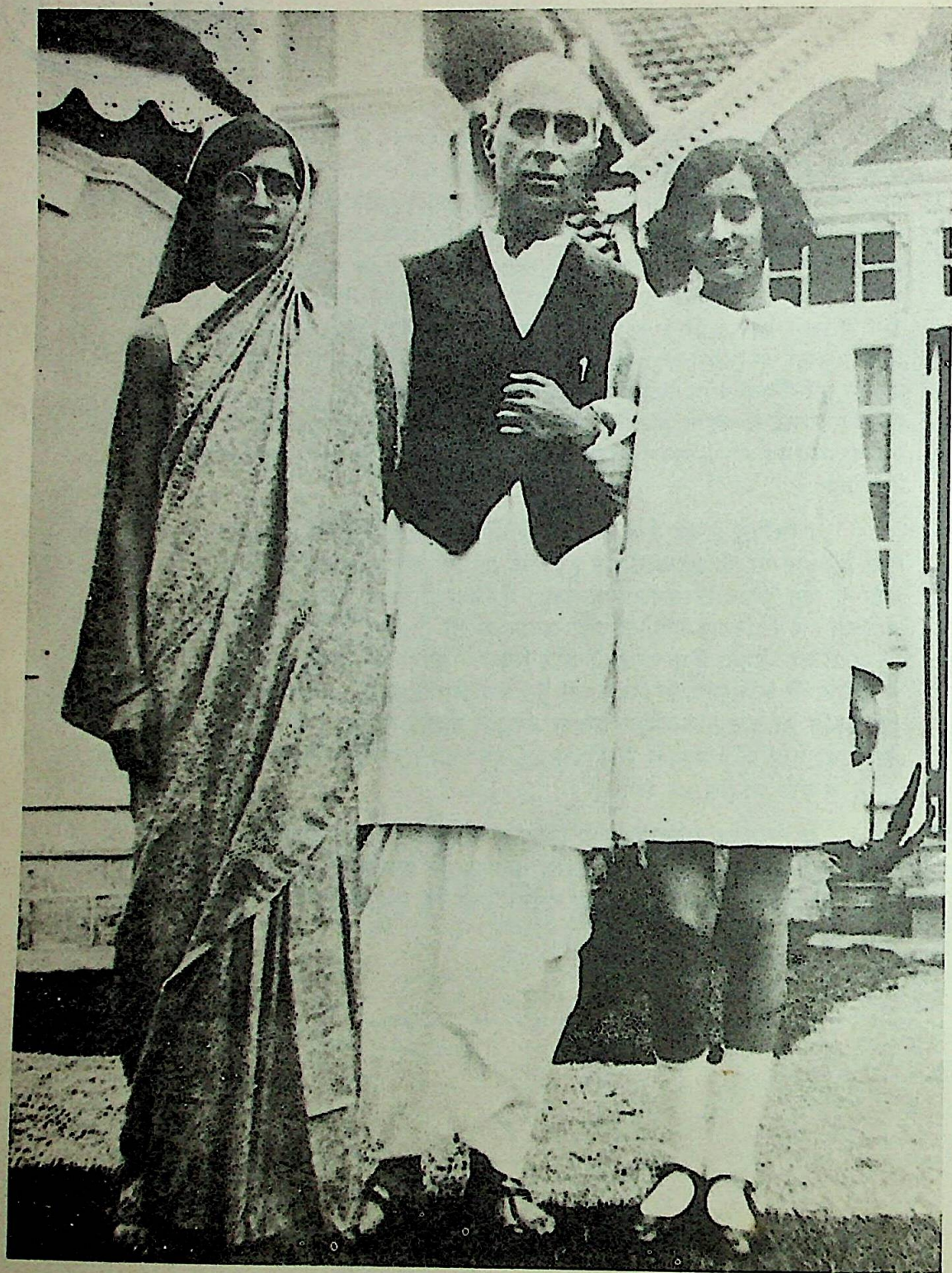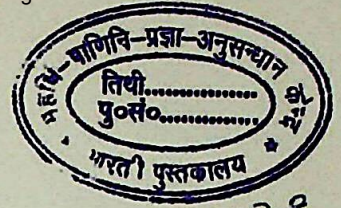
दो शब्द

तीन बरस हुए मैंने ये खत अपनी पुत्री इन्दिरा को लिखे थे। वह उस समय मसूरी में थी और मैं इलाहावाद में था। वह दस वर्ष की थी और यह खत उसी के लिए लिखे गये थे और किसी दूसरे का खयाल नहीं था। लेकिन फिर बाद में बहुत मित्रों ने मुझे राय दी कि मैं इनको छपवाऊं ताकि और लड़के और लड़कियाँ भी इनको पढ़ें।

पत्र अंग्रेज़ी भाषा में लिखे गये थे और करीब दो वर्ष हुए अंग्रेज़ी में छपे भी थे। मुझे आशा थी कि हिन्दी में भी जल्दी निकलें लेकिन और कामों में मैं फँसा रहा और कई कठिनाइयां पेश आ गईं इसलिए देर हो गई।

ये खत एकाएक खतम हो जाते हैं। गर्मी का मौसम खतम हुआ और इन्दिरा पहाड़ से लौट आई। फिर ऐसे खत लिखने का मौका मुझे नहीं मिला। उसके बाद के साल वह पहाड़ नहीं गई और दो बरस बाद १९३० में मुझे नैनी की—जो पहाड़ नहीं है—यात्रा करनी पड़ी। नैनी-जेल में कुछ और पत्र मैंने इन्दिरा को लिखे लेकिन वे भी अधूरे रह गए और मैं छोड़ दिया गया। ये नए खत इस किताब में शामिल नहीं हैं। अगर मुझे बाद में कुछ और लिखने का मौका मिला तब शायद वे भी छापे जावें।

मुझे मालूम नहीं कि लड़के और लड़कियाँ इन खतों को पसन्द करेंगे या नहीं। पर मुझे आशा है कि जो इनको पढ़ेंगे वे हमें, हमारी दुनिया और उसके रहने वालों को एक बड़ा कुटुम्ब समझेंगे। और जो भिन्न-भिन्न देशों के रहने वालों में वैमनस्य और दुश्मनी है वह उनमें नहीं होगी।

इन अंग्रेजी पत्रों का हिन्दी में अनुवाद श्री प्रेमचन्द जी ने किया है और उनका मैं बहुत मशकूर हूँ।

आनंदभवन
६ जुलाई १९३१

—जवाहरलाल नेहरू

ये पत्र इन्दिरा को लिखे गए थे इसलिए
इन्हें उसी को भेंट करता हूँ

संसार पुस्तक है

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूं। लेकिन, अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं छोटी-छोटी कथाएं लिखा करूं। तुमने हिन्दुस्तान और इंग्लैण्ड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैण्ड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिन्दुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक़ है, तो तुम्हें सब देशों का, और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूं। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातों को भी तुम शौक़ से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनन्द मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों करोड़ों वर्ष पुरानी है, और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों के पहले सिर्फ़ जानवर थे; और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस ज़माने का ख्याल करना भी मुश्किल है जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जानने वालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इस पर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था; किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती, क्योंकि हम जो चीज़ चाहते सोच लेते, और सुन्दर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी

किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाय वह ठीक कैसे हो सकती है ? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीज़ें हैं जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीक़ा यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मज़े की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाय। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई ज़बान, उर्दू, हिन्दी या अंग्रेज़ी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता ? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए ? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया ? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुंह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे से दरिया में पहुंचा दिया। इस छोटे से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुंचा। इस बीच वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गयीं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अन्त में बालू का एक ज़र्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुन्दर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते।

अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीज़ों से, जो हमारे चारों तरफ़ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं।

शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया

अपने पहले पत्र में मैंने तुम्हें बताया था कि हमें संसार की किताब से ही दुनिया के शुरू का हाल मालूम हो सकता है। इस किताब में चट्टान, पहाड़, घाटियाँ, नदियां, समुद्र, ज्वालामुखी और हर एक चीज़, जो हम अपने चारों तरफ़ देखते हैं, शामिल हैं। यह किताब हमेशा हमारे सामने खुली रहती है लेकिन बहुत ही थोड़े आदमी इस पर ध्यान देते; या इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं। अगर हम इसे पढ़ना और समझना सीख लें, तो हमें इसमें कितनी ही मनोहर कहानियाँ मिल सकती हैं। इसके पत्थर के पृष्ठों में हम जो कहानियाँ पढ़ेंगे वे परियों की कहानियों से कहीं सुन्दर होंगी।

इस तरह संसार की इस पुस्तक से हमें उस पुराने ज़माने का हाल मालूम हो जायगा जब कि हमारी दुनिया में कोई आदमी या जानवर न था। ज्यों-ज्यों हम पढ़ते जायेंगे हमें मालूम होगा कि पहले जानवर कैसे आए और उनकी तादाद कैसे बढ़ती गई। उनके बाद आदमी आए; लेकिन वे उन आदमियों की तरह न थे, जिन्हें हम आज देखते हैं। वे जंगली थे और जानवरों में और उनमें बहुत कम फ़र्क़ था। धीरे-धीरे उन्हें तजरबा हुआ और उनमें सोचने की ताक़त आई। इसी ताक़त ने उन्हें जानवरों से अलग कर दिया। यह असली ताक़त थी जिसने उन्हें बड़े से बड़े और भयानक से भयानक जानवरों से ज्यादा बलवान बना दिया। तुम देखती हो कि एक छोटा-सा आदमी एक बड़े हाथी के सिर पर बैठकर उससे जो चाहता है करा लेता है। हाथी बड़े डील-डौल का जानवर है, और उस महावत से कहीं ज्यादा बलवान है, जो उसकी गर्दन पर सवार है। लेकिन महावत में सोचने की ताक़त है और इसी की बदौलत वह मालिक है और हाथी उसका नौकर। ज्यों-ज्यों आदमी में सोचने की ताक़त बढ़ती गई, उसकी सूझ भी बढ़ती गई। उसने बहुत सी बातें सोच निकालीं। आग जलाना, ज़मीन जोतकर खाने की चीज़ें पैदा करना, कपड़ा बनाना और पहनना, और रहने के लिए घर बनाना, ये सभी बातें उसे मालूम हो गईं। बहुत-से आदमी मिलकर एक साथ रहते थे और इस तरह पहले शहर बने। शहर बनने से पहले लोग जगह-जगह घूमते-फिरते थे और शायद किसी तरह के खेमों में रहते होंगे। तब तक उन्हें ज़मीन से खाने की चीज़ें पैदा करने का तरीक़ा नहीं मालूम था। न उनके पास चावल थे, न गेहूं जिससे रोटियाँ बनती हैं। न तो तरकारियाँ थीं और न दूसरी चीज़ें जो हम आज खाते हैं। शायद कुछ फल और बीज उन्हें खाने को मिल जाते हों मगर ज्यादातर वे जानवरों को मारकर उनका माँस खाते थे।

ज्यों-ज्यों शहर बनते गए लोग तरह-तरह की सुन्दर कलायें सीखते गए। उन्होंने लिखना भी सीखा। लेकिन बहुत दिनों तक लिखने को कागज़ न था, और लोग भोजपत्र या ताड़ के पत्तों पर लिखते थे। आज भी बाज़ पुस्तकालयों में तुम्हें समूची किताबें मिलेंगी जो उसी पुराने ज़माने में भोजपत्र पर लिखी गई थीं। तब कागज़ बना और लिखने में आसानी हो गई। लेकिन छापेखाने न थे और आजकल की भांति किताबें हज़ारों की तादाद में न छप सकती थीं। कोई किताब जब लिख ली जाती थी तो बड़ी मेहनत के साथ हाथ से उसकी नक़ल की जाती थी। ऐसी दशा में किताबें बहुत न थीं। तुम किसी किताब बेचने वाले की दूकान पर जाकर चटपट किताब न खरीद सकतीं। तुम्हें किसी से उसकी नक़ल करानी पड़ती और उसमें बहुत समय लगता। लेकिन उन दिनों लोगों के अक्षर बहुत सुन्दर होते थे और आज भी पुस्तकालयों में ऐसी किताबें मौजूद हैं, जो हाथ से बहुत सुन्दर अक्षरों में लिखी गई थीं। हिन्दुस्तान में खास कर संस्कृत, फ़ारसी और उर्दू की किताबें मिलती हैं। अकसर नक़ल करने वाले पृष्ठों के किनारों पर सुन्दर बेल-बूटे बना दिया करते थे।

शहरों के बाद धीरे-धीरे देशों और जातियों की बुनियाद पड़ी। जो लोग एक मुल्क में पास-पास रहते थे उनका एक दूसरे से मिल-जोल हो जाना स्वाभाविक था। वे समझने लगे कि हम दूसरे मुल्क वालों से बढ़-चढ़कर हैं और बेवक़ूफ़ी से उनसे लड़ने लगे। उनकी समझ में यह बात न आई, और आज भी लोगों की समझ में नहीं आ रही कि लड़ने और एक दूसरे की जान लेने से बढ़कर बेवक़ूफ़ी की बात और कोई नहीं हो सकती। इससे किसी को फ़ायदा नहीं होता।

जिस ज़माने में शहर और मुल्क बने उसकी कहानी जानने के लिए पुरानी किताबें कभी-कभी मिल जाती हैं। लेकिन ऐसी किताबें बहुत नहीं हैं। हाँ, दूसरी चीज़ों से हमें मदद मिलती है। पुराने ज़माने के राजे-महाराजे अपने समय का हाल पत्थर के टुकड़ों और खंभों पर लिखवा दिया करते थे। किताबें बहुत दिन तक नहीं चल सकती। उनका कागज़ बिगड़ जाता है और उसे कीड़े खा जाते हैं। लेकिन पत्थर बहुत दिन चलता है। शायद तुम्हें याद होगा कि तुमने इलाहाबाद के क़िले में अशोक की बड़ी लाट देखी है। कई सौ साल हुए अशोक हिन्दुस्तान का एक बड़ा राजा था। उसने उस खम्भे पर अपना एक आदेश खुदवा दिया है। अगर तुम लखनऊ के अजायबघर में जाओ, तो तुम्हें बहुत से पत्थर के टुकड़े मिलेंगे जिन पर अक्षर खुदे हैं।

लुम्बिनी में प्राप्त
सम्राट् अशोक का शिलालेख
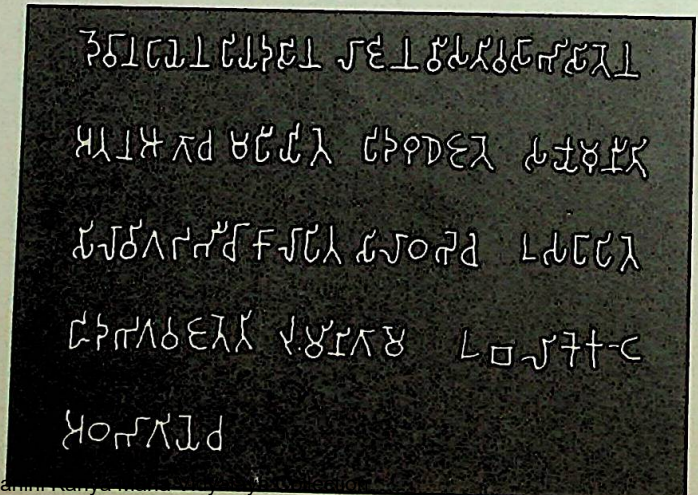
संसार के देशों का इतिहास पढ़ने लगोगी तो तुम्हें उन बड़े-बड़े कामों का हाल मालूम होगा जो चीन और मिश्र वालों ने किये थे। उस समय यूरोप के देशों में जंगली जातियाँ बसती थीं। तुम्हें हिन्दुस्तान के उस शानदार ज़माने का हाल भी मालूम होगा जब रामायण और महाभारत लिखे गए और हिन्दुस्तान बलवान और धनवान देश था। आज हमारा मुल्क बहुत गरीब है और एक विदेशी जाति हमारे ऊपर राज्य कर रही है। हम अपने ही मुल्क में आज़ाद नहीं हैं और जो कुछ करना चाहें नहीं कर सकते। लेकिन यह हाल हमेशा नहीं था और अगर हम पूरी कोशिश करें तो शायद हमारा देश फिर आज़ाद हो जाय, जिससे हम ग़रीबों की दशा सुधार सकें और हिन्दुस्तान में रहना उतना ही आरामदेह हो जाय, जितना कि आज यूरोप के कुछ देशों में है।

मैं अपने अगले खत में संसार की मनोहर कहानी शुरू से लिखना आरंभ करूंगा।
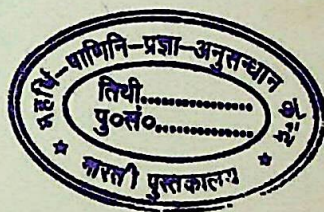
ज़मीन कैसे बनी

तुम जानती हो कि ज़मीन सूरज के चारों तरफ़ घूमती है और चाँद ज़मीन के चारों तरफ़ घूमता है। शायद तुम्हें यह भी याद है कि ऐसे और भी कई गोले हैं जो ज़मीन की तरह सूरज का चक्कर लगाते हैं। ये सब, हमारी ज़मीन को मिलाकर, सूरज के ग्रह कहलाते हैं। चाँद ज़मीन का उपग्रह कहलाता है; इसलिए कि वह ज़मीन के ही आसपास रहता है। दूसरे ग्रहों के भी अपने-अपने उपग्रह हैं। सूरज, उसके ग्रह और ग्रहों के उपग्रह मिलकर मानो एक सुखी परिवार बन जाता है। इस परिवार को सौर-जगत कहते हैं। सौर का अर्थ है सूरज का। सूरज इन सब ग्रहों और उपग्रहों का बाबा है। इसीलिए इस परिवार को सौर-जगत कहते हैं।

रात को तुम आसमान में हज़ारों सितारे देखती हो। इनमें से थोड़े से ही ग्रह हैं और बाकी सितारे हैं। क्या तुम बता सकती हो कि ग्रह और तारे में क्या फ़र्क़ है? ग्रह हमारी ज़मीन की तरह सितारों से बहुत छोटे होते हैं लेकिन आसमान में वे बड़े नज़र आते हैं, क्योंकि ज़मीन से उनका फ़ासला कम है। ठीक ऐसा ही समझो जैसे चाँद, जो बिलकुल बच्चे की तरह है, हमारे नज़दीक होने की वजह से
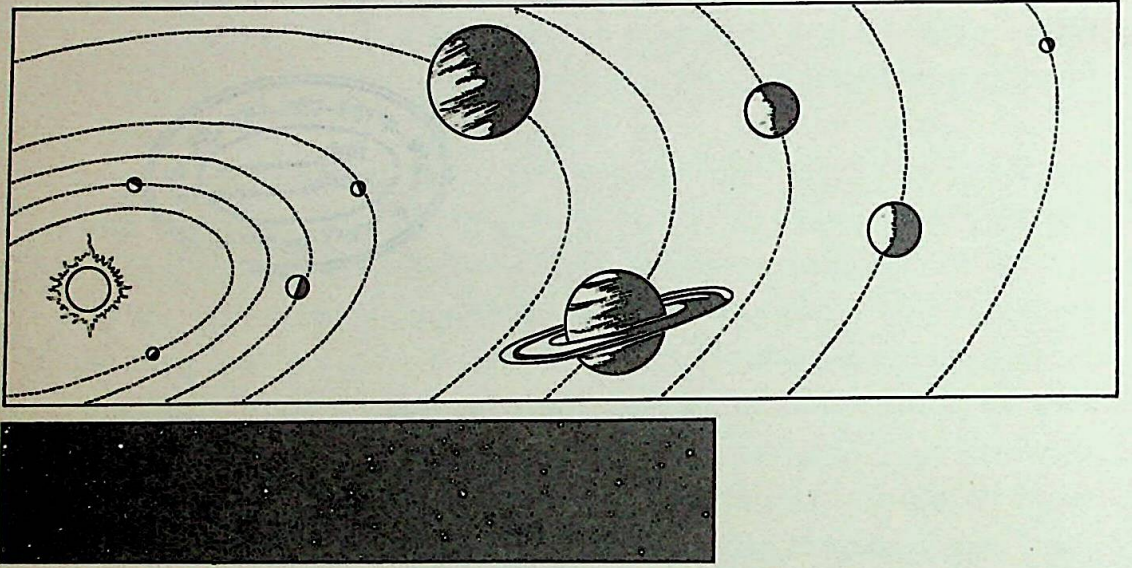
इतना बड़ा मालूम होता है। लेकिन सितारों और ग्रहों के पहचानने का असली तरीक़ा यह है कि वे जगमगाते हैं या नहीं। सितारे जगमगाते हैं, ग्रह नहीं जगमगाते। इसका सबब यह है कि ग्रह सूर्य की रोशनी से चमकते हैं। चाँद और ग्रहों में जो चमक हम देखते हैं वह धूप की है असली सितारे बिलकुल सूरज की तरह हैं, वे बहुत गर्म जलते हुए गोले हैं जो आप ही आप चमकते हैं। दरअसल सूरज खुद एक सितारा है। हमें यह बड़ा आग का गोला-सा मालूम होता है, इसलिए कि ज़मीन से उसकी दूरी और सितारों से कम है।

इससे अब तुम्हें मालूम हो गया कि हमारी ज़मीन भी सूरज के परिवार में—सौर जगत में—है। हम समझते हैं कि ज़मीन बहुत बड़ी है और हमारे जैसी छोटी-सी चीज़ को देखते हुए वह है भी बहुत बड़ी। अगर किसी तेज़ गाड़ी या जहाज़ पर बैठो तो इसके एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक जाने

में हफ्तों और महीनों लग जाते हैं। लेकिन हमें चाहे यह कितनी ही बड़ी दिखाई दे असल में यह धूल के एक कण की तरह हवा में लटकी हुई है। सूरज ज़मीन से करोड़ों मील दूर है और दूसरे सितारे इससे भी ज्यादा दूर हैं।

ज्योतिषी या वे लोग जो कि सितारों के बारे में बहुत-सी बातें जानते हैं हमें बतलाते हैं कि बहुत दिन पहले हमारी ज़मीन और सारे ग्रह सूर्य ही में मिले हुए थे। आजकल की तरह उस समय भी सूरज जलती हुई धातु का निहायत गर्म गोला था। किसी वजह से सूरज के छोटे-छोटे टुकड़े उससे टूट कर हवा में निकल पड़े। लेकिन वे अपने पिता सूर्य से बिलकुल अलग न हो सके। वे इस तरह सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने लगे, जैसे उनको किसी ने रस्सी से बाँधकर रक्खा हो। यह विचित्र शक्ति जिसकी मैंने रस्सी से मिसाल दी है एक ऐसी ताक़त है जो छोटी चीज़ों को बड़ी चीज़ों की तरफ़ खींचती है। यह वही ताक़त है, जो वज़नदार चीज़ों को ज़मीन पर गिरा देती है। हमारे पास ज़मीन ही सबसे भारी चीज़ है इसी से वह हर एक चीज़ को अपनी तरफ़ खींच लेती है।

इस तरह हमारी ज़मीन भी सूरज से निकल भागी थी। उस ज़माने में यह बहुत गर्म रही होगी; इसके चारों तरफ़ की हवा भी बहुत ही गर्म रही होगी लेकिन सूरज से बहुत ही छोटी होने के कारण वह जल्द ठंडी होने लगी। सूरज की गर्मी भी दिन-दिन कम होती जा रही है लेकिन उसे बिलकुल ठंडे हो जाने में लाखों बरस लगेंगे। ज़मीन के ठंडे होने में बहुत थोड़े दिन लगे। जब यह गर्म थी तब इस पर कोई जानदार चीज़ जैसे आदमी, जानवर, पौधा या पेड़ न रह सकते थे। सब चीज़ें जल जातीं।

जैसे सूरज का एक टुकड़ा टूटकर ज़मीन हो गया इसी तरह ज़मीन का एक टुकड़ा टूटकर निकल भागा और चाँद हो गया। बहुत से लोगों का ख्याल है कि चाँद के निकलने से जो गड्ढा हो गया वह अमरीका और जापान के बीच का प्रशाँत-सागर है। मगर ज़मीन को ठंडे होने में भी बहुत दिन लग गए। धीरे-धीरे ज़मीन की ऊपरी तह तो ज्यादा ठंडी हो गई लेकिन उसका भीतरी हिस्सा गर्म बना रहा। अब भी अगर तुम किसी कोयले की खान में घुसो, तो ज्यों-ज्यों तुम नीचे उतरोगी गर्मी बढ़ती जायगी। शायद अगर तुम बहुत दूर नीचे चली जाओ तो तुम्हें ज़मीन अंगारे की तरह मिलेगी। चाँद भी ठंडा होने लगा। वह ज़मीन से भी ज्यादा छोटा था इसलिए उसके ठंडे होने में ज़मीन से भी कम दिन लगे! तुम्हें उसकी ठंडक कितनी प्यारी मालूम होती है। उसे ठंडा चाँद ही कहते हैं। शायद वह बर्फ़ के पहाड़ों और बर्फ़ से ढके हुए मैदानों से भरा हुआ है।

जब ज़मीन ठंडी हो गई तो हवा में जितनी भाप थी वह जमकर पानी बन गई और शायद मेंह बनकर बरस पड़ी। उस ज़माने में बहुत ही ज्यादा पानी बरसा होगा। यह सब पानी ज़मीन के बड़े-बड़े गड्ढ़ों में भर गया और इस तरह बड़े-बड़े समुद्र और सागर बन गए।

ज्यों-ज्यों ज़मीन ठंडी होती गई और समुद्र भी ठंडे होते गए त्यों-त्यों दोनों जानदार चीज़ों के रहने लायक़ होते गए।

दूसरे खत में मैं तुम्हें जानदार चीज़ों के पैदा होने का हाल लिखूंगा।

जानदार चीज़ें कैसे पैदा हुईं

पिछले खत में मैं तुम्हें बतला चुका हूं कि बहुत दिनों तक ज़मीन इतनी गर्म थी कि कोई जानदार चीज़ उस पर रह ही न सकती थी। तुम पूछोगी कि ज़मीन पर जानदार चीज़ों का आना कब शुरू हुआ और पहले कौन-कौन सी चीज़ें आईं। यह बड़े मज़े का सवाल है, पर इसका जवाब देना भी आसान नहीं है। पहले यह देखो कि जान है क्या चीज़। शायद तुम कहोगी कि आदमी और जानवर जानदार हैं। लेकिन दरख्तों और झाड़ियों, फूलों और तरकारियों को क्या कहोगी ? यह मानना पड़ेगा कि वे सब भी जानदार हैं। वे पैदा होते हैं, पानी पीते हैं, हवा में सांस लेते हैं और मर जाते हैं। दरख्त और जानवर में खास फ़र्क़ यह है कि जानवर चलता-फिरता है, और दरख्त हिल नहीं सकते। तुमको याद होगा कि मैंने लंदन के क्यू गार्डन में तुम्हें कुछ पौधे दिखाए थे। ये पौधे, जिन्हें आर्किड और पिचर[1] कहते हैं, सचमुच मक्खियां खा जाते हैं। इसी तरह कुछ जानवर भी ऐसे हैं, जो समुद्र के नीचे रहते हैं और चल फिर नहीं सकते। स्पंज ऐसा ही जानवर है। कभी-कभी तो किसी चीज़ को देखकर यह बतलाना मुश्किल हो जाता है कि वह पौधा है या जानवर। जब तुम वनस्पति-शास्त्र (पेड़-पौधों की विद्या) या जीव-शास्त्र (जिसमें जीव-जन्तुओं का हाल लिखा होता है) पढ़ोगी तो तुम इन अजीब चीज़ों को देखोगी जो न जानवर हैं न पौधे। कुछ लोगों का खयाल है कि पत्थरों और चट्टानों में भी एक किस्म की जान है और उन्हें भी एक तरह का दर्द होता है; मगर हमको इसका पता नहीं चलता। शायद तुम्हें उन महाशय की याद होगी जो हमसे जेनेवा में मिलने आए थे उनका नाम है सर जगदीश बोस। उन्होंने परीक्षा करके साबित किया है कि पौधों में बहुत-कुछ जान होती है। इनका ख्याल है कि पत्थरों में भी कुछ जान होती है।

इससे तुम्हें मालूम हो गया होगा कि किसी चीज़ को जानदार या बेजान कहना कितना मुश्किल है। लेकिन इस वक्त हम पत्थरों को छोड़ देते हैं, सिर्फ़ जानवरों और पौधों पर ही विचार करते हैं। आज संसार में हज़ारों जानदार चीज़ें हैं। वे सभी किस्म की हैं। मर्द हैं और औरतें हैं। और इनमें से कुछ लोग होशियार हैं और कुछ लोग बेवक़ूफ़ हैं। जानवर भी बहुत तरह के हैं और उनमें भी हाथी, बन्दर या चींटी की तरह समझदार जानवर हैं और बहुत से जानवर बिलकुल बेसमझ भी हैं। मछलियाँ और समुद्र की बहुत-सी चीज़ें जानदारों में और भी नीचे दरजे की हैं। उनसे भी नीचा दरजा स्पंजों और मुरब्बे की शक्ल की मछलियों का है जो आधा पौधा और आधा जानवर है।

अब हमको इस बात का पता लगाना है कि ये भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर एक साथ और एक वक्त पैदा हुए या एक-एक करके धीरे-धीरे। हमें यह कैसे मालूम हो। उस पुराने ज़माने की लिखी

[1] आर्किड और पिचर एक प्रकार के पौधे हैं जो मक्खियों और कीड़ों को खा जाते हैं।

हुई तो कोई किताब है नहीं। लेकिन क्या संसार की पुस्तक से हमारा काम चल सकता है? हाँ, चल सकता है। पुरानी चट्टानों में जानवरों की हड्डियाँ मिलती हैं, इन्हें अंग्रेज़ी में फ़ौसिल या पथराई हुई हड्डी कहते हैं। इन हड्डियों से इस बात का पता चलता है कि उस चट्टान के बनने के बहुत पहले वह जानवर ज़रूर रहा होगा जिसकी हड्डियाँ मिली हैं। तुमने इस तरह की बहुत-सी छोटी और बड़ी हड्डियाँ लन्दन के साउथ कैंसिंगटन के अजायबघर में देखी थीं।

जब कोई जानवर मर जाता है तो उसका नर्म और माँस वाला भाग तो फ़ौरन सड़ जाता है, लेकिन उसकी हड्डियाँ बहुत दिनों तक बनी रहती हैं। यही हड्डियाँ उस पुराने ज़माने के जानवरों का कुछ हाल हमें बताती हैं। लेकिन अगर कोई जानवर बिना हड्डी का ही हो, जैसे मुरब्बे की शक्ल वाली मछलियां होती हैं तो उसके मर जाने पर कुछ भी बाकी न रहेगा।
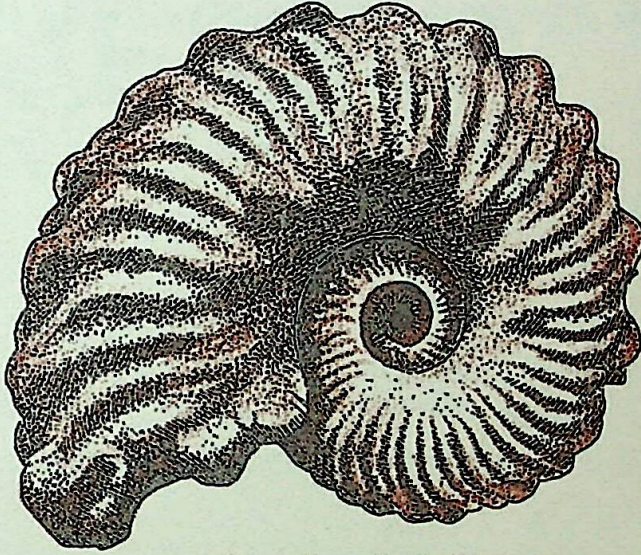
जीवाश्म (पथराई हुई हड्डी)

जब हम चट्टानों को ग़ौर से देखते हैं और बहुत सी पुरानी हड्डियों को जमा कर लेते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर रहते थे। सब के सब एक बारगी कहीं से कूदकर नहीं आ गए। सबसे पहले छिलकेदार जानवर पैदा हुए जैसे घोंघे। समुद्र के किनारे तुम जो सुन्दर घोंघे बटोरती हो वे उन जानवरों के छिलके हैं जो मर चुके हैं। उसके बाद ज्यादा ऊंचे दरजे के जानवर पैदा हुए, जिनमें साँप और हाथी जैसे बड़े जानवर थे, और वे चिड़ियाँ और जानवर भी, जो आज तक मौजूद हैं। सबके पीछे आदमियों की हड्डियाँ मिलती हैं। इससे यह पता चलता है कि जानवरों के पैदा होने में भी एक क्रम था। पहले नीचे दरजे के जानवर आए, तब ज्यादा ऊंचे दरजे के जानवर पैदा हुए और ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते गए वे और भी बारीक होते गए और आखिर में सबसे ऊंचे दरजे का जानवर यानी आदमी पैदा हुआ। सीधे-सादे स्पंज और घोंघे में कैसे इतनी तब्दीलियाँ हुईं और कैसे वे इतने ऊंचे दरजे पर पहुंच गए; यही बड़ी मज़ेदार कहानी

है और किसी दिन मैं उसका हाल बताऊंगा। इस वक्त तो हम सिर्फ़ उन जानदारों का ज़िक्र कर रहे हैं जो पहले पैदा हुए।

ज़मीन के ठंडे हो जाने के बाद शायद पहली जानदार चीज़ वह नर्म मुरब्बे की सी चीज़ थी जिस पर न कोई खोल था न कोई हड्डी थी वह समुद्र में रहती थी। हमारे पास उनकी हड्डियाँ नहीं हैं क्योंकि उनके हड्डियां थी ही नहीं, इसलिए हमें कुछ न कुछ अटकल से काम लेना पड़ता है। आज भी समुद्र में बहुत सी मुरब्बे की सी चीज़ें हैं। वे गोल होती हैं लेकिन उनकी सूरत बराबर बदलती रहती है क्योंकि न उनमें कोई हड्डी है न खोल। उनकी सूरत कुछ इस तरह की होती है।
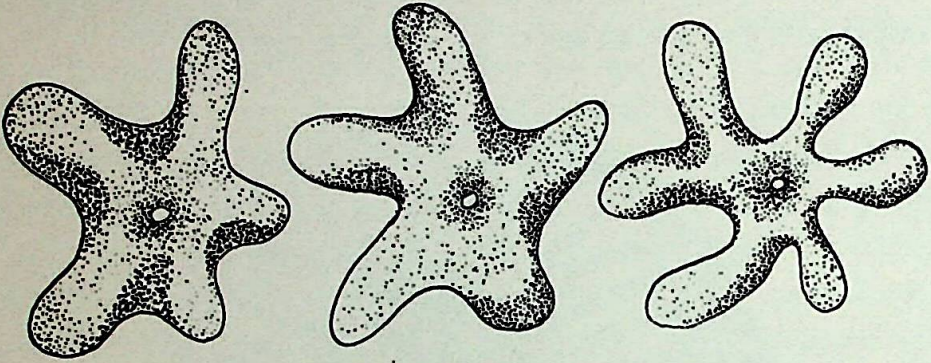
तुम देखती हो कि बीच में एक दाग़ है। इसे बीज कहते हैं और यह एक तरह से उसका दिल है। यह जानवर, या इन्हें जो चाहो कहो, एक अजीब तरीके से कटकर एक के दो हो जाते हैं। पहले वे एक जगह पतले होने लगते हैं और इसी तरह पतले होते चले जाते हैं, यहाँ तक कि टूटकर दो मुरब्बे की सी चीज़ें बन जाते हैं और दोनों ही शक्ल असली लोथड़े की सी होती है।
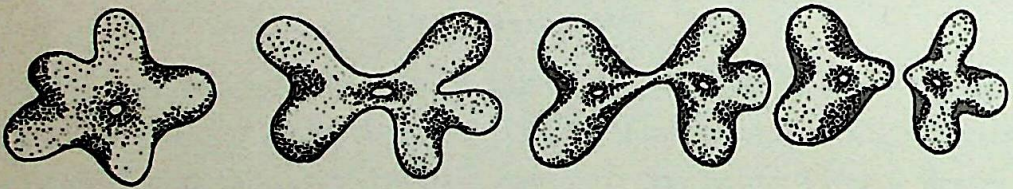
बीज या दिल के भी दो टुकड़े हो जाते हैं और दोनों लोथड़ों के हिस्से में इसका एक-एक टुकड़ा आ जाता है। इस तरह ये जानवर टूटते और बढ़ते चले जाते हैं।

इसी तरह की कोई चीज़ सबसे पहले हमारे संसार में आई होगी। जानदार चीज़ों का कितना सीधा-सादा और तुच्छ रूप था! सारी दुनिया में इससे अच्छी या ऊंचे दरजे की चीज़ उस वक्त न थी। असली जानवर पैदा न हुए थे और आदमी के पैदा होने में लाखों बरस की देर थी।

इन लोथड़ों के वाद समुद्र की घास और घोंघे, केकड़े और कीड़े पैदा हुए। तव मछलियाँ आईं। इनके बारे में हमें वहुत-सी वातें मालूम होती हैं क्योंकि उन पर कड़े खोल या हड्डियाँ थीं और इसे वे हमारे लिए छोड़ गई हैं ताकि उनके मरने के वहुत दिनों के वाद हम उन पर ग़ौर कर सकें। यह घोंघे समुद्र के किनारे ज़मीन पर पड़े रह गए। इन पर वालू और ताज़ी मिट्टी जमती गई और ये वहुत हिफ़ाजत से पड़े रहे। नीचे की मिट्टी, ऊपर की वालू और मिट्टी के बोझ और दवाव से कड़ी होती गई। यहाँ तक कि वह पत्थर जैसी हो गई। इस तरह समुद्र के नीचे चट्टानें वन गईं। किसी भूचाल के आ जाने से या और किसी सवव से ये चट्टानें समुद्र के नीचे से निकल आईं और सूखी ज़मीन वन गईं। तव इस सूखी चट्टान को नदियाँ और मेंह वहा ले गए। और जो हड्डियाँ उनमें लाखों वरसों से छिपी थीं वाहर निकल आईं। इस तरह हमें ये घोंघे या हड्डियाँ मिल गईं। जिनसे हमें मालूम हुआ कि हमारी ज़मीन आदमी के पैदा होने के पहले कैसी थी।

दूसरी चिट्ठी में हम इस वात पर विचार करेंगे कि ये नीचे दरजे के जानवर कैसे वढ़ते-वढ़ते आजकल की सी सूरत के हो गए।

जानवर कब पैदा हुए

हम वतला चुके हैं कि शुरू में छोटे-छोटे समुद्री जानवर और पानी में होने वाले पौधे दुनिया की जानदार चीज़ों में थे। वे सिर्फ पानी में ही रह सकते थे और अगर किसी वजह से वाहर निकल आते और उन्हें पानी न मिलता तो ज़रूर मर जाते होंगे। जैसे आज भी मछलियाँ सूखे में आने से मर जाती हैं। लेकिन उस ज़माने में आजकल से कहीं ज्यादा समुद्र और दलदल रहे होंगे। वे मछलियाँ और दूसरे पानी के जानवर जिनकी खाल ज़रा चिमड़ी थी, सूखी ज़मीन पर दूसरों से कुछ ज्यादा देर तक जी सकते होंगे। क्योंकि उन्हें सूखने में देर लगती थी। इसलिए नर्म मछलियाँ और उन्हीं की तरह के दूसरे जानवर धीरे-धीरे कम होते गए क्योंकि सूखी ज़मीन पर ज़िन्दा रहना उनके लिए
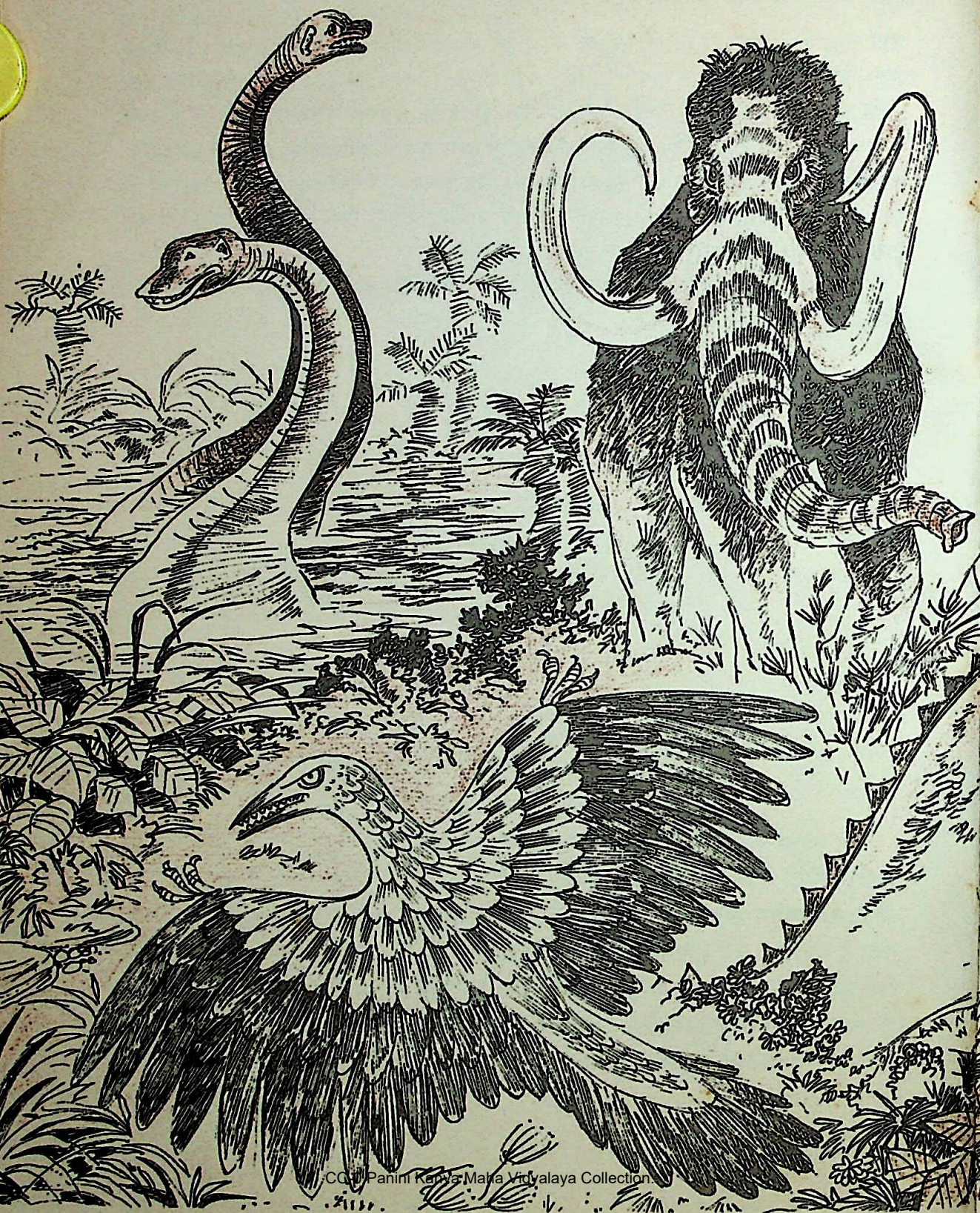
मुश्किल था और जिनकी खाल ज्यादा सख्त थी वे वढ़ते गए। सोचो, कितनी अजीव वात है! इसका यह मतलव है कि जानवर धीरे-धीरे अपने को आसपास की चीज़ों के अनुकूल वना लेते हैं। तुमने लन्दन के अजायवघर में देखा था कि जाड़ों में और ठंडे देशों में जहाँ कसरत से वर्फ गिरती है चिड़ियां और जानवर वर्फ़ की तरह सफ़ेद हो जाते हैं। गरम देशों में जहाँ हरियाली और दरख्त वहुत होते हैं वे हरे या किसी दूसरे चमकदार रंग के हो जाते हैं। इसका यह मतलव है कि वे अपने को उसी तरह का वना लेते हैं जैसे उनके आसपास की चीज़ें हों। उनका रंग इसलिए वदल जाता है कि वे अपने को दुश्मनों से बचा सकें, क्योंकि अगर उनका रंग आसपास की चीज़ों से मिल जाय तो वे आसानी से दिखाई न देंगे। सर्द मुल्कों में उनकी खाल पर बाल निकल आते हैं जिससे वे गर्म रह सकें। इसीलिए चीते का रंग पीला और धारीदार होता है, उस धूप की तरह, जो दरख्तों से होकर जंगल में आती है। वह घने जंगल में मुश्किल से दिखाई देता है।

इस अजीव वात का जानना वहुत ज़रूरी है कि जानवर अपने रंग-ढंग को आसपास की चीज़ों से मिला देते हैं। यह वात नहीं है कि जानवर अपने को वदलने की कोशिश करते हों; लेकिन जो अपने को वदलकर आसपास की चीज़ों से मिला देते हैं उनको ज़िन्दा रहना ज्यादा आसान हो जाता है। उनकी तादाद वढ़ने लगती है, दूसरों की नहीं वढ़ती। इससे वहुत-सी वातें समझ में आ जाती हैं। इससे यह मालूम हो जाता है कि नीचे दरजे के जानवर धीरे-धीरे ऊंचे दरजों में पहुंचते हैं और मुमकिन है कि लाखों वरसों के वाद आदमी हो जाते हैं। हम ये तब्दीलियाँ, जो हमारे चारों तरफ होती रहती हैं, देख नहीं सकते, क्योंकि वे वहुत धीरे-धीरे होती हैं और हमारी ज़िन्दगी कम होती है। लेकिन प्रकृति अपना काम करती रहती है और चीज़ों को वदलती और सुधारती रहती है। वह न तो कभी रुकती है और न आराम करती है।

तुम्हें याद है कि दुनिया धीरे-धीरे ठंडी हो रही थी और इसका पानी सूखता जाता था। जव यह ज्यादा ठंडी हो गई तो जलवायु वदल गया और उसके साथ ही वहुत-सी वातें वदल गईं। ज्यों-ज्यों दुनिया वदलती गई जानवर भी वदलते गए और नए-नए किस्म के जानवर पैदा होते गए। पहले नीचे दरजे के दरियाई जानवर पैदा हुए, फिर ज्यादा ऊंचे दरजे के। इसके वाद जव सूखी ज़मीन ज्यादा हो गई तो ऐसे जानवर पैदा हुए जो पानी और ज़मीन दोनों ही पर रह सकते हैं जैसे, मगर या मेंढ़क। इसके वाद वे जानवर पैदा हुए जो सिर्फ़ ज़मीन पर रह सकते हैं और तव हवा में उड़नेवाली चिड़ियाँ आईं।

मैंने मेंढ़क का ज़िक्र किया है। इस अजीव जानवर की ज़िन्दगी से बड़ी मज़े की बातें मालूम होती हैं। साफ़ समझ में आ जाता है कि दरियाई जानवर वदलते-वदलते क्योंकर ज़मीन के जानवर वन गए। मेंढ़क पहले मछली होता है लेकिन वाद में वह खुश्की का जानवर हो जाता है और दूसरे खुश्की के जानवरों की तरह फेफड़े से साँस लेता है। उस पुराने ज़माने में जब खुश्की के जानवर पैदा हुए वड़े-वड़े जंगल थे। ज़मीन सारी की सारी झावर रही होगी, उस पर घने जंगल होंगे। आगे चलकर ये चट्टान और मिट्टी के वोझ से ऐसे दव गए कि वे धीरे-धीरे कोयला वन गए। तुम्हें मालूम है कोयला गहरी खानों से निकलता है, ये खानें असल में पुराने ज़माने के जंगल हैं।

शुरू-शुरू में ज़मीन के जानवरों में वड़े-वड़े साँप, छिपकलियाँ और घड़ियाल थे। इनमें से वाज़ १०० फ़ीट लम्वे थे। १०० फ़ीट लम्वे साँप या छिपकली का ज़रा ध्यान तो करो! तुम्हें याद होगा कि तुमने इन जानवरों की हड्डियां लन्दन के अजायवघर में देखी थीं।

विलुप्त प्राणी स्टेगोसाओरस का कंकाल
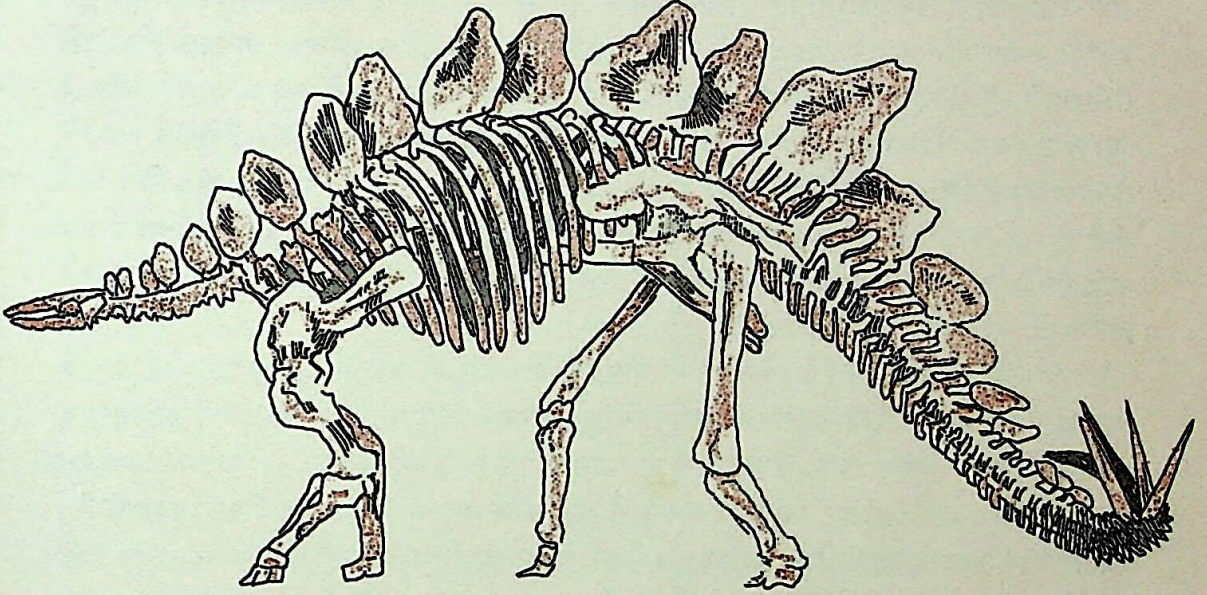
इसके वाद वे जानवर पैदा हुए जो कुछ-कुछ हाल के जानवरों से मिलते थे। ये अपने वच्चों को दूध पिलाते थे। पहले वे भी आजकल के जानवरों से वहुत वड़े होते थे। जो जानवर आदमी से वहुत मिलता-जुलता है वह वन्दर या वनमानुस है। इससे लोग ख्याल करते हैं कि आदमी वनमानुस की नस्ल है। इसका यह मतलव है कि जैसे और जानवरों ने अपने को आसपास की चीज़ों के अनुकूल वना लिया और तरक्क़ी करते गए इसी तरह आदमी भी पहले एक ऊंचे क़िस्म का वनमानुस था। यह सच है कि यह तरक्क़ी करता गया या यों कहो कि प्रकृति उसे सुधारती रही। पर आज उसके घमंड का ठिकाना नहीं। यह ख्याल करता है कि, और जानवरों से उसका मुक़ाविला ही क्या। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि हम वन्दरों और वनमानुसों के भाई वन्द हैं और आज भी शायद हम में से वहुतेरों का स्वभाव वन्दरों ही जैसा है।

आदमी कब पैदा हुआ

मैंने तुम्हें पिछले खत में वतलाया था कि पहले दुनिया में वहुत नीचे दरजे के जानवर पैदा हुए और धीरे-धीरे तरक्की करते हुए लाखों वरस में उस सूरत में आए जो हम आज देखते हैं। हमें एक बड़ी दिलचस्प और ज़रूरी बात यह भी मालूम हुई कि जानदार हमेशा अपने को आसपास की चीज़ों से मिलाने की कोशिश करते गए। इस कोशिश में उनमें नयी-नयी आदतें पैदा होती गईं और वे ज्यादा ऊंचे दरजे के जानवर होते गए। हमें यह तब्दीली या तरक्क़ी कई तरह दिखाई देती है। इसकी मिसाल यह है कि शुरू-शुरू के जानवरों में हड्डियाँ न थीं लेकिन हड्डियों के वग़ैर वे वहुत दिनों तक जीते न रह सकते थे इसलिए उनमें हड्डियाँ पैदा हो गईं। सवसे पहले रीढ़ की हड्डी पैदा हुई। इस तरह दो क़िस्म के जानवर हो गए—हड्डी वाले और बेहड्डी वाले। जिन आदमियों या जानवरों को तुम देखती हो वे सव हड्डी वाले हैं!

एक और मिसाल लो। नीचे दरजे के जानवरों में मछलियां अंडे देकर उन्हें छोड़ देती हैं। वे एक साथ हज़ारों अंडे देती हैं लेकिन उनकी विल्कुल परवाह नहीं करतीं। मां वच्चों की विल्कुल खवर नहीं लेती। वह अंडों को छोड़ देती है और उनके पास कभी नहीं आती। इन अंडों की हिफ़ाज़त तो कोई करता नहीं, इसलिए ज्यादातर मर जाते हैं। वहुत थोड़े से अंडों से मछलियाँ निकलती हैं। कितनी जानें वरवाद जाती हैं! लेकिन ऊंचे दरजे के जानवरों को देखो तो मालूम होगा कि उनके अंडे या वच्चे कम होते हैं लेकिन वे उनकी खूव हिफ़ाज़त करते हैं। मुर्गी भी अंडे देती है लेकिन वह उन पर बैठती है और उन्हें सेती है। जव वच्चे निकल आते हैं तो वह कई दिन तक उन्हें चुगाती है। जब बच्चे वड़े हो जाते हैं तव मां उनकी फ़िक्र छोड़ देती है।

इन जानवरों में और उन जानवरों में जो वच्चे को दूध पिलाते हैं वड़ा फ़र्क़ है। ये जानवर अंडे नहीं देते। मां अंडे को अपने अन्दर लिये रहती है और पूरे तौर पर वने हुए वच्चे जनती है। जैसे कुत्ते, विल्ली या खरगोश। इसके वाद माँ अपने वच्चे को दूध पिलाती है, लेकिन इन जानवरों में भी वहुत से वच्चे वरवाद हो जाते हैं। खरगोश के कई-कई महीनों के बाद वहुत से वच्चे पैदा होते हैं लेकिन इनमें से ज्यादातर मर जाते हैं। लेकिन ऊंचे दरजे के जानवर एक ही वच्चा देते हैं और वच्चे को अच्छी तरह पालते-पोसते हैं जैसे हाथी।

अव तुमको यह भी मालूम हो गया कि जानवर ज्यों-ज्यों तरक्क़ी करते हैं वे अंडे नहीं देते वल्कि अपनी सूरत के पूरे वने हुए वच्चे जनते हैं, जो सिर्फ़ कुछ छोटे होते हैं। ऊंचे दरजे के जानवर आम तौर से एक वार में एक ही वच्चा देते हैं। तुमको यह भी मालूम होगा कि ऊंचे दरजे के जानवरों

को अपने वच्चों से थोड़ा-वहुत प्रेम होता है। आदमी सवसे ऊंचे दरजे का जानवर है इसलिए माँ और वाप अपने वच्चों को वहुत प्यार करते और उनकी हिफ़ाज़त करते हैं।

इससे यह मालूम होता है कि आदमी ज़रूर नीचे दरजे के जानवरों से पैदा हुआ होगा। शायद शुरू के आदमी आजकल के से आदमियों की तरह थे ही नहीं। वे आधे वनमानुस और आधे आदमी रहे होंगे और वन्दरों की तरह रहते होंगे। तुम्हें याद है कि जर्मनी के हाइडलवर्ग में तुम हम लोगों के साथ एक प्रोफ़ेसर से मिलने गई थीं? उन्होंने एक अजायवखाना दिखाया था जिसमें पुरानी हड्डियाँ भरी हुई थीं, खासकर एक पुरानी खोपड़ी जिसे वह सन्दूक में रखे हुए थे। ख्याल किया जाता है कि यह शुरू-शुरू के आदमी की खोपड़ी होगी। हम अव उसे हाइडलवर्ग का आदमी कहते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि खोपड़ी हाइडलवर्ग के पास गड़ी हुई मिली थी। यह तो तुम जानती ही हो कि उस ज़माने में न हाइडलवर्ग का पता था न किसी दूसरे शहर का।

उस पुराने ज़माने में, जव कि आदमी इधर-उधर घूमते फिरते थे, वड़ी सख्त सरदी पड़ती थी इसीलिए उसे वर्फ़ का ज़माना कहते हैं। वर्फ़ के वड़े-वड़े पहाड़ जैसे आजकल उत्तरी ध्रुव के पास हैं, इंग्लैण्ड और जर्मनी तक वहते चले जाते थे। आदमियों का रहना वहुत मुश्किल होता होगा, और उन्हें वड़ी तकलीफ़ से दिन काटने पड़ते होंगे। वे वहीं रह सकते होंगे जहाँ वर्फ़ के पहाड़ न हों। वैज्ञानिक लोगों ने लिखा है कि उस ज़माने में भूमध्य-सागर न था वल्कि वहाँ एक या दो झीलें थीं। लाल सागर भी न था। यह सव ज़मीन थी। शायद हिन्दुस्तान का वड़ा हिस्सा टापू था। और हमारे सूबे पंजाव का कुछ हिस्सा समुद्र था। ख्याल करो कि सारा दक्षिणी हिन्दुस्तान और मध्य हिन्दुस्तान एक वहुत वड़ा द्वीप है और हिमालय और उसके बीच में समुद्र लहरें मार रहा है। तव शायद तुम्हें जहाज़ में बैठकर मसूरी जाना पड़ता।

शुरू-शुरू में जव आदमी पैदा हुआ तो इसके चारों तरफ़ वड़े-वड़े जानवर रहे होंगे और उसे उनसे वरावर खटका लगा रहता होगा। आज आदमी दुनिया का मालिक है और जानवरों से जो काम चाहता है करा लेता है। वाज़ों को वह पाल लेता है जैसे घोड़ा, गाय, हाथी, कुत्ता, विल्ली वग़ैरा। वाज़ों को वह खाता है और वाज़ों का वह दिल वहलाने के लिए शिकार करता है, जैसे शेर और चीता। लेकिन उस ज़माने में वह मालिक न था, वल्कि वड़े-वड़े जानवर उसी का शिकार करते थे और वह उनसे जान वचाता फिरता था। मगर धीरे-धीरे उसने तरक्क़ी की और दिन-दिन ज्यादा ताक़तवर होता गया यहाँ तक कि वह सव जानवरों से मज़बूत हो गया। यह वात उसमें कैसे पैदा हुई? वदन की ताक़त से नहीं क्योंकि हाथी उससे कहीं ज्यादा मज़बूत होता है। बुद्धि और दिमाग़ की ताक़त से उसमें यह वात पैदा हुई।

आदमी की अक्ल कैसे धीरे-धीरे वढ़ती गई इसका शुरू से आज तक का पता हम लगा सकते हैं। सच तो यह है कि बुद्धि ही आदमियों को और जानवरों से अलग कर देती है। विना समझ के आदमी और जानवर में कोई फ़र्क़ नहीं है।

पहली चीज़ जिसका आदमी ने पता लगाया वह शायद आग थी। आजकल हम दियासलाई से आग जलाते हैं। लेकिन दियासलाइयाँ तो अभी हाल में वनी हैं। पुराने ज़माने में आग वनाने का

यह तरीक़ा था कि दो चकमक पत्थरों को रगड़ते थे यहाँ तक कि चिनगारी निकल आती थी और इस चिनगारी से सूखी घास या किसी दूसरी सूखी चीज़ में आग लग जाती थी। जंगलों में कभी-कभी पत्थरों की रगड़ या किसी दूसरी चीज़ की रगड़ से आप ही आग लग जाती है। जानवरों में इतनी अक्ल कहाँ थी कि इससे कोई मतलव की वात सोचते। लेकिन आदमी ज्यादा होशियार था उसने आग के फ़ायदे देखे। यह जाड़ों में उसे गर्म रखती थी और वड़े-वड़े जानवरों को, जो उसके दुश्मन थे, भगा देती थी। इसलिए जव कभी आग लग जाती थी तो मर्द और औरत उसमें सूखी पत्तियाँ फेंक-फेंककर उसे जलाए रखने की कोशिश करते होंगे। धीरे-धीरे उन्हें मालूम हो गया कि वे चकमक पत्थरों को रगड़ कर खुद आग पैदा कर सकते हैं। उसके लिए यह वड़े मार्के की वात थी, क्योंकि इसने उन्हें दूसरे जानवरों से ताक़तवर बना दिया। आदमी को दुनिया के मालिक वनने का रास्ता मिल गया।

शुरू के आदमी

मैंने अपने पिछले खत में लिखा था कि आदमी और जानवर में सिर्फ़ अक्ल का फ़र्क़ है। अक्ल ने आदमी को उन वड़े-वड़े जानवरों से ज्यादा चालाक और मजबूत वना दिया जो मामूली तौर पर उसे नष्ट कर डालते। ज्यों-ज्यों आदमी की अक्ल वढ़ती गई वह ज्यादा वलवान होता गया। शुरू में आदमी के पास जानवरों से मुक़ाविला करने के लिए कोई खास हथियार न थे। वह उन पर सिर्फ़ पत्थर फेंक सकता था। इसके वाद उसने पत्थर की कुल्हाड़ियाँ और भाले और वहुत सी दूसरी चीज़ें भी वनाईं जिनमें पत्थर की सूई भी थी। हमने इन पत्थरों के हथियारों को साउथ कैंसिंगटन और जनेवा के अजायवघरों में देखा था।

धीर-धीर वर्फ़ का ज़माना खत्म हो गया जिसका मैंने अपने पिछले खत में ज़िक्र किया है। वर्फ़ के पहाड़ मध्य-एशिया और यूरोप से ग़ायव हो गए। ज्यों-ज्यों गरमी वढ़ती गई आदमी फैलते गए।

उस ज़माने में न तो मकान थे और न कोई दूसरी इमारत थी। लोग गुफ़ाओं में रहते थे। खेती करना किसी को न आता था। लोग जंगली फल खाते थे, या जानवरों का शिकार करके माँस खाकर रहते थे। रोटी और भात उन्हें कहाँ मयस्सर होता क्योंकि उन्हें खेती करनी आती ही न थी। वे पकाना भी नहीं जानते थे, हाँ शायद माँस को आग में गर्म कर लेते हों। उनके पास पकाने के वर्तन, जैसे कढ़ाई और पतीली भी न थे।

एक वात वड़ी अजीव है। इन जंगली आदमियों को तस्वीर खींचना आता था। यह सच है कि उनके पास काग़ज़, क़लम, पेंसिल या ब्रश न थे। उनके पास सिर्फ़ पत्थर की सुइयाँ और नोकदार औज़ार थे। इन्हीं से वे गुफ़ाओं की दीवारों पर जानवरों की तस्वीरें वनाया करते थे। उनके वाज़-वाज़ खाके खासे अच्छे हैं मगर वे सब इकरुखे हैं। तुम्हें मालूम है कि इकरुखी तस्वीर खींचना आसान है और वच्चे इसी तरह की तस्वीरें खींचा करते हैं। गुफ़ाओं में अंधेरा होता था इसलिए मुमकिन है कि वे चिराग़ जलाते हों।

एक गुफा चित्र

जिन आदमियों का हमने ऊपर ज़िक्र किया है वे पाषाण या पत्थर-युग के आदमी कहलाते हैं। उस ज़माने को पत्थर का युग इसलिए कहते हैं कि आदमी अपने सभी औज़ार पत्थर के वनाते थे। धातुओं को काम में लाना वे न जानते थे। आजकल हमारी चीज़ें अकसर धातुओं से बनती हैं, खासकर लोहे से। लेकिन उस जमाने में किसी को लोहे या काँसे का पता न था। इसलिए पत्थर काम में लाया जाता था, हालाँकि उससे कोई काम करना वहुत मुश्किल था।

पाषाण-युग के खत्म होने के पहले ही दुनिया की आबोहवा वदल गई और उसमें गर्मी आ गई। बर्फ़ के पहाड़ अव उत्तरी सागर तक ही रहते थे और मध्य-एशिया और यूरोप में वड़े-वड़े जंगल पैदा हो गए। इन्हीं जंगलों में आदमियों की एक नई जाति रहने लगी। ये लोग वहुत सी वातों में पत्थर-युग के आदमियों से ज्यादा होशियार थे। लेकिन वे भी पत्थर के ही औज़ार बनाते थे। ये

लोग भी पत्थर ही के युग के थे; मगर वह पिछला पत्थर का युग था, इसलिए वे नए पत्थर के युग के आदमी कहलाते थे।
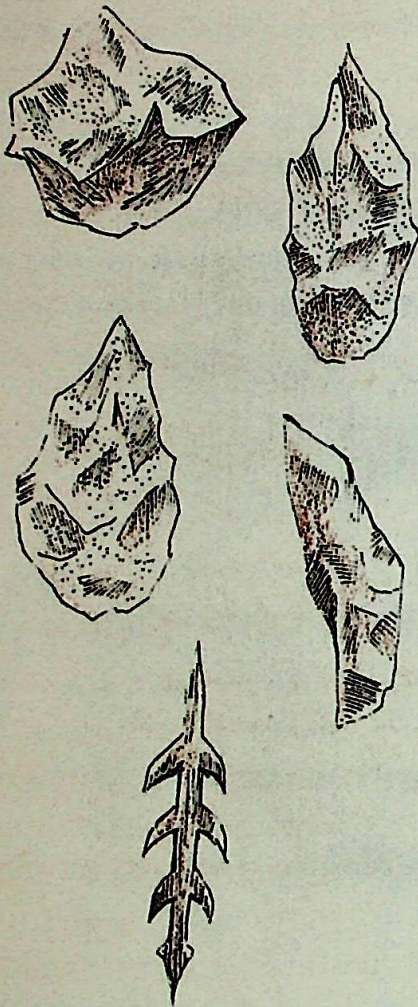
ग़ौर से देखने से मालूम होता है कि नए पत्थर-युग के आदमियों ने बड़ी तरक्क़ी कर ली थी। आदमी की अक्ल और जानवरों के मुक़ाबले में उसे तेज़ी से बढ़ाए लिये जा रही है। इन्हीं नए पाषाण-युग के आदमियों ने एक बहुत बड़ी चीज़ निकाली। यह खेती करने का तरीक़ा था। उन्होंने खेतों को जोतकर खाने की चीज़ें पैदा करनी शुरू कीं। उनके लिए यह बहुत बड़ी बात थी। अब उन्हें आसानी से खाना मिल जाता था, इसकी ज़रूरत न थी कि वे रात दिन जानवरों का शिकार करते रहें। अब उन्हें सोचने और आराम करने की ज्यादा फ़ुर्सत मिलने लगी। और उन्हें जितनी ही ज्यादा फ़ुर्सत मिलती थी, नई चीज़ें और तरीके निकालने में वे उतनी ही ज्यादा तरक्क़ी करते थे।

उन्होंने मिट्टी के वर्तन वनाने शुरू किये और उनकी मदद से खाना पकाने लगे। पत्थर के औज़ार भी अव ज्यादा अच्छे वनने लगे और उन पर पालिश भी अच्छी होने लगी। उन्होंने गाय, कुत्ता, भेड़, वकरी वग़ैरा जानवरों को पालना सीख लिया और वे कपड़े भी बुनने लगे।

वे छोटे-छोटे घरों या झोंपड़ों में रहते थे। ये झोंपड़े अकसर झीलों के बीच में वनाए जाते थे, क्योंकि जंगली जानवर या दूसरे आदमी वहाँ उन पर आसानी से हमला न कर सकते थे। इसलिए ये लोग झील के रहनेवाल कहलाते थे।

तुम्हें अचम्भा होता होगा कि इन आदमियों के वारे में हमें इतनी वातें कैसे मालूम हो गईं। उन्होंने कोई किताव तो लिखी नहीं। लेकिन मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं कि इन आदमियों का हाल जिस किताव में हमें मिलता है वह संसार की किताव है। उसे पढ़ना आसान नहीं है। उसके लिए वड़े अभ्यास की ज़रूरत है। वहुत से आदमियों ने इस किताव के पढ़ने में अपनी सारी उम्र खत्म कर दी है। उन्होंने वहुत-सी हड्डियाँ और पुराने ज़माने की वहुत सी निशानियाँ जमा कर दी हैं। ये चीज़ें वड़े-वड़े अजायवघरों में जमा हैं, और वहाँ हम उम्दा चमकती हुई कुल्हाड़ियाँ और वर्तन, पत्थर के तीर और सुइयाँ, वहुत सी दूसरी चीज़ें देख सकते हैं, जो पिछले पत्थर-युग के आदमी वनाते थे। तुमने खुद इनमें से वहुत सी चीज़ें देखी हैं, लेकिन शायद तुम्हें याद न हो। अगर तुम फिर उन्हें देखो तो ज्यादा अच्छी तरह समझ सकोगी।

मुझे याद आता है कि जनेवा के अजायवघर में झील के मकान का एक वहुत अच्छा नमूना रक्खा हुआ था। झील में लकड़ी के डंडे गाड़ दिए गए थे और उनके ऊपर लकड़ी के तख्ते वाँधकर उन पर झोंपड़ियाँ वनाई गई थीं। इस घर और ज़मीन के बीच में एक छोटा सा पुल वना दिया गया था। ये पिछले पत्थर के युगवाले आदमी जानवरों की खालें पहनते थे और कभी-कभी सन के मोटे कपड़े भी पहनते थे। सन एक पौधा है जिसके रेशों से कपड़ा वनता है। आजकल सन से महीन कपड़े वनाये जाते हैं। लेकिन उस ज़माने के सन के कपड़े बहुत ही भद्दे रहे होंगे।

ये लोग इसी तरह तरक्क़ी करते चले गए; यहाँ तक कि उन्होंने ताँबे और काँसे के औज़ार वनाने शुरू किए। तुम्हें मालूम है कि काँसा, ताँबे और राँगे के मेल से वनता है और इन दोनों से ज्यादा सख्त होता है। वे सोने का इस्तेमाल करना भी जानते थे और इसके ज़ेवर वनाकर इतराते थे।

हमें यह ठीक तो मालूम नहीं कि इन लोगों को हुए कितने दिन गुज़रे लेकिन अन्दाज़ से मालूम होता है कि दस हज़ार साल से कम न हुए होंगे। अभी तक तो हम लाखों वरसों की वात कर रहे थे, लेकिन धीरे-धीरे हम आज-कल के ज़माने के क़रीव आते जाते हैं। नए पाषाण-युग के आदमियों में और आजकल के आदमियों में यकायक कोई तब्दीली नहीं आ गई। फिर भी हम उनके-से नहीं हैं। जो कुछ तब्दीलियाँ हुईं बहुत धीरे-धीरे हुईं और यही प्रकृति का नियम है। तरह-तरह की क़ौमें पैदा हुईं और हर एक क़ौम के रहन-सहन का ढंग अलग था। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों की आबोहवा में वहुत फ़र्क़ था और आदमियों को अपना रहन-सहन उसी के मुताविक़ वनाना पड़ता था। इस तरह लोगों में तब्दीलियाँ होती जाती थीं। लेकिन इस बात का ज़िक्र हम आगे चलकर करेंगे।

आज मैं तुम से सिर्फ़ एक वात का ज़िक्र और करूंगा। जब नया पत्थर का युग खत्म हो रहा था

तो आदमी पर एक बड़ी आफ़त आई। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं कि उस ज़माने में भूमध्य सागर था ही नहीं। वहाँ चन्द झीलें थीं और इन्हीं में लोग आबाद थे। यकायक यूरोप और अफ्रीका के बीच में जिब्राल्टर के पास ज़मीन बह गई और अटलाँटिक समुद्र का पानी उस नीचे खड्डे में भर आया। इस बाढ़ में बहुत से मर्द और औरतें जो वहाँ रहते थे डूब गए होंगे। भाग कर जाते कहाँ? सैंकड़ों मील तक पानी के सिवा कुछ नज़र ही न आता था। अटलाँटिक सागर का पानी बराबर भरता गया और इतना भरा कि भूमध्य सागर बन गया।

तुमने शायद पढ़ा होगा, कम से कम सुना तो है ही, कि किसी ज़माने में बड़ी भारी बाढ़ आई थी। बाइबिल में इसका ज़िक्र है और बाज़ संस्कृत की किताबों में भी उसकी चर्चा आई है। हम तो समझते हैं कि भूमध्य सागर का भरना ही वह बाढ़ होगी। यह इतनी बड़ी आफ़त थी कि इससे बहुत थोड़े आदमी बचे होंगे। और उन्होंने अपने बच्चों से यह हाल कहा होगा। इसी तरह यह कहानी हम तक पहुंची।

तरह-तरह की कौमें क्योंकर बनीं

अपने पिछले खत में मैंने नये पत्थर-युग के आदमियों का ज़िक्र किया था जो खासकर झीलों के बीच में मकानों में रहते थे। उन लोगों ने बहुत-सी बातों में बड़ी तरक्क़ी कर ली थी। उन्होंने खेती करने का तरीक़ा निकाला। वे खाना पकाना जानते थे और यह भी जानते थे कि जानवरों को पाल कर कैसे काम लिया जा सकता है। ये बातें कई हज़ार वर्ष पुरानी हैं और हमें उनका हाल बहुत कम मालूम है लेकिन शायद आज दुनिया में आदमियों की जितनी क़ौमें हैं उनमें से अकसर उन्हीं नये पत्थर-युग के आदमियों की सन्तान हैं। यह तो तुम जानती ही हो कि आजकल दुनिया में गोरे, काले, पीले, भूरे सभी रंगों के आदमी हैं। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि आदमियों की क़ौमों को इन्हीं चार हिस्सों में बाँट देना आसान नहीं है। क़ौमों में ऐसा मेलजोल हो गया है कि उनमें से बहुतों

के वारे में यह वतलाना कि वह किस क़ौम में से हैं वहुत मुश्किल है। वैज्ञानिक लोग आदमियों के सिरों को नापकर कभी-कभी उनकी क़ौम का पता लगा लेते हैं, और भी ऐसे कई तरीक़े हैं जिनसे इस वात का पता चल सकता है।

अव सवाल यह होता है कि ये तरह-तरह की क़ौमें कैसा पैदा हुईं? अगर सव के सव एक ही क़ौम के हैं तो उनमें आज इतना फ़र्क़ क्यों है? जर्मन और हब्शी में कितना फ़र्क़ है! एक गोरा है और दूसरा विलकुल काला। जर्मन के वाल हल्के रंग के और लम्बे होते हैं मगर हब्शी के वाल काले, छोटे और घुंघराले होते हैं। चीनी को देखो तो वह इन दोनों से अलग है। तो यह वतलाना वहुत मुश्किल है कि यह फ़र्क़ क्योंकर पैदा हो गया, हाँ इसके कुछ कारण हमें मालूम हैं। मैं तुम्हें पहले ही वतला चुका हूं कि ज्यों-ज्यों जानवरों का रंग-ढंग आसपास की चीज़ों के मुताविक़ होता गया उनमें धीरे-धीरे तब्दीलियाँ पैदा होती गईं। हो सकता है कि जर्मन और हब्शी अलग-अलग क़ौमों से पैदा हुए हों लेकिन किसी न किसी ज़माने में उनके पुरखे एक ही रहे होंगे। उनमें जो फ़र्क़ पैदा हुआ उसकी वजह या तो यह हो सकती है कि उन्हें अपना रहन-सहन अपने पास पड़ोस की चीज़ों के मुताविक़ वनाना पड़ा या यह कि वाज़ जानवरों की तरह कुछ जातियों ने औरों से ज्यादा आसानी के साथ अपना रहन-सहन वदल दिया हो।

मैं तुमको इसकी एक मिसाल देता हूं। जो आदमी उत्तर के ठंडे और वर्फ़ीले मुल्कों में रहता है उसमें सर्दी वरदाश्त करने की ताक़त पैदा हो जाती है। इस ज़माने में भी इस्कीमो जाति वाले उत्तर के वर्फ़ीले मैदानों में रहते हैं और वहाँ की भयानक सर्दी वरदाश्त करते हैं। अगर वे हमारे जैसे गर्म मुल्क में आयें तो शायद जीते ही न रह सकें। और चूंकि वे दुनिया के और हिस्सों से अलग हैं और उन्हें वड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उन्हें दुनिया की उतनी वातें नहीं मालूम हुईं जितनी और हिस्सों के रहने वाले जानते हैं। जो लोग अफ़्रीक़ा या विषुवत्-रेखा के पास रहते हैं, जहाँ वड़ी सख्त गर्मी पड़ती है, इस गर्मी के आदी हो जाते हैं। इसी तेज़ धूप के सवव से उनका रंग काला हो जाता है। यह तो तुमने देखा ही है कि अगर तुम समुद्र के किनारे या कहीं और देर तक धूप में बैठो तो तुम्हारा चेहरा साँवला हो जाता है। अगर चन्द हफ़्तों तक धूप खाने से आदमी कुछ काला पड़ जाता है तो वह आदमी कितना काला होगा जिसे हमेशा धूप ही में रहना पड़ता है। तो फिर जो लोग सैकड़ों वर्षों तक गर्म मुल्कों में रहें और वहाँ रहते उनकी कई पीढ़ियाँ गुज़र जायें उनके काले हो जाने में क्या ताज्जुव है। तुमने हिन्दुस्तानी किसानों को दोपहरी की धूप में खेतों में काम करते देखा है। वे ग़रीबी की वजह से न ज्यादा कपड़े पहन सकते हैं, न पहनते ही हैं। उनकी सारी देह धूप में खुली रहती है और इसी तरह उनकी पूरी उम्र गुज़र जाती है। फिर वे क्यों न काले हो जायें।

इससे तुम्हें यह मालूम हुआ कि आदमी का रंग उस आवोहवा की वजह से वदल जाता है जिसमें वह रहता है। रंग से आदमी की लियाक़त, भलमनसी या खूवसूरती पर कोई असर नहीं पड़ता। अगर गोरा आदमी किसी गर्म मुल्क में वहुत दिनों तक रहे और धूप से बचने के लिए टट्टियों की आड़ में या पंखों के नीचे न छिपा बैठा रहे, तो वह ज़रूर साँवला हो जायगा। तुम्हें मालूम है कि हम लोग कश्मीरी हैं और सौ साल पहले हमारे पुरखे कश्मीर में रहते थे। कश्मीर में सभी आदमी, यहाँ तक

कि किसान और मजदूर भी, गोरे होते हैं। इसका सबब यही है कि कश्मीर की आबोहवा सर्द है। लेकिन वही कश्मीरी जब हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में आते हैं, जहाँ ज्यादा गर्मी पड़ती है, कई पुश्तों के बाद साँवले हो जाते हैं। हमारे बहुत से कश्मीरी भाई खूब गोरे हैं और बहुत से बिलकुल साँवले भी हैं। कश्मीरी जितने ज्यादा दिनों तक हिन्दुस्तान के इस हिस्से में रहेगा उसका रंग उतना ही साँवला होगा।
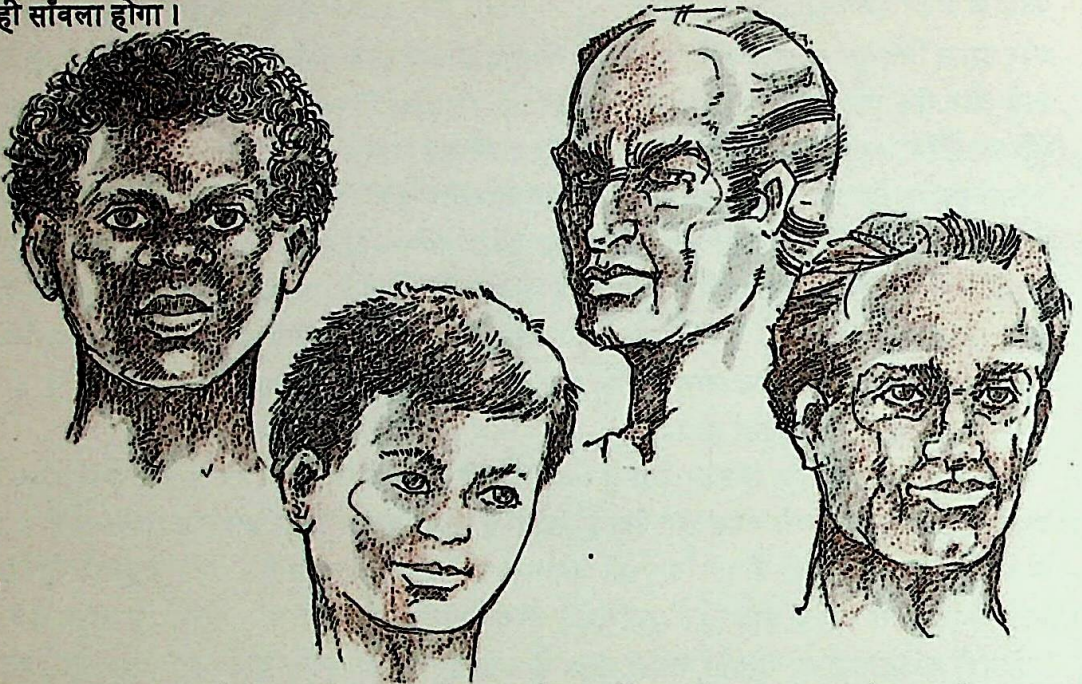
अब तुम समझ गईं कि आबोहवा ही की वजह से आदमी का रंग बदल जाता है। यह हो सकता है कि कुछ लोग गर्म मुल्क में रहें लेकिन मालदार होने की वजह से उन्हें धूप में काम न करना पड़े, वे बड़े-बड़े मकानों में रहें और अपने रंग को बचा सकें। अमीर खानदान इस तरह कई पीढ़ियों तक अपने रंग को आबोहवा के असर से बचाए रख सकता है लेकिन अपने हाथों से काम न करना और दूसरों की कमाई खाना ऐसी बात नहीं जिस पर हम ग़रूर कर सकें। तुमने देखा है कि हिन्दुस्तान में कश्मीर और पंजाब के आदमी आमतौर पर गोरे होते हैं लेकिन ज्यों-ज्यों हम दक्षिण जावें वे काले होते जाते हैं। मद्रास और लंका में ये बिलकुल काले होते हैं। तुम ज़रूर ही समझ जाओगी कि इसका सबब आबोहवा है। क्योंकि दक्षिण की तरफ़ हम जितना ही बढ़ें विषुवत्-रेखा के पास पहुंचते जाते हैं और गर्मी बढ़ती जाती है। यह बिलकुल ठीक है और यही एक खास वजह है कि हिन्दुस्तानियों के रंग में इतना फ़र्क़ है। हम आगे चलकर देखेंगे कि यह फ़र्क़ कुछ इस वजह से भी है कि शुरू में जो क़ौमें हिन्दुस्तान में आकर बसी थीं उनमें आपस में फ़र्क़ था। पुराने ज़माने में हिन्दुस्तान में बहुत सी क़ौमें आईं और हालाँकि बहुत दिनों तक उन्होंने अलग रहने की कोशिश की लेकिन वे आखिर में बिना मिले न रह सकीं। आज किसी हिन्दुस्तानी के बारे में यह कहना मुश्किल है कि वह पूरी तरह से किसी एक असली क़ौम का है।

आदमियों की कौमें और ज़बानें

हम यह नहीं कह सकते कि दुनिया के किस हिस्से में पहले-पहल आदमी पैदा हुए। न हमें यही मालूम है कि शुरू में वह कहाँ आवाद हुए। शायद आदमी एक ही वक्त में, कुछ आगे पीछे दुनिया के कई हिस्सों में पैदा हुए। हाँ, इसमें ज्यादा सन्देह नहीं है कि ज्यों-ज्यों वर्फ़ के ज़माने के वड़े-वड़े वर्फ़ीले पहाड़ पिघलते और उत्तर की ओर हटते जाते थे, आदमी ज्यादा गर्म हिस्सों में आते जाते थे। वर्फ़ के पिघल जाने के वाद वड़े-वड़े मैदान वन गए होंगे, कुछ उन्हीं मैदानों की तरह जो आजकल साइबेरिया में हैं। इस ज़मीन पर घास उग आई और आदमी अपने जानवरों को चराने के लिए इधर-उधर घूमते-फिरते होंगे। जो लोग किसी एक जगह टिक कर नहीं रहते वल्कि हमेशा घूमते रहते हैं "खानावदोश" कहलाते हैं। आज भी हिन्दुस्तान और वहुत से दूसरे मुल्कों में ये खानावदोश या बंजारे मौजूद हैं।

आदमी वड़ी-वड़ी नदियों के पास आवाद हुए होंगे, क्योंकि नदियों के पास की ज़मीन वहुत उपजाऊ और खेती के लिए वहुत अच्छी होती है। पानी की तो कोई कमी थी ही नहीं और ज़मीन में खाने की चीज़ें आसानी से पैदा हो जाती थीं, इसलिए हमारा ख्याल है कि हिन्दुस्तान में लोग सिन्ध और गंगा जैसी वड़ी-वड़ी नदियों के पास वसे होंगे, मेसोपोटैमिया में दजला और फ़रात के पास, मिस्र में नील के पास और उसी तरह चीन में भी हुआ होगा।

हिन्दुस्तान की सव से पुरानी क़ौम, जिसका हाल हमें कुछ मालूम है, द्रविड़ है। उसके वाद, हम जैसा आगे देखेंगे, आर्य आए और पूरब में मंगोल जाति के लोग आए। आजकल भी दक्षिणी हिन्दुस्तान के आदमियों में वहुत से द्रविड़ों की सन्तानें हैं। वे उत्तर के आदमियों से ज्यादा काले हैं, इसलिए कि शायद द्रविड़ लोग हिन्दुस्तान में और ज्यादा दिनों से रह रहे हैं। द्रविड़ जाति वालों ने वड़ी उन्नति कर ली थी, उनकी अलग एक ज़वान थी और वे दूसरी जाति वालों से वड़ा व्यापार भी करते थे। लेकिन हम वहुत तेज़ी से वढ़े जा रहे हैं।

उस ज़माने में पश्चिमी-एशिया और पूर्वी-यूरोप में एक नई जाति पैदा हो रही थी। यह आर्य कहलाती थी। संस्कृत में आर्य शब्द का अर्थ है शरीफ़ आदमी या ऊंचे कुल का आदमी। संस्कृत आर्यों की एक ज़वान थी इसलिए इससे मालूम होता है कि वे लोग अपने को वहुत शरीफ़ और खानदानी समझते थे। ऐसा मालूम होता है कि वे लोग भी आजकल के आदमियों की ही तरह शेखीबाज़ थे। तुम्हें मालूम है कि अंगरेज़ अपने को दुनिया में सव से बढ़कर समझता है, फ्रांसीसी का भी यही खयाल

है कि मैं ही सबसे बड़ा हूं, इसी तरह जर्मन, अमरीकन और दूसरी जातियाँ भी अपने ही बड़प्पन का राग अलापती हैं।

ये आर्य उत्तरी-एशिया और यूरोप के चरागाहों में घूमते रहते थे। लेकिन जब उनकी आबादी बढ़ गई और पानी और चारे की कमी हो गई तो उन सबके लिए खाना मिलना मुश्किल हो गया इसलिए वे खाने की तलाश में दुनिया के दूसरे हिस्सों में जाने के लिए मजबूर हुए। एक तरफ़ तो वे सारे यूरोप में फैल गए, दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान, ईरान और मेसोपोटैमिया में आ पहुंचे। इससे मालूम होता है कि यूरोप, उत्तरी हिन्दुस्तान और मेसोपोटैमिया की सभी जातियाँ असल में एक ही पुरखों की सन्तान हैं, यानी आर्यों की; हालाँकि आजकल उनमें बड़ा फ़र्क़ है। यह तो मानी हुई बात है कि इधर बहुत ज़माना गुज़र गया और तबसे बड़ी-बड़ी तब्दीलियाँ हो गई और क़ौमें आपस में बहुत कुछ मिल गईं। इस तरह आज की बहुत सी जातियों के पुरखे आर्य ही थे।

दूसरी बड़ी जाति मंगोल है। यह सारे पूर्वी एशिया अर्थात् चीन, जापान, तिब्बत, स्याम (अब थाइलैंड) और बर्मा में फैल गई। उन्हें कभी-कभी पीली जाति भी कहते हैं। उनके गालों की हड्डियाँ ऊंची और आँखें छोटी होती हैं।

अफ्रीक़ा और कुछ दूसरी जगहों के आदमी हब्शी हैं। वे न आर्य हैं न मंगोल और उनका रंग बहुत काला होता है। अरब और फ़लिस्तीन की जातियाँ—अरबी और यहूदी—एक दूसरी ही जाति से पैदा हुईं।

ये सभी जातियाँ हज़ारों साल के दौरान में बहुत-सी छोटी-छोटी जातियों में बंट गई हैं और कुछ मिलजुल गई हैं। मगर हम उनकी तरफ़ ध्यान न देंगे। भिन्न-भिन्न जातियों के पहिचानने का एक अच्छा और दिलचस्प तरीक़ा उनकी ज़बानों का पढ़ना है। शुरू-शुरू में हर एक जाति की एक अलग ज़बान थी, लेकिन ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते गए उस एक ज़बान से बहुत-सी ज़बानें निकलती गईं। लेकिन ये सब ज़बानें एक ही माँ की बेटियाँ हैं। हमें उन ज़बानों में बहुत से शब्द एक से ही मिलते हैं और इससे मालूम होता है कि उनमें कोई गहरा नाता है।

जब आर्य एशिया और यूरोप में फैल गए तो उनका आपस में मेलजोल न रहा। उस ज़माने में न रेल गाड़ियाँ थीं, न तार व डाक, यहाँ तक कि लिखी हुई किताबें तक न थीं। इसलिए आर्यों का हरएक हिस्सा एक ही ज़बान को अपने-अपने ढंग से बोलता था, और कुछ दिनों के बाद यह असली ज़बान से, या आर्य देशों की दूसरी बहनों से, बिलकुल अलग हो गई। यही सबब है कि आज दुनिया में इतनी ज़बानें मौजूद हैं।

लेकिन अगर हम इन ज़बानों को ग़ौर से देखें तो मालूम होगा कि गो वे बहुत-सी हैं लेकिन असली ज़बानें बहुत कम हैं। मिसाल के तौर पर देखो कि जहाँ-जहाँ आर्य जाति के लोग गए वहाँ उनकी ज़बान आर्य खानदान की ही रही है। संस्कृत, लैटिन, यूनानी, अंगरेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, इटालियन और बाज दूसरी ज़बानें सब बहनें हैं और आर्य खानदान की ही हैं। हमारी हिन्दुस्तानी ज़बानों में भी जैसे हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी और गुजराती सब संस्कृत की सन्तान हैं और आर्य परिवार में शामिल हैं।
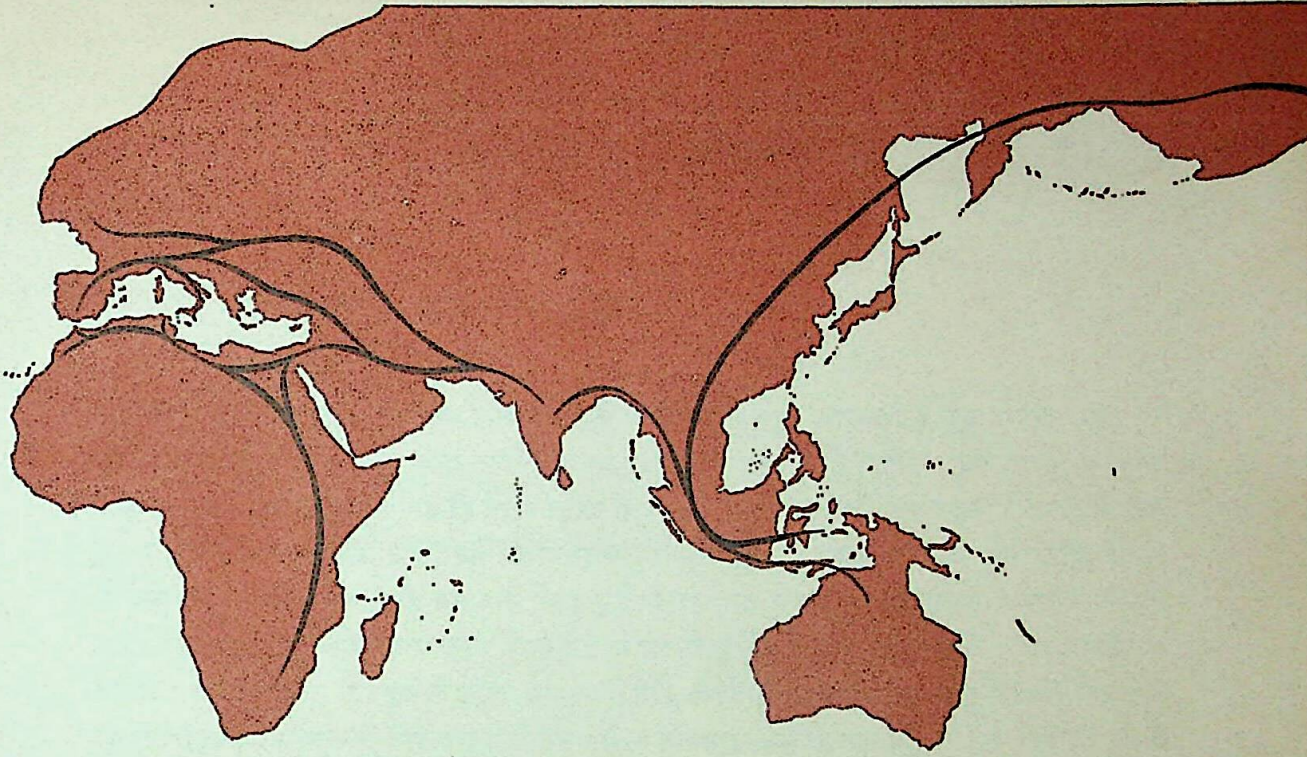
शुरू के मनुष्य के देशान्तरगमन के रास्ते

ज़बान का दूसरा बड़ा खानदान चीनी है। चीनी, बर्मी, तिब्बती और स्यामी ज़बानें उसी से निकली हैं। तीसरा खानदान शेम ज़बान का है जिससे अरबी और इबरानी ज़बानें निकली हैं।

कुछ ज़बानें जैसे तुर्की और जापानी इनमें से किसी वंश में नहीं हैं। दक्षिणी हिन्दुस्तान की कुछ ज़बानें, जैसे तमिल, तेलगु, मलयालम् और कन्नड़ भी उन खानदानों में नहीं हैं। ये चारों द्रविड़ खानदान की हैं और बहुत पुरानी हैं।

ज़बानों का आपस में रिश्ता

हम बतला चुके हैं कि आर्य बहुत से मुल्कों में फैल गए और जो कुछ भी उनकी ज़बान थी उसे अपने साथ लेते गए। लेकिन तरह-तरह की आबोहवा और तरह-तरह की हालतों ने आर्यों की बड़ी-बड़ी जातियों में बहुत फ़र्क़ पैदा कर दिया। हर एक जाति अपने ही ढंग पर बदलती गई और उसकी आदतें और रस्में भी बदलती गईं। वे दूसरे मुल्कों में दूसरी जातियों से न मिल सकते थे, क्योंकि उस ज़माने में सफ़र करना बहुत मुश्किल था, एक गिरोह दूसरे से अलग होता था। अगर एक मुल्क के आदमियों को कोई नई बात मालूम हो जाती, तो वे उसे दूसरे मुल्क वालों को न बतला सकते। इस तरह तब्दीलियाँ होती गईं और कई पुश्तों के बाद एक आर्य जाति के बहुत से टुकड़े हो गए। शायद वे यह भी भूल गए कि हम एक ही बड़े खानदान से हैं। उनकी एक ज़बान से बहुत सी ज़बानें पैदा हो गईं जो आपस में बहुत कम मिलती जुलती थीं।

लेकिन गो उनमें इतना फ़र्क़ मालूम होता था, उनमें बहुत से शब्द एक ही थे, और कई दूसरी बातें भी मिलती-जुलती थीं। आज हज़ारों साल के बाद भी हमें तरह-तरह की भाषाओं में एक ही शब्द मिलते हैं। इससे मालूम होता है कि किसी ज़माने में ये भाषाएं एक ही रही होंगी। तुम्हें मालूम है कि फ़्रांसीसी और अंगरेज़ी में बहुत से एक जैसे शब्द हैं। दो बहुतघरेलू और मामूली शब्द ले लो, "फ़ादर" और "मदर", हिन्दी और संस्कृत में यह शब्द "पिता" और "माता" हैं। लैटिन में वे "पेटर" और "मेटर" हैं; यूनान में "पेटर" और "मीटर"; जर्मन में "फ़ाटेर" और "मुत्तर; फ्रांसीसी में "पेर" और "मेर" और इसी तरह और ज़बानों में भी। ये शब्द आपस में कितने मिलते जुलते हैं! भाई बहिनों की तरह उनकी सूरतें कितनी समान हैं! यह सच है कि बहुत से शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में आ गए होंगे। हिन्दी ने बहुत से शब्द अंगरेज़ी से लिये हैं और अंगरेज़ी ने भी कुछ शब्द हिन्दी से लिये हैं। लेकिन "फ़ादर" और "मदर" इस तरह कभी न लिये गए होंगे। ये नए शब्द नहीं हो सकते। शुरू-शुरू में जब लोगों ने एक दूसरे से बात करनी सीखी तो उस वक्त माँ-बाप तो थे ही उनके लिए शब्द भी बन गए। इसलिए हम कह सकते हैं कि ये शब्द बाहर से नहीं आए। वे एक ही पुरखे या एक ही खानदान से निकले होंगे। और इससे हमें मालूम हो सकता है कि जो क़ौमें आज दूर-दूर के मुल्कों में रहती हैं और भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलती हैं वे सब किसी ज़माने में एक ही बड़े खानदान की रही होंगी। तुमने देख लिया न कि ज़बानों का सीखना कितना दिलचस्प है और उससे

HAWAIIAN

No ka mea, ua al... ua i ko ke ao
nei, nolaila, ua haa... hiwa-
hiwa, i ole e make l...
ia ia ke ola mau lo...

HEBREW

CHEROKEE

CHINESE

上帝憐愛世人，甚至將獨生子賜給他們，叫凡信他的不至滅亡，必得永生。

MANCHU

ICELANDIC

Því að svo el...
son sinn eingeti...
trúir, glatist ekki, hald...

AMHARIC (Abyssinia)

ESKIMO

PASHTO, or AFGHANI

QUECHUA

Imarayku Diosqa chay jinatapunin kaypachata munakurqan, sapan Churinta qorqan, tukuy jaqay paypi iñejqa, ama wañuna... yallinraq wiñay kausayniyoq kanampaq.

BALINESE

JAPANESE

神はそのひとり子を賜わったほ
に、この世を
は御子を信じ
いで、永遠の

TIBETAN

BURMESE

ARABIC

لأنه هكذا أحب الله العالم حتى بذل ابنه الوحيد لكي لا يهلك كل من يؤمن به بل تكون له الحياة الأبدية.

GREEK (Ancient)

Οὕτως γὰρ ἠγάπησεν ὁ Θεὸς τὸν κόσμον, ὥστε τὸν Υἱὸν τὸν μονογενῆ ἔδωκεν, ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν μὴ ἀπόληται ἀλλ' ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον

BATTA, or BATAK (Central Sumatra)

IRISH

Óir is mar so do ġráḋaiġ Dia an...
ocus ré a aoin-ġein m...
ear ann, naċ racaḋ ré...
beaṫa ṁarṫanaċ aiġ...

Sic enim deus dilexit mundũ ut filiũ suũ unigenitũ daret: ut omnis qui credit in eũ non pereat: sed habeat vitam eternã.

हमें कितनी बातें मालूम होती हैं। अगर हम तीन-चार ज़बानें जान जायं तो और ज़बानों का सीखना आसान हो जाता है।

तुमने यह भी देखा कि बहुत से आदमी जो अब दूर-दूर मुल्कों में एक दूसरे से अलग रहते हैं, किसी ज़माने में एक ही क़ौम के थे। तब से हम में बहुत फ़र्क़ हो गया है और हम अपने पुराने रिश्ते भूल गए हैं। हर एक मुल्क के आदमी ख्याल करते हैं कि हमीं सब से अच्छे और अक्लमन्द हैं और दूसरी जातें हमसे घटिया हैं। अंगरेज़ ख्याल करता है कि वह और उसका मुल्क सबसे अच्छा है; फ्रांसीसी को अपने मुल्क और सभी फ्रांसीसी चीज़ों पर घमंड है; जर्मन और इटालियन अपने मुल्कों को सबसे ऊंचा समझते हैं। और बहुत से हिन्दुस्तानियों का ख्याल है कि हिन्दुस्तान बहुत सी बातों में सारी दुनिया से बढ़ा हुआ है। यह सब डींग है। हर एक आदमी अपने को और अपने मुल्क को अच्छा समझता है लेकिन दरअसल कोई ऐसा आदमी नहीं है जिसमें कुछ ऐब और कुछ हुनर न हों। इसी तरह कोई ऐसा मुल्क नहीं है जिसमें कुछ बातें अच्छी और कुछ बुरी न हों। हमें जहाँ कहीं अच्छी बात मिले उसे ले लेना चाहिए और बुराई जहाँ कहीं हो उसे दूर कर देना चाहिए। हमको तो अपने मुल्क हिन्दुस्तान की ही सबसे ज्यादा फ़िक्र है। हमारे दुर्भाग्य से इसका ज़माना आजकल बहुत खराब है और बहुत से आदमी ग़रीब और दुखी हैं। उन्हें अपनी ज़िन्दगी में कोई खुशी नहीं है। हमें इसका पता लगाना है कि हम उन्हें कैसे ज्यादा सुखी बना सकते हैं। हमें यह देखना है कि हमारे रस्म-रिवाज में क्या खूबियाँ हैं और उनको बचाने की कोशिश करना है, जो बुराइयाँ हैं उन्हें दूर करना है। अगर हमें दूसरे मुल्कों में कोई अच्छी बात मिले तो उसे ज़रूर ले लेना चाहिए।

हम हिन्दुस्तानी हैं और हमें हिन्दुस्तान में रहना और उसी की भलाई के लिए काम करना है लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि दुनिया के और हिस्सों के रहने वाले हमारे रिश्तेदार और कुटुम्बी हैं। क्या ही अच्छी बात होती अगर दुनिया के सभी आदमी खुश और सुखी होते। हमें कोशिश करनी चाहिए कि सारी दुनिया ऐसी हो जाय जहाँ लोग चैन से रह सकें।

सभ्यता क्या है ?

मैं आज तुम्हें पुराने ज़माने की सभ्यता का कुछ हाल वताता हूं। लेकिन इसके पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सभ्यता का अर्थ क्या है ? कोष में तो इसका अर्थ लिखा है अच्छा करना, सुधारना, जंगली आदतों की जगह अच्छी आदतें पैदा करना। और इसका व्यवहार किसी समाज या जाति के लिए ही किया जाता है। आदमी की जंगली दशा को, जब वह विलकुल जानवरों का-सा होता है, बर्बरता कहते हैं। सभ्यता विलकुल उसकी उलटी चीज़ है। हम बर्बरता से जितनी ही दूर जाते हैं उतने ही सभ्य होते जाते हैं।

लेकिन हमें यह कैसे मालूम हो कि कोई आदमी या समाज जंगली है या सभ्य ? यूरोप के बहुत से आदमी समझते हैं कि हमीं सभ्य हैं और एशिया वाले जंगली हैं। क्या इसका यह सबब है कि यूरोप वाले एशिया और अफ्रीक़ा वालों से ज्यादा कपड़े पहिनते हैं ? लेकिन कपड़े तो आबोहवा पर निर्भर करते है। ठंडे मुल्क में लोग गर्म मुल्क वालों से ज्यादा कपड़े पहिनते हैं। तो क्या इसका यह सबब है कि जिसके पास बन्दूक है वह निहत्थे आदमी से ज्यादा मज़बूत और इसलिए ज्यादा सभ्य है ? चाहे वह ज्यादा सभ्य हो या न हो, कमज़ोर आदमी उससे यह नहीं कह सकता कि आप सभ्य नहीं हैं। कहीं मज़बूत आदमी झल्ला कर उसे गोली मार दे, तो वह बेचारा क्या करेगा ?

तुम्हें मालूम है कि कई साल पहले एक बड़ी लड़ाई हुई थी ! दुनिया के बहुत से मुल्क उसमें शरीक थे और हर एक आदमी दूसरी तरफ़ के ज्यादा से ज्यादा आदमियों को मार डालने की कोशिश कर रहा था। अंगरेज़ जर्मनी वालों के खून के प्यासे थे और जर्मन अंगरेज़ों के खून के। इस लड़ाई में लाखों आदमी मारे गए और हज़ारों के अंग-भंग हो गए—कोई अन्धा हो गया, कोई लूला, कोई लंगड़ा। तुमने फ्रांस और दूसरी जगह भी ऐसे बहुत से लड़ाई के ज़ख्मी देखे होंगे। पेरिस की सुरंग वाली रेलगाड़ी में, जिसे मेट्रो कहते हैं, उनके लिए खास जगहें हैं। क्या तुम समझती हो कि इस तरह अपने भाइयों को मारना सभ्यता और समझदारी की बात है ? दो आदमी गलियों में लड़ने लगते हैं, तो पुलिस वाले उनमें बीच बचाव कर देते हैं। और लोग समझते हैं कि ये दोनों कितने बेवकूफ़ हैं। तो जब दो बड़े-बड़े मुल्क आपस में लड़ने लगें और हज़ारों और लाखों आदमियों को मार डालें तो वह कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ी और पागलपन है। यह ठीक वैसा ही है जैसे दो वहशी जंगलों में लड़ रहे हों। और अगर वहशी आदमी जंगली कहे जा सकते हैं तो वह मूर्ख कितने जंगली हैं जो इस तरह लड़ते हैं ?

अगर इस निगाह से तुम इस मामले को देखो, तो तुम फ़ौरन कहोगी कि इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस,

इटली और वहुत से दूसरे मुल्क जिन्होंने इतनी मार-काट की ज़रा भी सभ्य नहीं हैं । और फिर भी तुम जानती हो कि इन मुल्कों में कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें हैं और वहाँ कितने अच्छे-अच्छे आदमी रहते हैं ।

अब तुम कहोगी कि सभ्यता का मतलब समझना आसान नहीं है, और यह ठीक है । यह वहुत ही मुश्किल मामला है । अच्छी-अच्छी इमारतें, अच्छी-अच्छी तस्वीरें और किताबें और तरह-तरह की दूसरी और खूबसूरत चीज़ें ज़रूर सभ्यता की पहचान हैं । मगर एक भला आदमी जो स्वार्थी नहीं है और सबकी भलाई के लिए दूसरों के साथ मिलकर काम करता है, सभ्यता की इससे भी वड़ी पहचान है । मिलकर काम करना अकेले काम करने से अच्छा है, और सबकी भलाई के लिए एक साथ मिल कर काम करना सबसे अच्छी बात है ।

जातियों का बनना

मैंने पिछले खतों में तुम्हें बतलाया है कि शुरू में जब आदमी पैदा हुआ तो वह वहुत कुछ जानवरों से मिलता था । धीरे-धीरे हज़ारों वर्षों में उसने तरक्क़ी की और पहले से ज्यादा होशियार हो गया । पहले वह अकेले ही जानवरों का शिकार करता होगा, जैसे जंगली जानवर आज भी करते हैं । कुछ दिनों के वाद उसे मालूम हुआ कि और आदमियों के साथ एक गिरोह में रहना ज्यादा अक्ल की वात है और उसमें जान जाने का डर भी कम है । एक साथ रहकर वह ज्यादा मज़बूत हो जाते थे और जानवरों या दूसरे आदमियों के हमलों का ज्यादा अच्छी तरह मुक़ाविला कर सकते थे । जानवर भी तो अपनी रक्षा के लिए अकसर झुण्डों में रहा करते हैं । भेड़, वकरियाँ और हिरन, यहाँ तक कि हाथी भी झुण्डों में ही रहते हैं । जव झुण्ड सोता है, तो उनमें से एक जागता रहता है और उनका पहरा देता है । तुमने भेड़ियों के झुण्ड की कहानियाँ पढ़ी होंगी । रूस में जाड़ों के दिनों में वे झुण्ड बाँधकर चलते हैं और जव उन्हें भूख लगती है, जाड़ों में उन्हें ज्यादा भूख लगती भी है,

तो आदमियों पर हमला कर देते हैं। एक भेड़िया कभी आदमी पर हमला नहीं करता लेकिन उनका एक झुण्ड इतना मज़बूत हो जाता है कि वह कई आदमियों पर भी हमला कर बैठता है। तब आदमियों को अपनी जान लेकर भागना पड़ता है और अक्सर भेड़ियों और बर्फ़ वाली गाड़ियों में बैठे हुए आदमियों में दौड़ होती है।

इस तरह पुराने ज़माने के आदमियों ने सभ्यता में जो पहली तरक्क़ी की वह मिलकर झुण्डों में रहना था। इस तरह जातियों (फ़िरक़ों) की बुनियाद पड़ी। वे साथ-साथ काम करने लगे। वे एक दूसरे की मदद करते रहते थे। हर एक आदमी पहले अपनी जाति का ख्याल करता था और तब अपना। अगर जाति पर कोई संकट आता तो हर एक आदमी जाति की तरफ़ से लड़ता था। और अगर कोई आदमी जाति के लिए लड़ने से इन्कार करता तो बाहर निकाल दिया जाता था।

अब अगर बहुत से आदमी एक साथ मिलकर काम करना चाहते हैं तो उन्हें क़ायदे के साथ काम करना पड़ेगा। अगर हर एक आदमी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम करे तो वह जाति बहुत दिन न चलेगी। इसलिए किसी एक को उनका सरदार बनना पड़ता है। जानवरों के झुण्डों में भी तो सरदार होते हैं। जातियों में वही आदमी सरदार चुना जाता था जो सबसे मज़बूत होता था इसलिए कि उस ज़माने में बहुत लड़ाई करनी पड़ती थी।

अगर एक जाति के आदमी आपस में लड़ने लगें तो जाति नष्ट हो जायगी। इसलिए सरदार देखता रहता था कि लोग आपस में न लड़ने पावें। हाँ, एक जाति दूसरी जाति से लड़ सकती थी और लड़ती थी। यह तरीक़ा उस पुराने तरीक़े से अच्छा था जब हरएक आदमी अकेला ही लड़ता था।

शुरू-शुरू की जातियां बड़े-बड़े परिवारों की तरह रही होंगी। उसके सब आदमी एक दूसरे के रिश्तेदार होते होंगे। ज्यों-ज्यों यह परिवार बढ़े, जातियां भी बढ़ीं।

उस पुराने ज़माने में आदमी का जीवन बहुत कठिन रहा होगा, खासकर जातियां बनने के पहले। न उनके पास कोई घर था, न कपड़े थे। हाँ, शायद जानवरों की खालें पहनने को मिल जाती हों। और उसे बराबर लड़ना पड़ता रहा होगा। अपने भोजन के लिए या तो जानवरों का शिकार करना पड़ता था या जंगली फल जमा करने पड़ते थे। उसे अपने चारों तरफ़ दुश्मन ही दुश्मन नज़र आते होंगे। प्रकृति भी उसे दुश्मन मालूम होती होगी, क्योंकि ओले और बर्फ़ और भूचाल वही तो लाती थी। बेचारे की दशा कितनी दीन थी। ज़मीन पर रेंग रहा है, और हर एक चीज़ से डरता है इसलिए कि वह कोई बात समझ नहीं सकता। अगर ओले गिरते तो वह समझता कि कोई देवता बादल में बैठा हुआ उस पर निशाना मार रहा है। वह डर जाता था और उस बादल में बैठे हुए आदमी को खुश करने के लिए कुछ न कुछ करना चाहता था जो उस पर ओले और पानी और बर्फ़ गिरा रहा था। लेकिन उसे खुश करे तो कैसे! न वह बहुत समझदार था, न होशियार था। उसने सोचा होगा कि बादलों का देवता हमारी ही तरह होगा और खाने की चीज़ें पसन्द करता होगा। इसलिए वह कुछ माँस रख देता था, या किसी जानवर की क़ुरबानी करके छोड़ देता था कि देवता आकर खा ले। वह सोचता था कि इस उपाय से ओला या पानी बन्द हो जायगा। हमें यह पागलपन मालूम होता है क्योंकि हम मेंह या ओले या बर्फ़ के गिरने का सबब जानते हैं जानवरों के मारने से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन आज भी ऐसे आदमी मौजूद हैं जो इतने नासमझ हैं कि अब तक वही काम किये जाते हैं।

मज़हब की शुरुआत और काम का बँटवारा

पिछले खत में मैंने तुम्हें वतलाया था कि पुराने ज़माने में आदमी हर एक चीज़ से डरता था और ख्याल करता था कि उस पर मुसीवतें लाने वाले देवता हैं जो क्रोधी हैं और ईर्ष्या करते हैं। उसे ये फ़र्ज़ी देवता —जंगल, पहाड़, नदी, वादल—सभी जगह नज़र आते थे। देवता को वह दयालु और नेक नहीं समझता था, उसके ख्याल में वह वहुत ही क्रोधी था और वात-वात पर झल्ला उठता था। और चूंकि वे उसके गुस्से से डरते थे इसलिए वे उसे भेंट देकर, खासकर खाना पहुंचा कर, हर तरह की रिश्वत देने की कोशिश करते रहते थे। जव कोई वड़ी आफ़त आ जाती थी, जैसे भूचाल, या वाढ़ या महामारी जिसमें वहुत से आदमी मर जाते थे, तो वे लोग डर जाते थे और सोचते थे कि देवता नाराज़ हैं। उन्हें खुश करने के लिए वे मर्दों-औरतों का वलिदान करते, यहाँ तक कि अपने ही वच्चों को मारकर देवताओं को चढ़ा देते। यह वड़ी भयानक वात मालूम होती है लेकिन डरा हुआ आदमी जो कुछ न कर बैठे थोड़ा है।

इसी तरह मज़हव शुरू हुआ होगा। इसलिए मज़हव पहले डर के रूप में आया और जो वात डर से की जावे बुरी है। तुम्हें मालूम है कि मज़हव हमें वहुत सी अच्छी-अच्छी वातें सिखाता है। जव तुम वड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया के मज़हबों का हाल पढ़ोगी और तुम्हें मालूम होगा कि मज़हव के नाम पर क्या-क्या अच्छी और बुरी वातें की गई हैं। यहाँ हमें सिर्फ़ यह देखना है कि मज़हव का ख्याल कैसे पैदा हुआ, और क्योंकर वढ़ा। लेकिन चाहे वह जिस तरह वढ़ा हो, हम आज भी लोगों को मज़हव के नाम पर एक दूसरे से लड़ते और सिर फोड़ते देखते हैं। वहुत से आदमियों के लिए मज़हव आज भी वैसी ही डरावनी चीज़ है। वह अपना वक्त फ़र्ज़ी देवताओं को खुश करने के लिए मन्दिरों में पूजा चढ़ाने और जानवरों की क़ुरवानी करने में खर्च करते हैं।

इससे मालूम होता है कि शुरू में आदमी को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उसे अपना रोज़ का खाना तलाश करना पड़ता था नहीं तो भूखों मर जाता। उन दिनों कोई आलसी आदमी ज़िन्दा न रह सकता था। कोई ऐसा भी नहीं कर सकता था कि एक ही दिन वहुत-सा खाना जमा कर ले और वहुत दिनों तक आराम से पड़ा रहे।

जव जातियाँ (फ़िरके) वन गईं, तो आदमी को कुछ सुविधा हो गई। एक जाति के सब आदमी मिल कर उससे ज्यादा खाना ज़मा कर लेते थे जितना कि वे अलग-अलग कर सकते थे। तुम जानती हो कि मिल कर काम करना या सहयोग, ऐसे वहुत से काम करने में मदद देता है जो हम अकेले नहीं कर सकते। एक या दो आदमी कोई भारी बोझ नहीं उठा सकते लेकिन कई आदमी मिल कर
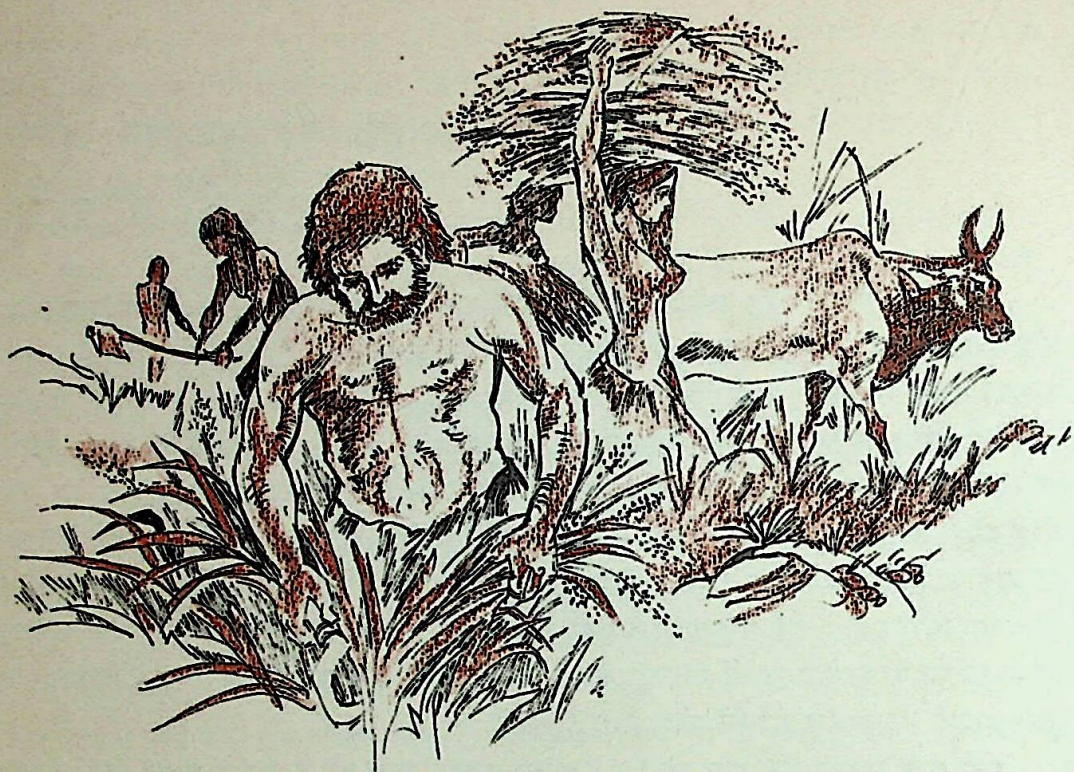
आसानी से उठा ले जा सकते हैं। दूसरी बड़ी तरक्क़ी जो उस ज़माने में हुई वह खेती थी। तुम्हें यह सुनकर ताज्जुब होगा कि खेती का काम पहले कुछ चींटियों ने शुरू किया। मेरा यह मतलब नहीं है है कि चींटियाँ बीज बोतीं, हल चलातीं या खेती काटती हैं। मगर वे कुछ इसी तरह की बातें करती हैं। अगर उन्हें ऐसी झाड़ी मिलती है, जिसके बीज वे खाती हों, तो वे बड़ी होशियारी से उसके आस-पास की घास निकाल डालती हैं। इससे वह दरख्त ज्यादा फलता-फूलता है और बढ़ता है। शायद किसी ज़माने में आदमियों ने भी यही किया होगा जो चींटियाँ करती हैं। तब उन्हें यह समझ क्या थी कि खेती क्या चीज़ है। इसके जानने में उन्हें एक ज़माना गुज़र गया होगा और तब उन्हें मालूम हुआ होगा कि बीज कैसे बोया जाता है।

खेती शुरू हो जाने पर खाना मिलना बहुत आसान हो गया। आदमी को खाने के लिए सारे दिन शिकार करना पड़ता था। उसकी ज़िंदगी पहले से ज्यादा आराम से कटने लगी। इसी ज़माने में एक और बड़ी तब्दीली पैदा हुई। खेती के पहले हर आदमी शिकारी था और शिकार ही उसका

एक काम था। औरतें शायद बच्चों की देख-रेख करती होंगी और फल बटोरती होंगी। लेकिन जब खेती शुरू हो गई तो तरह-तरह के काम निकल आये। खेतों में भी काम करना पड़ता था, शिकार करना, गाय-बैलों की देख-भाल करना भी ज़रूरी था। औरतें शायद गायों की देखभाल करतीं थीं और उनको को दुहती थीं। कुछ आदमी एक तरह का काम करने लगे, कुछ दूसरी तरह का।

आज तुम्हें दुनिया में हर एक आदमी एक खास क़िस्म का काम करता हुआ दिखाई देता है। कोई डाक्टर है, कोई सड़कों और पुलों का बनाने वाला इंजीनियर, कोई बढ़ई, कोई लुहार, कोई घरों का बनाने वाला, कोई मोची या दरज़ी वग़ैरा। हर एक आदमी का अपना अलग पेशा है और दूसरे पेशों के बारे में वह कुछ नहीं जानता। इसे काम का बंटना कहते हैं। अगर कोई आदमी एक ही काम करे तो उसे बहुत अच्छी तरह करेगा। बहुत से काम वह इतनी अच्छी तरह पूरे नहीं कर सकता, दुनिया में आजकल इसी तरह काम बंटा हुआ है।

जब खेती शुरू हुई तो पुरानी जातियों में इसी तरह धीरे-धीरे काम का बंटना शुरू हुआ।

खेती से पैदा हुई तब्दीलियां

अपने पिछले खत में मैंने कामों के अलग-अलग किये जाने का कुछ हाल बतलाया था। बिलकुल शुरू में जब आदमी सिर्फ़ शिकार पर बसर करता था; काम बंटे हुए न थे। हर एक आदमी शिकार करता था और मुश्किल से खाने भर को पाता था। पहले मर्दों और औरतों के बीच में काम बंटना शुरू हुआ होगा; मर्द शिकार करता होगा और औरत घर में रहकर बच्चों और पालतू जानवरों की निगरानी करती होगी।

जब आदमियों ने खेती करना सीखा तो बहुत सी नई-नई बातें निकलीं। पहली बात यह हुई कि काम कई हिस्सों में बंट गया। कुछ लोग शिकार खेलते और कुछ खेती करते और हल चलाते। ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते गए आदमी ने नए-नए, पेशे सीखे और उनमें पक्के हो गए।

खेती करने का दूसरा अच्छा नतीजा यह हुआ कि लोग गाँव और कस्बों में आबाद होने लगे। खेती के पहले लोग इधर-उधर घूमते-फिरते थे और शिकार करते थे। उनके लिए एक जगह रहना ज़रूरी नहीं था। शिकार हर एक जगह मिल जाता था। इसके सिवा उन्हें गायों, बकरियों और अपने दूसरे जानवरों की वजह से इधर-उधर घूमना पड़ता था। इन जानवरों को चराने के लिए चरागाह की ज़रूरत थी। एक जगह कुछ दिनों तक चरने के बाद ज़मीन में जानवरों के लिए काफ़ी घास न पैदा होती थी और सारी जाति को दूसरी जगह जाना पड़ता था।

जब लोगों को खेती करना आ गया तो उनका ज़मीन के पास रहना ज़रूरी हो गया। ज़मीन को जोत-बोकर वे छोड़ न सकते थे। उन्हें साल भर तक लगातार खेती का काम लगा ही रहता था और इस तरह गाँव और शहर बन गए।

दूसरी बड़ी बात जो खेती से पैदा हुई वह यह थी कि आदमी की ज़िन्दगी ज्यादा आराम से कटने लगी। खेती से ज़मीन में खाना पैदा करना सारे दिन शिकार खेलने से कहीं ज्यादा आसान था। इसके सिवा ज़मीन में खाना भी इतना पैदा होता था जितना वह एकदम खा नहीं सकते थे इससे वह हिफ़ाजत से रखते थे। एक और मजे की बात सुनो। जब आदमी निपट शिकारी था तो वह कुछ जमा न कर सकता था या कर भी सकता था तो बहुत कम, किसी तरह पेट भर लेता था। उसके पास बैंक न थे। जहाँ वह अपने रुपये व दूसरी चीज़ें रख सकता। उसे तो अपना पेट भरने के लिए रोज़ शिकार खेलना पड़ता था, खेती में उसे एक फ़सल में ज़रूरत से ज्यादा मिल जाता था। इस फ़ालतू खाने को वह जमा कर देता था। इस तरह लोगों ने फ़ालतू अनाज जमा करना शुरू किया। लोगों के पास फ़ालतू खाना इसलिए हो जाता था कि वह उससे कुछ ज्यादा मेहनत करते थे जितना सिर्फ़ पेट भरने के लिए ज़रूरी था। तुम्हें मालूम है कि आजकल बैंक खुले हुए हैं जहाँ लोग रुपये जमा करते हैं और चैक लिख कर निकाल सकते हैं। यह रुपया कहाँ से आता है? अगर तुम ग़ौर करो तो तुम्हें मालूम होगा कि यह फ़ालतू रुपया है यानि ऐसा रुपया जिसे लोगों को एकबारगी खर्च करने की ज़रूरत नहीं है इसलिए इसे वे बैंक में रखते हैं। वही लोग मालदार हैं जिनके पास बहुत सा फ़ालतू रुपया है, और जिनके पास कुछ नहीं वे ग़रीब हैं। आगे तुम्हें मालूम होगा कि यह फालतू रुपया आता कहाँ से है। इसका सबब यह नहीं है कि आदमी दूसरे से ज्यादा काम करता है और ज्यादा कमाता है बल्कि आजकल जो आदमी बिलकुल काम नहीं करता उसके पास तो बचत होती है और जो पसीना बहाता है उसे खाली हाथ रहना पड़ता है। कितना बुरा इन्तज़ाम है! बहुत से लोग समझते हैं कि इसी बुरे इन्तज़ाम के सबब से दुनिया में आजकल इतने ग़रीब आदमी हैं। अभी शायद तुम यह बात समझ न सको इसलिए इसमें सिर न खपाओ। थोड़े दिनों में तुम इसे समझने लगोगी।

इस वक्त तो तुम्हें इतना ही जानना काफ़ी है कि खेती से आदमी को उससे ज्यादा खाना मिलने लगा जितना वह एकदम खा सकता था। यह जमा कर लिया जाता था। उस ज़माने में न रुपये थे न बैंक। जिनके पास बहुत सी गायें, भेड़ें, ऊंट या अनाज होता था वही अमीर कहलाते थे।

खानदान का सरगना कैसे बना

मुझे भय है कि मेरे खत कुछ पेचीदा होते जा रहे हैं। लेकिन अब ज़िन्दगी भी तो पेचीदा हो गई है। पुराने ज़माने में लोगों की ज़िन्दगी बहुत सादी थी और अब हम उस ज़माने पर आ गए हैं जब ज़िन्दगी पेचीदा होनी शुरू हुई। अगर हम पुरानी बातों को ज़रा सावधानी के साथ जाँचें और उन तब्दीलियों को समझने की कोशिश करें जो आदमी की ज़िन्दगी और समाज में पैदा होती गईं, तो हमारी समझ में बहुत सी बातें आ जायेंगी। अगर हम ऐसा न करेंगे तो हम उन बातों को कभी न समझ सकेंगे जो आज दुनिया में हो रही हैं। हमारी हालत उन बच्चों की सी होगी जो किसी जंगल में रास्ता भूल गए हों। यही सबब है कि मैं तुम्हें ठीक जंगल के किनारे पर लिये चलता हूं ताकि हम इसमें से अपना रास्ता ढूंढ़ निकालें।

तुम्हें याद होगा कि तुमने मुझसे मसूरी में पूछा था कि बादशाह क्या हैं और वह कैसे बादशाह हो गए। इसलिए हम उस पुराने ज़माने पर एक नज़र डालेंगे जब राजा बनने शुरू हुए। पहले-पहल वह राजा न कहलाते थे। अगर उनके बारे में कुछ मालूम करना है तो हमें यह देखना होगा कि वे शुरू कैसे हुए।

मैं जातियों के बनने का हाल तुम्हें बतला चुका हूं। जब खेती-बारी शुरू हुई और लोगों के काम अलग-अलग हो गए तो यह ज़रूरी हो गया कि जाति का कोई बड़ा-बूढ़ा काम को आपस में बाँट दे। इसके पहले भी जातियों में ऐसे आदमी की ज़रूरत होती थी जो उन्हें दूसरी जातियों से लड़ने के लिए तैयार करे। अक्सर जाति का सबसे बूढ़ा आदमी सरग़ना होता था। वह जाति का बुज़ुर्ग कहलाता था। सबसे बूढ़ा होने की वजह से यह समझा जाता था कि वह सबसे ज्यादा तजरुबेकार और होशियार है। यह बुज़ुर्ग जाति के और आदमियों की ही तरह होता था। वह दूसरों के साथ काम करता था और जितनी खाने की चीज़ें पैदा होती थीं वे जाति के सब आदमियों में बाँट दी जाती थीं। हर एक चीज़ जाति की होती थी। आजकल की तरह ऐसा न होता था कि हर एक आदमी का अपना मकान और दूसरी चीज़ें हों। और आदमी जो कुछ कमाता था वह आपस में बाँट लिया जाता था क्योंकि वह सब जाति का समझा जाता था। जाति का बुज़ुर्ग या सरग़ना इस बाँट-बखरे का इन्तज़ाम करता था।

लेकिन तब्दीलियाँ बहुत आहिस्ता-आहिस्ता होने लगीं। खेती के आ जाने से नए-नए काम निकल आए और सरग़ना को अपना बहुत सा वक्त इन्तज़ाम करने में और यह देखने में कि सब लोग अपना-अपना काम ठीक तौर पर करते हैं या नहीं, खर्च करना पड़ता था। धीरे-धीरे सरगना ने

जाति के मामूली आदमियों की तरह काम करना छोड़ दिया। वह जाति के और आदमियों से विलकुल अलग हो गया। अब काम की बंटाई बिलकुल दूसरे ढंग की हो गई। सरग़ना तो इन्तज़ाम करता था और आदमियों को काम करने का हुक्म देता था और दूसरे लोग खेतों में काम करते थे, शिकार करते थे या लड़ाइयों में जाते थे और अपने सरग़ना के हुक्मों को मानते थे। अगर दो जातियों में लड़ाई ठन जाती तो सरग़ना और भी ताक़तवर हो जाता क्योंकि लड़ाई के ज़माने में वग़ैर किसी अगुआ के अच्छी तरह लड़ना मुमकिन न था। इस तरह सरग़ना की ताक़त बढ़ती गई।

जब इन्तज़ाम करने का काम बहुत बढ़ गया तो सरग़ना के लिए अकेले सब काम मुश्किल हो गया। उसने अपनी मदद के लिए दूसरे आदमियों को लिया। इन्तज़ाम करने वाले बहुत से हो गए। हाँ, उनका अगुआ सरग़ना ही था। इस तरह जाति दो हिस्सों में बंट गई, इन्तज़ाम करने वाले और मामूली काम करने वाले। अब सब लोग बराबर न रहे। जो लोग इन्तज़ाम करते थे उनका मामूली मजदूरों पर दबाव होता था।

अगले खत में मैं दिखाऊंगा कि सरग़ना का अधिकार क्योंकर बढ़ा।

सरगना का इख्तियार कैसे बढ़ा

मुझे उम्मीद है कि पुरानी जातियों और उनके बुज़ुर्गों का हाल तुम्हें रूखा न मालूम होता होगा।

मैंने अपने पिछले खत में तुम्हें बतलाया था कि उस ज़माने में हर एक चीज़ सारी जाति की होती थी। किसी की अलग नहीं। सरग़ना के पास भी अपनी कोई खास चीज़ न होती थी। जाति के और आदमियों की तरह उसका भी एक ही हिस्सा होता था। लेकिन वह इन्तज़ाम करने वाला था और उसका यह काम समझा जाता था कि वह जाति के माल और जायदाद की देख-रेख करता रहे। जब उसका अधिकार बढ़ा तो उसे यह सूझी कि यह माल और असबाब जाति का नहीं, मेरा है। या शायद उसने समझा हो कि वह जाति का सरग़ना है इसलिए उस जाति का मुख्तार भी है। इस तरह

किसी चीज़ को अपना समझने का ख्याल पैदा हुआ। आज हर एक चीज़ को मेरा-तेरा कहना और समझना मामूली बात है। लेकिन जैसा मैं पहले तुम से कह चुका हूं उन पुरानी जातियों के मर्द और औरत इस तरह ख्याल न करते थे। तब हर एक चीज़ सारी जाति की होती थी। आखिर यह हुआ कि सरग़ना अपने को ही जाति का मुख्तार समझने लगा। इसलिए जाति का माल व असबाब उसी का हो गया।

जब सरग़ना मर जाता था तो जाति के सब आदमी जमा होकर कोई दूसरा सरग़ना चुनते थे। लेकिन आम तौर पर सरग़ना के खानदान के लोग इन्तज़ाम के काम को दूसरों से ज्यादा समझते थे। सरग़ना के साथ हमेशा रहने और उसके काम में मदद देने की वजह से वे इन कामों को खूब समझ जाते थे। इसलिए जब कोई बूढ़ा सरग़ना मर जाता, तो जाति के लोग उसी खानदान के किसी आदमी को सरग़ना चुन लेते थे। इस तरह सरग़ना का खानदान दूसरे से अलग हो गया और जाति के लोग उसी खानदान से अपना सरग़ना चुनने लगे। यह तो ज़ाहिर है कि सरग़ना को बड़े इख्तियार होते थे और वह चाहता था कि उसका बेटा या भाई उसकी जगह सरग़ना बने। और भरसक इसकी कोशिश करता था। इसलिए वह अपने भाई या बेटे या किसी सगे रिश्तेदार को काम सिखाया करता था जिससे वह उसकी गद्दी पर बैठे। वह जाति के लोगों से कभी-कभी कह भी दिया करता था कि फ़लाँ आदमी जिसे मैंने काम सिखा दिया है मेरे बाद सरग़ना चुना जावे। शुरू में शायद जाति के आदमियों को यह ताक़ीद अच्छी न लगी हो लेकिन थोड़े ही दिनों में उन्हें उसकी आदत पड़ गई और वे उसका हुक्म मानने लगे। नए सरग़ना का चुनाव बन्द हो गया। बूढ़ा सरग़ना तय कर देता था कि कौन उसके बाद सरग़ना होगा और वही होता था।

इससे हमें मालूम हुआ कि सरग़ना की जगह मौरूसी हो गई यानी उसी खानदान में बाप के के बाद बेटा या कोई और रिश्तेदार सरग़ना होने लगा। सरग़ना को अब पूरा भरोसा हो गया कि जाति का माल असबाब दरअसल मेरा ही है यहाँ तक कि उसके मर जाने के बाद भी वह उसके खानदान में ही रहता था। अब हमें मालूम हुआ कि मेरा-तेरा का ख्याल कैसे पैदा हुआ। शुरू में किसी के दिल में यह बात न थी। सब लोग मिलकर जाति के लिए काम करते थे, अपने लिए नहीं। अगर बहुत सी खानें की चीज़ें पैदा करते, तो जाति के हर एक आदमी को उसका हिस्सा मिल जाता था। जाति में अमीर-ग़रीब का फ़र्क़ न था। सभी लोग जाति की जायदाद में बराबर के हिस्सेदार थे।

लेकिन ज्योंही सरग़ना ने जाति की चीज़ों को हड़प करना शुरू किया और उन्हें अपनी कहने लगा लोग अमीर और ग़रीब होने लगे। अगले खत में इसके बारे में मैं कुछ और लिखूंगा।

सरगना राजा हो गया

बूढ़े सरग़ना ने हमारा बहुत-सा वक्त ले लिया। लेकिन हम उससे जल्द ही फ़ुर्सत पा जायेंगे या यों कहो उसका नाम कुछ और हो जायगा। मैंने तुम्हें यह बतलाने का वायदा किया था कि राजा कैसे हुए और वह कौन थे और राजाओं का हाल समझने के लिए पुराने ज़माने के सरग़नों का ज़िक्र ज़रूरी था। तुमने ताड़ लिया होगा कि यह सरग़ना बाद को राजा और महाराजा बन बैठे। पहले वह अपनी जाति का अगुआ होता था। अंगरेज़ी में उसे "पैट्रियार्क" कहते हैं। "पैट्रियार्क" लैटिन शब्द "पेटर" से निकला है जिसके माने पिता के हैं। "पैट्रिया" भी इसी लैटिन शब्द से निकला है जिसके माने हैं "पितृभूमि"। फ्रांसीसी में उसे "पात्री" कहते हैं। संस्कृत और हिन्दी में हम अपने मुल्क को "मातृभूमि" कहते हैं। तुम्हें कौन पसन्द है ? जब सरग़ना की जगह मौरूसी हो गई या बाप के बाद बेटे को मिलने लगी तो उसमें और राजा में कोई फ़र्क़ न रहा। वही राजा बन बैठा और राजा के दिमाग़ में यह बात समा गई कि मुल्क की सब चीज़ें मेरी ही हैं। उसने अपने को सारा मुल्क समझ लिया। एक मशहूर फ्रांसीसी बादशाह ने एक मर्तबा कहा था "मैं ही राज्य हूं"। राजा भूल गए कि लोगों ने उन्हें सिर्फ़ इसलिए चुना है कि वे इन्तज़ाम करें और मुल्क की खाने की चीज़ें और दूसरे सामान आदमियों में बाँट दें। वे यह भी भूल गए कि वे सिर्फ़ इसलिए चुने जाते थे कि वह उस जाति या मुल्क में सब से होशियार और तजरुबेकार समझे जाते थे। वे समझने लगे कि हम मालिक हैं और मुल्क के सब आदमी हमारे नौकर हैं। असल में वे ही मुल्क के नौकर थे।

आगे चलकर जब तुम इतिहास पढ़ोगी, तो तुम्हें मालूम होगा कि राजा इतने अभिमानी हो गए कि वे समझने लगे कि प्रजा को उनके चुनाव से कोई वास्ता न था। वे कहने लगे कि हमें ईश्वर ने राजा बनाया है। इसे वे ईश्वर का दिया हुआ हक़ कहने लगे। बहुत दिनों तक वे यह बेइंसाफ़ी करते रहे और खूब ऐश के साथ राज्य के मज़े उड़ाते रहे और उनकी प्रजा भूखों मरती रही। लेकिन आखिरकार प्रजा इसे बरदाश्त न कर सकी और बाज़ मुल्कों में उन्होंने राजाओं को मार भगाया। तुम आगे चलकर पढ़ोगी कि इंग्लैंड की प्रजा अपने राजा प्रथम चार्ल्स के खिलाफ़ उठ खड़ी हुई थी, उसे हरा दिया और मार डाला। इसी तरह फ्रांस की प्रजा ने भी एक बड़े हंगामे के बाद यह तय किया कि अब हम किसी को राजा न बनायेंगे। तुम्हें याद होगा कि हम फ्रांस के कौंसियरज़ेरी क़ैदखाने को देखने गये थे। क्या तुम हमारे साथ थीं। इसी क़ैदखाने में फ्रांस का राजा और उसकी रानी मारी आँतॉनेत और दूसरे लोग रखे गये थे। तुम रूस की राज्य-क्रान्ति का हाल भी पढ़ोगी जब रूस की प्रजा ने कई साल हुए अपने राजा को निकाल बाहर किया जिसे 'ज़ार' कहते थे। इससे मालूम होता

है कि राजाओं के बुरे दिन आ गए और अव वहुत से मुल्कों में राजा हैं ही नहीं। फ्रांस, जर्मनी, रूस, स्विटज़रलैंड, अमरीका, चीन और वहुत से दूसरे मुल्कों में कोई राजा नहीं है। वहाँ पंचायती राज है जिसका मतलव है कि प्रजा समय-समय पर अपने हाकिम और अगुआ चुन लेती है और उनकी जगह मौरूसी नहीं होती।

तुम्हें मालूम है कि इंग्लैंड में अभी तक राजा है लेकिन उसे कोई अधिकार नहीं हैं। वह कुछ कर नहीं सकता। सव इख्तियार पार्लमेंट के हाथ में है जिसमें प्रजा के चुने हुए अगुआ बैठते हैं। तुम्हें याद होगा कि तुमने लन्दन में पार्लमेंट देखी थी।

हिन्दुस्तान में अभी तक वहुत से राजा, महाराजा और नवाब हैं। तुमने उन्हें भड़कीले कपड़े पहने, कीमती मोटर गाड़ियों में घूमते, अपने ऊपर वहुत-सा रुपया खर्च करते देखा होगा। उन्हें यह रुपया कहाँ से मिलता है? यह रिआया पर टैक्स लगाकर वसूल किया जाता है। टैक्स दिये तो इस-लिए जाते हैं कि उससे मुल्क के सभी आदमियों की मदद की जाय, स्कूल और अस्पताल, पुस्तकालय, और अजायवघर खोले जायें, अच्छी सड़कें वनाई जायें और प्रजा की भलाई के लिए और बहुत से काम किए जायं। लेकिन हमारे राजा महाराजा उसी फ्रांसीसी बादशाह की तरह अब भी यही समझते हैं कि हमीं राज्य हैं और प्रजा का रुपया अपने ऐश में उड़ाते हैं। वे तो इतनी शान से रहते हैं और उनकी प्रजा जो पसीना वहाकर उन्हें रुपया देती है, भूखों मरती है और उनके वच्चों के पढ़ने के लिए मदरसे भी नहीं होते।

शुरू का रहन-सहन

सरग़नों और राजों की चर्चा हम काफ़ी कर चुके। अब हम उस ज़माने के रहन-सहन और आदमियों का कुछ हाल लिखेंगे।

हमें उस पुराने ज़माने के आदमियों का बहुत ज्यादा हाल तो मालूम नहीं, फिर भी पुराने पत्थर के युग और नए पत्थर के युग के आदमियों से कुछ ज्यादा ही मालूम है। आज भी बड़ी-बड़ी इमारतों के खंडहर मौजूद हैं जिन्हें बने हज़ारों साल हो गए। उन पुरानी इमारतों, मन्दिरों और महलों को देखकर हम कुछ अन्दाज़ा कर सकते हैं कि वे पुराने आदमी कैसे थे और उन्होंने क्या-क्या काम किए। उन पुरानी इमारतों की संगतराशी और नक्क़ाशी से खासकर बड़ी मदद मिलती है। इन पत्थर के कामों से हमें कभी-कभी इसका पता चल जाता है कि वे लोग कैसे कपड़े पहनते थे। और भी बहुत-सी बातें मालूम हो जाती हैं।

हम यह तो ठीक-ठीक नहीं कह सकते कि पहले-पहल आदमी कहाँ आबाद हुए और रहने-सहने के तरीक़े निकाले। बाज़ आदमियों का ख्याल है कि जहाँ एटलाँटिक सागर है वहाँ एटलाँटिक नाम का एक बड़ा मुल्क था। कहते हैं कि इस मुल्क में रहने वालों का रहन-सहन बहुत ऊंचे दरजे का था, लेकिन किसी वजह से सारा मुल्क एटलाँटिक सागर में समा गया और अब उसका कोई हिस्सा बाकी नहीं है। लेकिन किस्से कहानियों को छोड़कर हमारे पास इसका कोई सबूत नहीं है, इसलिए उसका ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पुराने ज़माने में अमरीका में ऊंचे दरजे की सभ्यता फैली हुई थी। तुम्हें मालूम है कि कोलम्बस को अमरीका का पता लगाने वाला कहा जाता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कोलम्बस के जाने से पहले अमरीका था ही नहीं। इसका खाली इतना मतलब है कि यूरोप वालों को कोलम्बस के पहले उसका पता न था। कोलम्बस के जाने के बहुत पहले से वह मुल्क आबाद और सभ्य था। युकेटन में, जो उत्तरी अमरीका के मेक्सिको राज्य में है, और दक्खिनी अमरीका के पीरू राज्य में, पुरानी इमारतों के खंडहर हमें मिलते हैं। इससे इसका यक़ीन हो जाता है कि बहुत पुराने ज़माने में भी पीरू और युकेटन के लोगों में सभ्यता फैली हुई थी। लेकिन उनका और ज्यादा हाल हमें अब तक नहीं मालूम हो सका। शायद कुछ दिनों के बाद हमें उनके बारे में कुछ और बातें मालूम हों।

यूरोप और एशिया को मिलाकर युरेशिया कहते हैं। युरेशिया में सबसे पहले मेसोपोटैमिया, मिस्र, क्रीट, हिन्दुस्तान और चीन में सभ्यता फैली। मिस्र अब अफ्रीका में है लेकिन हम इसे युरेशिया

में रख सकते हैं क्योंकि वह इससे बहुत नज़दीक है।

पुरानी जातियाँ जो इधर-उधर घूमती-फिरती थीं, जब कहीं आवाद होना चाहती होंगी तो वे कैसी जगह पसन्द करती होंगी ? वह ऐसी जगह होती होगी जहाँ वे आसानी से खाना पा सकें। उनका कुछ खाना खेती से ज़मीन में पैदा होता था। और खेती के लिए पानी का होना ज़रूरी है। पानी न मिले तो खेत सूख जाते हैं और उनमें कुछ नहीं पैदा होता। तुम्हें मालूम है कि जब चौमासे में हिन्दुस्तान में काफ़ी बारिश नहीं होती तो अनाज बहुत कम होता है और अकाल पड़ जाता है। ग़रीब आदमी भूखों मरने लगते हैं। पानी के वग़ैर काम नहीं चल सकता। पुराने ज़माने के आदमियों को ऐसी ही ज़मीन चुननी पड़ी होगी जहाँ पानी की बहुतायत हो। यही हुआ भी।

मेसोपोटेमिया में वे दजला और फरात इन दो बड़ी नदियों के बीच में आबाद हुए। मिस्र में नील नदी के किनारे। हिन्दुस्तान में उनके क़रीब-क़रीब सभी शहर सिन्ध, गंगा, जमुना इत्यादि बड़ी-बड़ी नदियों के किनारे आवाद हुए। पानी उनके लिए इतना ज़रूरी था कि वे इन नदियों को देवता समझने लगे जो उन्हें खाना और आराम की दूसरी चीज़ें देता था। मिस्र में नील को "पिता नील" कहते थे और उसकी पूजा करते थे। हिन्दुस्तान में गंगा की पूजा होने लगी और अब तक उसे पवित्र समझा जाता है। लोग उसे "गंगा माई" कहते हैं और तुमने यात्रियों को "गंगा माई की जय" का शोर मचाते सुना होगा। यह समझना मुश्किल नहीं है कि क्यों वे नदियों की पूजा करते थे, क्योंकि नदियों से उनके सभी काम निकलते थे। उनसे सिर्फ़ पानी ही न मिलता था, अच्छी मिट्टी और वालू भी मिलती थी जिससे उनके खेत उपजाऊ हो जाते थे। नदी ही के पानी और मिट्टी से तो अनाज के ढेर लग जाते थे, फिर वे नदियों को क्यों न 'माता' और 'पिता' कहते। लेकिन आदमियों की आदत है कि असली सवव को भूल जाते हैं। वे विना सोचे समझे लकीर पीटते चले जाते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि नील और गंगा की बड़ाई सिर्फ़ इसलिए है कि उनसे आदमियों को अनाज और पानी मिलता है।

पुरानी दुनिया के बड़े-बड़े शहर

मैं लिख चुका हूं कि आदमियों ने पहले-पहल बड़ी-बड़ी नदियों के पास और उपजाऊ घाटियों में बस्तियाँ बनाई जहाँ उन्हें खाने की चीज़ें और पानी बहुतायत से मिल सकता था। उनके बड़े-बड़े शहर नदियों के किनारे पर थे। तुमने इनमें से बाज़ मशहूर शहरों का नाम सुना होगा। मेसोपोटैमिया में बाबुल, नेनुवा, और असुर नाम के शहर थे। लेकिन इन में से किसी शहर का अब पता नहीं है। हाँ, अगर बालू या मिट्टी में गहरी खुदाई होती है तो कभी-कभी उनके खंडहर मिल जाते हैं। इन हज़ारों बरसों में वे पूरी तरह मिट्टी और बालू से ढक गए और उनका कोई निशान भी नहीं मिलता। बाज़ जगहों में इन ढके हुए शहरों के ठीक ऊपर नए शहर बस गए। जो लोग इन पुराने शहरों की खोज कर रहे हैं उन्हें गहरी खुदाई करनी पड़ी है और कभी-कभी तले ऊपर कई शहर मिले हैं। यह बात नहीं है कि ये शहर एक साथ ही तले ऊपर रहे हों। एक शहर सैकड़ों वर्षों तक आबाद रहा होगा, लोग वहाँ पैदा हुए होंगे और मरे होंगे और कई पुश्तों तक यही सिलसिला जारी रहा होगा। धीरे-धीरे शहर की आबादी घटने लगी होगी और वह वीरान हो गया होगा। आखिर वहाँ कोई न रह गया होगा और शहर मलबे का एक ढेर बन गया होगा। तब उस पर बालू और गर्द जमने लगी होगी और यह शहर उसके नीचे ढक गए होंगे क्योंकि कोई आदमी सफ़ाई करने वाला न था। एक मुद्दत के बाद सारा शहर बालू और मिट्टी से ढक गया होगा और लोगों को इस बात की याद भी न रही होगी कि यहाँ कोई शहर था। सैकड़ों बरस गुज़र गए होंगे तब नए आदमियों ने आकर नया शहर बसाया होगा। और यह नया शहर भी कुछ दिनों के बाद पुराना हो गया होगा। लोगों ने उसे छोड़ दिया होगा और वह भी वीरान हो गया होगा। एक ज़माने के बाद वह भी बालू और धूल के नीचे गायब हो गया होगा। यही सबब है कि कभी-कभी हमें कई शहरों के खंडहर ऊपर नीचे मिलते हैं। यह हालत खासकर बलुई जगहों में हुई होगी क्योंकि बालू हर एक चीज़ पर जल्दी जम जाती है।

कितनी अजीब बात है कि एक के बाद दूसरे शहर बनें, मर्दों, औरतों और बच्चों के जमघटों से गुलज़ार हों और तब धीरे-धीरे उजड़ जायं और जहाँ यह पुराने शहर थे वहाँ नए शहर बसें और नए-नए आदमी आकर वहाँ आबाद हों। फिर उनका भी खात्मा हो जाय और शहर का कोई निशान न रहे। मैं तो इन शहरों का हाल दो चार वाक्यों में लिख रहा हूं, लेकिन सोचो, कि इन शहरों के बनने और बिगड़ने और उनकी जगह नए शहरों के बनने में कितने युग बीत गए होंगे। जब कोई आदमी सत्तर या अस्सी साल का हो जाता है, तो हम उसे बुड्ढा कहते हैं। लेकिन उन हज़ारों बरसों

के सामने सत्तर या अस्सी साल क्या हैं ? जब ये शहर रहे होंगे तो उनमें कितने छोटे-छोटे बच्चे-बूढ़े होकर मर गए होंगे और कई पीढ़ियाँ गुज़र गई होंगी और अब बाबुल और नेनुवा का सिर्फ़ नाम बाकी रह गया है। एक दूसरा बहुत पुराना शहर दमिश्क था। लेकिन दमिश्क़ वीरान नहीं हुआ। वह अब तक मौजूद है और बड़ा शहर है। कुछ लोगों का ख्याल है कि दमिश्क़ दुनिया का सबसे पुराना शहर है। हिन्दुस्तान में भी बड़े-बड़े शहर नदियों के किनारे ही पर हैं। सबसे पुराने शहरों में एक का नाम इन्द्रप्रस्थ था जो कहीं दिल्ली के आसपास था, लेकिन इन्द्रप्रस्थ का अब निशान भी नहीं है। बनारस या काशी भी बड़ा पुराना शहर है, शायद दुनिया के सब से पुराने शहरों में हो। इलाहाबाद, कानपुर और पटना और बहुत से दूसरे शहर जो तुम्हें खुद याद होंगे नदियों ही के किनारे हैं। लेकिन ये बहुत पुराने नहीं हैं। हाँ, प्रयाग या इलाहाबाद और पटना जिसका पुराना नाम पाटलिपुत्र था कुछ पुराने हैं।

इसी तरह चीन में भी पुराने शहर हैं।
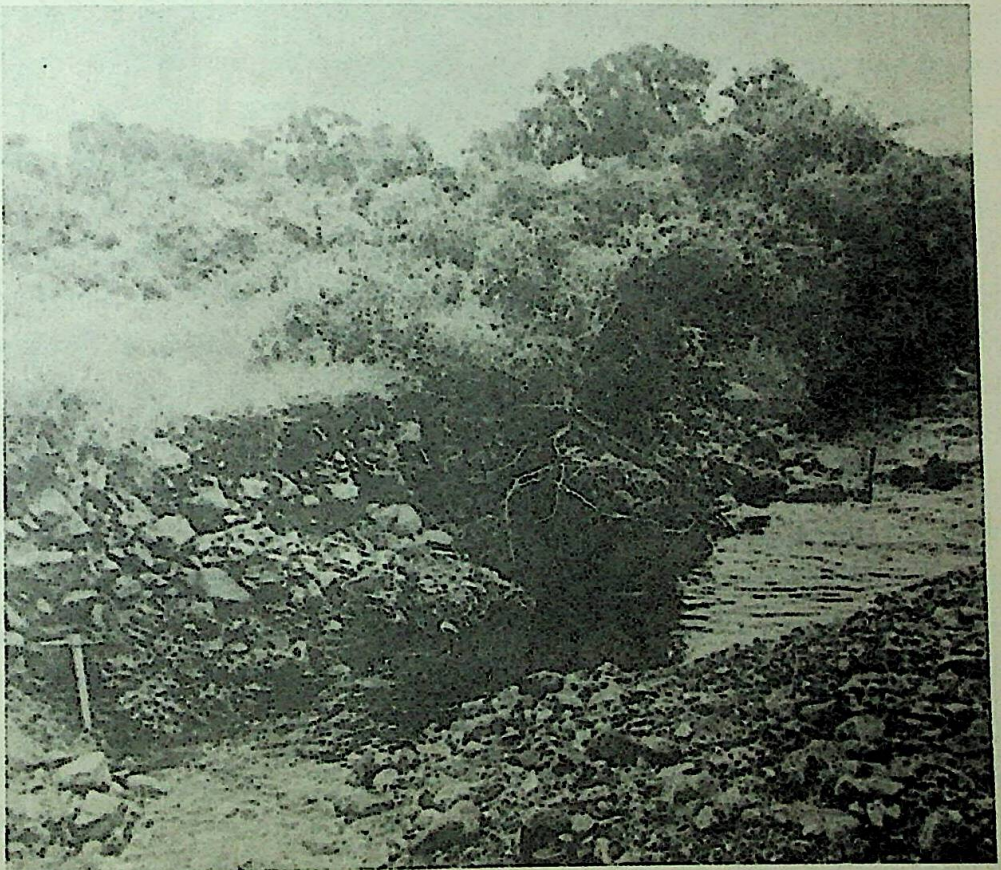
सांवन नदी के उत्तरी किनारे का एक दृश्य

पत्थर युग का एक स्थान, १९५६ में इस क्षेत्र में खोज़ करते हुए मिला

मिस्र और क्रीट

पुराने ज़माने में शहरों और गाँवों में किस तरह के लोग रहते थे ? उनका कुछ हाल उनके बनाए हुए बड़े-बड़े मकानों और इमारतों से मालूम होता है। कुछ हाल उन पत्थर की तख्तियों की लिखावट से भी मालूम होता है जो वे छोड़ गए हैं। इसके अलावा कुछ बहुत पुरानी किताबें भी हैं जिनसे उस पुराने ज़माने का बहुत कुछ हाल मालूम हो जाता है।

मिस्र में अब भी बड़े-बड़े मीनार और स्फिंग्स मौजूद हैं। लक्सर और दूसरी जगहों में बहुत बड़े मन्दिरों के खंडहर नज़र आते हैं। तुमने इन्हें देखा नहीं है लेकिन जिस वक्त हम स्वेज़ नहर से गुज़र रहे थे, वे हमसे बहुत दूर न थे। लेकिन तुमने उनकी तसवीरें देखी हैं। शायद तुम्हारे पास उनकी तसवीरों के पोस्टकार्ड मौजूद हों। स्फिंग्स औरत के सिर वाली शेर की मूर्ति को कहते हैं। इसका डीलडौल बहुत बड़ा है। किसी को यह नहीं मालूम कि यह मूर्ति क्यों बनाई गई और उसका क्या मतलब है। उस औरत के चेहरे पर एक अजीब मुर्झाई हुई मुसकराहट है। और किसी की समझ में नहीं आता कि वह क्यों मुस्करा रही है। किसी आदमी के बारे में यह कहना कि वह स्फिंग्स की तरह है इसका यह मतलब है कि तुम उसे बिलकुल नहीं समझते।

मीनार भी बहुत लम्बे चौड़े हैं। दरअसल वे मिस्र के पुराने बादशाहों के मक़बरे हैं जिन्हें फ़िरऊन कहते थे। तुम्हें याद है कि तुमने लन्दन के अजायबघर में मिस्र की ममी देखी थी ? ममी किसी आदमी या जानवर की लाश को कहते हैं जिसमें कुछ ऐसे तेल और मसाले लगा दिये गए हों कि वह सड़ न सके। फ़िरऊनों की लाशों की ममी बना दी जाती थीं और तब उन बड़े-बड़े मीनारों में रख दी जाती थीं। लाशों के पास सोने और चाँदी के गहने और सजावट की चीज़ें और खाना रख दिया जाता था। क्योंकि लोग ख्याल करते थे कि शायद मरने के बाद उन्हें इन चीज़ों की ज़रूरत हो। दो तीन साल हुए कुछ लोगों ने इनमें से एक मीनार के अन्दर एक फ़िरऊन की लाश पाई जिसका नाम तूतन खामिन था। उसके पास बहुत सी खूबसूरत और क़ीमती चीज़ें रखी हुई मिलीं।

उस ज़माने में मिस्र में खेती को सींचने के लिए अच्छी-अच्छी नहरें और झीलें बनाई जाती थीं। मेरीडू नाम की झील खास तौर पर मशहूर थी। इससे मालूम होता है कि पुराने ज़माने के मिस्र के रहने वाले कितने होशियार थे और उन्होंने कितनी तरक्क़ी की थी। इन नहरों और झीलों और बड़े-बड़े मीनारों को अच्छे-अच्छे इंजीनियरों ने ही तो बनाया होगा।

कैंडिया या क्रीट एक छोटा सा टापू है जो भूमध्य सागर में है। सईद बन्दर से वेनिस जाते वक्त हम उस टापू के पास से होकर निकले थे। उस छोटे-से टापू में उस पुराने ज़माने में बहुत अच्छी सभ्यता

स्फिंक्स और पिरामिड

पाई जाती थी। नोसोज़ में एक बहुत बड़ा महल था और उसके खंडहर अब तक मौजूद हैं। इस महल में ग़ुसलखाने थे और पानी की नलें भी थीं जिन्हें नादान लोग नए ज़माने की निकली हुई चीज़ समझते हैं। इसके अलावा वहाँ खूबसूरत मिट्टी के बरतन, पत्थर की नक्काशी, तसवीरें और धातु और हाथी दाँत के बारीक काम भी होते थे। इस छोटे से टापू में लोग शान्ति से रहते थे और उन्होंने खूब तरक्क़ी की थी।
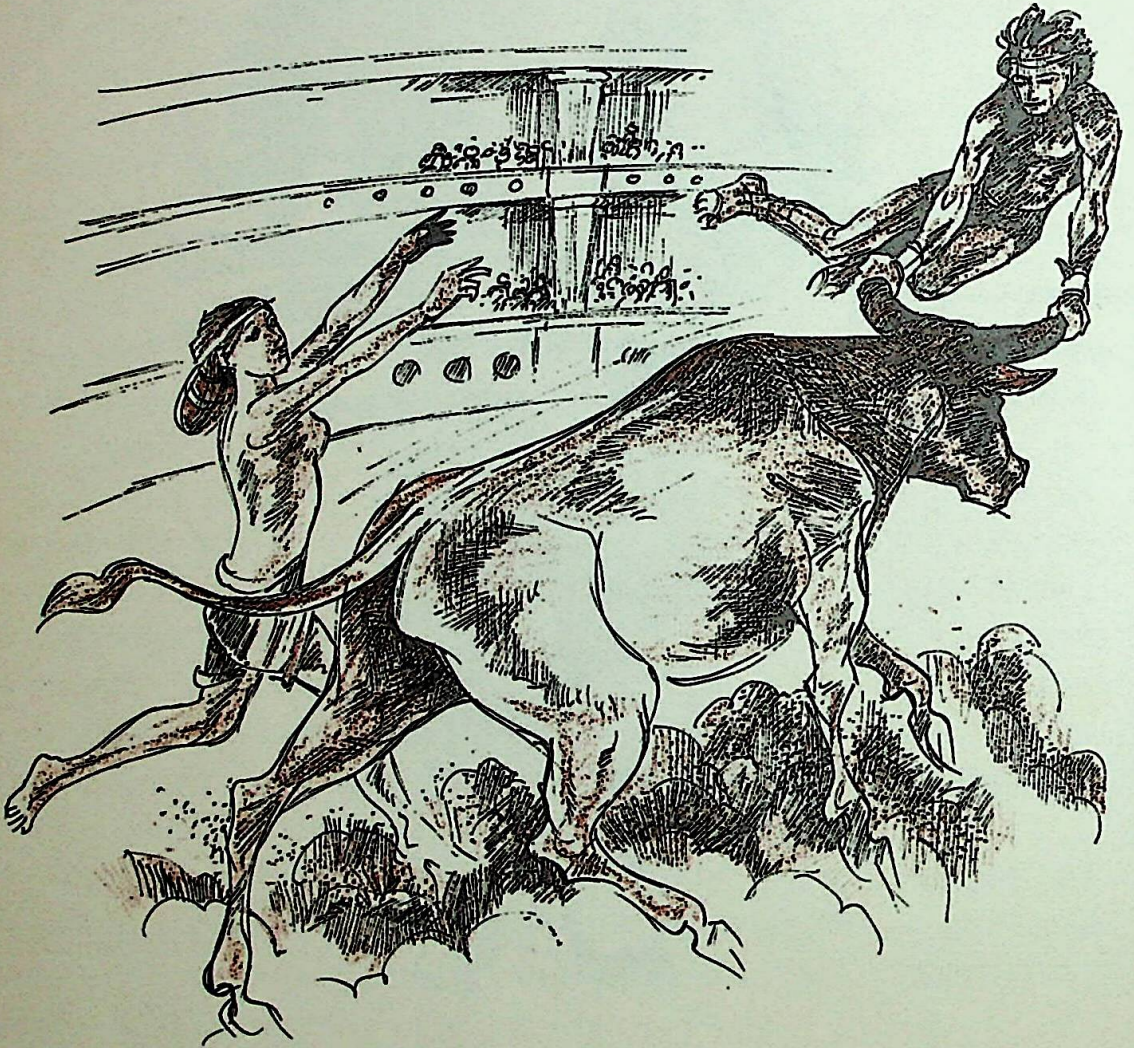
प्राचीन क्रीट का एक दृश्य

तुमने मीदास बादशाह का हाल पढ़ा होगा जिसकी निस्बत मशहूर है कि जिस चीज़ को वह छू लेता था वह सोना हो जाती थी। वह खाना न खा सकता था क्योंकि खाना सोना हो जाता था और सोना तो खाने की चीज़ नहीं। उसके लालच की उसे यह सज़ा दी गई थी। यह है तो एक मज़ेदार कहानी, लेकिन इससे हमें यह मालूम होता है कि सोना इतनी अच्छी और लाभदायक चीज़ नहीं है जितना लोग ख्याल करते हैं। क्रीट के सब राजा मीदास कहलाते थे और यह कहानी उन्हीं में से किसी राजा की होगी।

क्रीट की एक और कथा है जो शायद तुमने सुनी हो। वहाँ मैनोटार नाम का एक देव था जो आधा आदमी और आधा बैल था। कहा जाता है कि जवान आदमी और लड़कियां, उसे खाने को दी जाती थीं। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं कि मज़हब का ख्याल शुरू में किसी अनजानी चीज़ के डर से पैदा हुआ। लोगों को प्रकृति का कुछ ज्ञान न था, न उन बातों को समझते थे जो दुनिया में बराबर होती रहती थीं। इसलिए डर के मारे वे बहुत सी बेवक़ूफ़ी की बातें किया करते थे। यह बहुत मुमकिन है कि लड़के और लड़कियों का यह बलिदान किसी देव को न किया जाता हो बल्कि वह महज़ ख्याली देव हो क्योंकि मैं समझता हूं ऐसा देव कभी हुआ ही नहीं।

उस पुराने ज़माने में सारे संसार में मर्दों-औरतों का फ़र्ज़ी देवताओं के लिए बलिदान किया जाता था। यही उनकी पूजा का ढंग था। मिस्र में लड़कियाँ नील नदी में डाल दी जाती थीं। लोगों का ख्याल था कि इससे पिता नील खुश होंगे।

बड़ी खुशी की बात है कि अब आदमियों का बलिदान नहीं किया जाता; हाँ, शायद दुनिया के किसी कोने में कभी-कभी हो जाता हो। लेकिन अब भी ईश्वर को खुश करने के लिए जानवरों का बलिदान किया जाता है। किसी की पूजा करने का यह कितना अनोखा ढंग है!

चीन और हिन्दुस्तान

हम लिख चुके हैं कि शुरू में मेसोपोटैमिया, मिस्र और भूमध्य सागर के छोटे से टापू क्रीट में सभ्यता शुरू हुई और फैली। उसी ज़माने में चीन और हिन्दुस्तान में भी ऊंचे दरजे की सभ्यता शुरू हुई और अपने ढंग से फैली।

दूसरी जगहों की तरह चीन में भी लोग बड़ी नदियों की घाटियों में आवाद हुए। यह उस जाति के लोग थे जिन्हें मंगोल कहते हैं। वे पीतल के खूबसूरत बर्तन बनाते थे और कुछ दिनों बाद लोहे के बर्तन भी बनाने लगे। उन्होंने नहरें और अच्छी-अच्छी इमारतें बनाईं, और लिखने का एक नया ढंग निकाला। यह लिखावट हिन्दी, उर्दू या अंगरेज़ी से बिलकुल नहीं मिलती। यह एक किस्म की तसवीरदार लिखावट थी। हर एक शब्द और कभी-कभी छोटे-छोटे जुमलों की भी तसवीर होती थी। पुराने ज़माने में मिस्र, क्रीट और बाबुल में भी तसवीरदार लिखावट होती थी। उसे अब चित्रलिपि कहते हैं। तुमने यह लिखावट अजायबघर की बाज़ किताबों में देखी होगी। मिस्र और पश्चिम के मुल्कों में यह लिखावट सिर्फ़ बहुत पुरानी इमारतों में पाई जाती है। उन मुल्कों में भी इस लिखावट का बहुत दिनों से रिवाज नहीं रहा। लेकिन चीन में अब भी एक क़िस्म की तसवीरदार लिखावट मौजूद है और ऊपर से नीचे को लिखी जाती है। अंगरेज़ी या हिन्दी की तरह बाएं से दाईं तरफ़ या उर्दू की तरह दाहिनी से बाईं तरफ़ नहीं।

हिन्दुस्तान में बहुत सी पुराने ज़माने की इमारतों के खंडहर शायद अभी तक ज़मीन में नीचे दबे पड़े हैं। जब तक उन्हें कोई खोद न निकाले तब तक हमें उनका पता नहीं चलता। लेकिन उत्तर में बाज़ बहुत पुराने खंडहरों की खुदाई हो चुकी है। यह तो हमें मालूम ही है कि बहुत पुराने ज़माने में जब आर्य लोग हिन्दुस्तान में आए तो यहाँ द्रविड़ जाति के लोग रहते थे। और उनकी सभ्यता भी ऊंचे दरजे की थी। वे दूसरे मुल्क वालों के साथ व्यापार करते थे। वे अपनी बनाई हुई बहुत सी चीज़ें मेसोपोटैमिया और मिस्र में भेजा करते थे। समुद्री रास्ते से वे खास कर चावल और मसाले और साखू की इमारती लकड़ियाँ भी भेजा करते थे। कहा जाता है कि मैसोपोटैमिया के 'उर' नामी शहर के बहुत से पुराने महल दक्षिणी हिन्दुस्तान से आई हुई साखू की लकड़ी के बने हुए थे। यह भी कहा जाता है कि सोना, मोती, हाथीदाँत, मोर और बन्दर हिन्दुस्तान से पश्चिम के मुल्कों को भेजे जाते थे। इससे मालूम होता है कि उस ज़माने में हिन्दुस्तान और दूसरे मुल्कों में बहुत व्यापार होता था। व्यापार तभी बढ़ता है जब लोग सभ्य होते हैं।

उस ज़माने में हिन्दुस्तान और चीन में छोटी-छोटी रियासतें या राज्य थे। इनमें से किसी मुल्क

में भी एक राज्य न था। हर एक छोटा शहर जिसमें कुछ गाँव और खेत होते थे एक अलग राज्य होता था। ये शहरी रियासतें कहलाती हैं। उस पुराने ज़माने में भी इनमें से वहुत सी रियासतों में पंचायती राज्य था। वादशाह न थे, राज्य का इंतज़ाम करने के लिए चुने हुए आदमियों की एक पंचायत होती थी। फिर भी वाज़ रियासतों में राजा का राज्य था। गोकि इन शहरी रियासतों की सरकारें अलग होती थीं, लेकिन कभी-कभी वे एक दूसरे की मदद किया करती थीं, कभी-कभी एक वड़ी रियासत कई छोटी रियासतों की अगुआ वन जाती थी।

चीन में कुछ ही दिनों वाद इन छोटी-छोटी रियासतों की जगह एक वहुत वड़ा राज्य हो गया। इसी राज्य के ज़माने में चीन की वड़ी दीवार वनाई गई थी। तुमने इस वड़ी दीवार का हाल पढ़ा है। वह कितनी अजीबोग़रीव चीज़ है। वह समुद्र के किनारे से ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों तक बनाई गई थी, ताकि मंगोल जाति के लोग चीन में घुस कर न आ सकें। यह दीवार १४०० मील लम्बी, २० से ३० फ़ीट तक ऊंची और २५ फ़ीट चौड़ी है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर क़िले और बुर्ज हैं। अगर ऐसी दीवार हिन्दुस्तान में वने तो वह उत्तर में लाहौर से लेकर दक्षिण में मद्रास तक चली जायगी। वह दीवार अव भी मौजूद है और अगर तुम चीन जाओ तो उसे देख सकती हो।

चीन देश की विशाल प्राचीर (द ग्रेट वाल)
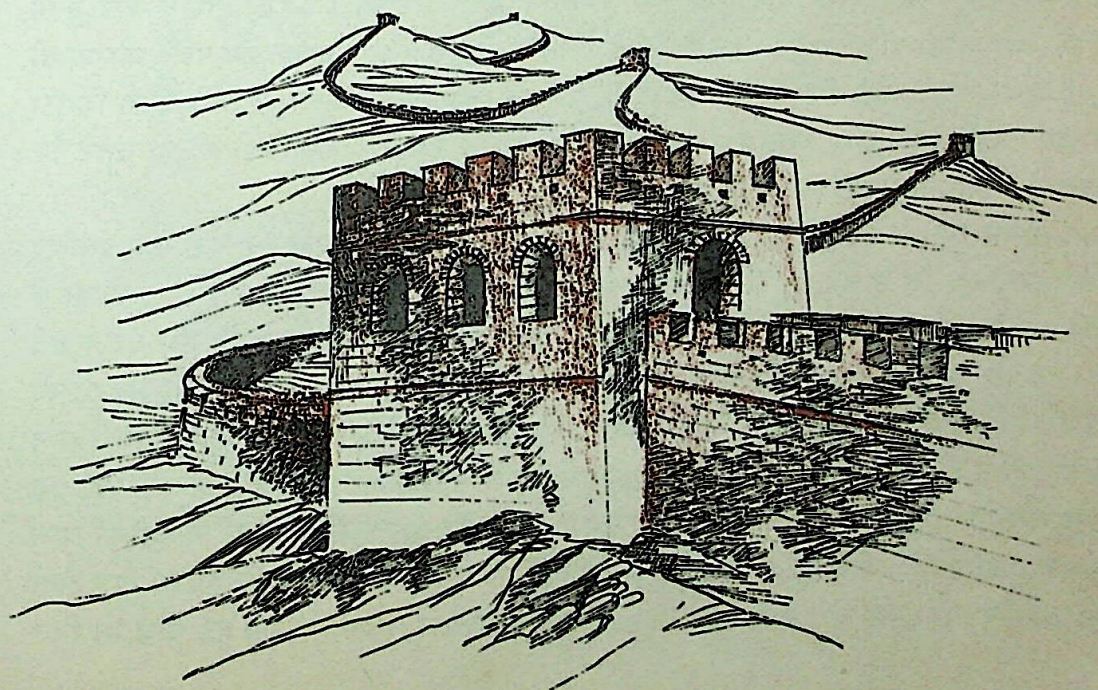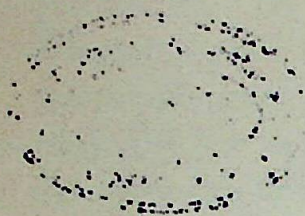
समुद्री सफर और व्यापार

फ़िनीशियन भी पुराने जमाने की एक सभ्य जाति थी। उसकी नस्ल भी वही थी जो यहूदियों और अरबों की है। वे खासकर एशिया माइनर के पश्चिमी किनारे पर रहते थे, जो आजकल का तुर्की है। उनके खास-खास शहर एकर, टायर और सिडोन भूमध्य समुद्र के किनारे पर थे। वे व्यापार के लिये लम्बे सफ़र करने में मशहूर थे। वे भूमध्य समुद्र से होते हुए सीधे इंग्लैंड तक चले जाते थे। शायद वे हिन्दुस्तान भी आए हों।

अब हमें दो बड़ी-बड़ी बातों की दिलचस्प शुरुआत का पता चलता है। समुद्री सफ़र और व्यापार। आजकल की तरह उस ज़माने में अच्छे अगिनबोट और जहाज़ न थे। सब से पहली नाव किसी दरख्त के तने को खोखला कर बनी होगी। इनके चलाने के लिए डाँडों से काम लिया जाता था और कभी-कभी हवा के ज़ोर के लिए तिरपाल लगा देते थे। उस ज़माने में समुद्र के सफ़र बहुत दिलचस्प और भयानक रहे होंगे। अरब सागर को एक छोटी-सी किश्ती पर, जो डाँडों और पालों से चलती, तय करने का ख्याल तो करो। उनमें चलने-फिरने के लिए बहुत कम जगह रहती होगी और हवा का एक हलका-सा झोंका भी उसे तले ऊपर कर देता है। अकसर वह डूब भी जाती थी। खुले समुद्र में एक छोटी-सी किश्ती पर निकलना बहादुरों ही का काम था। उसमें बड़े-बड़े खतरे थे और उनमें बैठने वाले आदमियों को महीनों तक ज़मीन के दर्शन न होते थे। अगर खाना कम पड़ जाता था तो उन्हें बीच समुद्र में कोई चीज़ न मिल सकती थी, जब तक कि वे किसी मछली या चिड़िया का शिकार न करें। समुद्र खतरे और जोखिम से भरा हुआ था। पुराने ज़माने के मुसाफ़िरों को जो खतरे पेश आते थे उसका बहुत कुछ हाल किताबों में मौजूद है।

लेकिन इस जोखिम के होते हुए भी लोग समुद्री सफ़र करते थे। मुमकिन है कुछ लोग इसलिए सफ़र करते हों कि उन्हें बहादुरी के काम पसन्द थे; लेकिन ज्यादातर लोग सोने और दौलत के लालच से सफ़र करते थे। वे व्यापार करने जाते थे; माल खरीदते थे और बेचते थे; और धन कमाते थे। व्यापार क्या है? आज तुम बड़ी-बड़ी दुकानें देखती हो और उनमें जाकर अपनी ज़रूरत की चीज़ खरीद लेना कितना सहल है। लेकिन क्या तुमने ध्यान दिया है कि जो चीज़ें तुम खरीदती हो वे आती कहाँ से हैं? तुम इलाहाबाद की एक दुकान में एक शाल खरीदती हो। वह कश्मीर से यहां तक सारा रास्ता तय करता हुआ आया होगा और ऊन कश्मीर और लद्दाख की पहाड़ियों में भेड़ों की खाल पर पैदा हुआ होगा। दाँत का मंजन जो तुम खरीदती हो शायद जहाज़ और रेलगाड़ियों पर होता हुआ अमरीका से आया हो। इसी तरह चीन, जापान, पेरिस या लन्दन की बनी हुई चीज़ें भी मिल

सकती हैं। विलायती कपड़े के एक छोटे से टुकड़े को ले लो जो यहाँ बाज़ार में बिकता है। रुई पहले हिन्दुस्तान में पैदा हुई और इंग्लैंड भेजी गई। एक बड़े कारखाने ने इसे खरीदा, साफ़ किया, उसका सूत बनाया और तब कपड़ा तैयार किया। यह कपड़ा फिर हिन्दुस्तान आया और बाज़ार में बिकने लगा। बाज़ार में बिकने के पहले इसे लौटा-फेरी में कितने हज़ार मीलों का सफ़र करना पड़ा। यह नादानी की बात मालूम होती है कि हिन्दुस्तान में पैदा होने वाली रुई इतनी दूर इंग्लैंड भेजी जाय, वहाँ उसका कपड़ा बने और फिर हिन्दुस्तान में आवे। इसमें कितना वक्त, रुपया और मेहनत बरबाद हो जाती है। अगर रुई का कपड़ा हिन्दुस्तान ही में बने तो वह ज़रूर ज्यादा सस्ता और अच्छा होगा। तुम जानती हो कि हम विलायती कपड़े नहीं खरीदते। हम खद्दर पहनते हैं क्योंकि जहाँ तक मुमकिन हो अपने मुल्क में पैदा होनेवाली चीज़ों को खरीदना अक्लमन्दी की बात है। हम इसलिए भी खद्दर खरीदते और पहनते हैं कि उससे उन ग़रीब आदमियों की मदद होती है जो उसे कातते और बुनते हैं।

अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि आजकल व्यापार कितनी पेंचीदा चीज़ है। बड़े-बड़े जहाज़ एक मुल्क का माल दूसरे देश को पहुंचाते रहते हैं। लेकिन पुराने ज़माने में यह बात न थी।

जब हम पहले-पहल किसी एक जगह आबाद हुए तो हमें व्यापार करना बिलकुल न आता था। आदमी को अपनी ज़रूरत की चीज़ें आप बनानी पड़ती थीं। यह सच है कि उस वक्त आदमी को बहुत चीज़ों की ज़रूरत न थी। जैसा तुमसे पहले कह चुका हूं। उसके बाद जाति में काम बाँटा जाने लगा। लोग तरह-तरह के काम करने लगे और तरह-तरह की चीज़ें बनाने लगे। कभी-कभी ऐसा होता होगा कि एक जाति के पास एक चीज़ ज्यादा होती होगी और दूसरी जाति के पास दूसरी चीज़। इसलिए अपनी-अपनी चीज़ों को बदल लेना उनके लिए बिलकुल सीधी बात थी। मिसाल के तौर पर एक जाति एक बोरे चने पर एक गाय दे देती होगी। उस ज़माने में रुपया न था। चीज़ों का सिर्फ़ बदला होता था। इस तरह बदला शुरू हुआ। इसमें कभी-कभी दिक्क़त पैदा होती होगी। एक बोरे चने या इसी तरह की किसी दूसरी चीज़ के लिए एक आदमी को एक गाय या दो भेड़ें ले जानी पड़ती होंगी लेकिन फिर भी व्यापार तरक्क़ी करता रहा।

जब सोना और चाँदी निकलने लगा तो लोगों ने उसे व्यापार के लिए काम में लाना शुरू किया। उन्हें ले जाना ज्यादा आसान था। और धीरे-धीरे माल के बदले में सोने या चाँदी देने का रिवाज निकल पड़ा। जिस आदमी को पहले-पहल यह बात सूझी होगी वह बहुत होशियार होगा। सोने चाँदी के इस तरह काम में लाने से व्यापार करना बहुत आसान हो गया। लेकिन उस वक्त भी आजकल की तरह सिक्के न थे। सोना तराज़ू पर तौल कर दूसरे आदमी को दे दिया जाता था। उसके बहुत दिनों के बाद सिक्के का रिवाज हुआ और इससे व्यापार और बदले में और भी सुभीता हो गया। तब तौलने की ज़रूरत न रही क्योंकि सभी आदमी सिक्के की क़ीमत जानते थे। आजकल सब जगह सिक्के का रिवाज है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि निरा रुपया हमारे किसी काम का नहीं है। यह हमें अपनी ज़रूरत की दूसरी चीज़ों के लेने में मदद देता है। इससे चीज़ों का बदलना आसान हो जाता है। तुम्हें राजा मीदास का क़िस्सा याद होगा जिसके पास सोना तो बहुत था लेकिन खाने को कुछ नहीं। इसलिए रुपया बेकार है। जब तक हम उससे ज़रूरत की चीज़ें न खरीद लें।

मगर आजकल भी तुम्हें देहातों में ऐसे लोग मिलेंगे जो सचमुच चीज़ों का वदला करते हैं और दाम नहीं देते। लेकिन आम तौर पर रुपया काम में लाया जाता है क्योंकि इसमें वहुत ज्यादा सुभीता है। वाज़ नादान लोग समझते हैं कि रुपया खुद ही वहुत अच्छी चीज़ है और वह उसे खर्च करने के वदले बटोरते और गाड़ते हैं। इससे मालूम हो जाता है कि उन्हें यह नहीं मालूम है कि रुपये का रिवाज कैसे पड़ा और यह दरअसल क्या है।

भाषा, लिखावट और गिनती

हम तरह-तरह की भाषाओं का पहले ही जिक्र कर चुके हैं और दिखा चुके हैं कि उनका आपस में क्या नाता है। आज हम यह विचार करेंगे कि लोगों ने बोलना क्योंकर सीखा।

हमें मालूम है कि जानवरों की भी कुछ बोलियाँ होती हैं। लोग कहते हैं कि वन्दरों में थोड़ी सी मामूली चीज़ों के लिए शब्द या बोलियाँ मौजूद हैं। तुमने वाज़ जानवरों की अजीब आवाजें भी सुनी होंगी जो वे डर जाने पर और अपने भाई वन्दों को किसी खतरे की खवर देने के लिए मुंह से निकालते हैं। शायद इसी तरह आदमियों में भी भाषा की शुरुआत हुई। शुरू में वहुत सीधी-सादी आवाज़ें रही होंगी। ज़व वे किसी चीज़ को देख कर डर जाते होंगे और दूसरों को उसकी खबर देना चाहते होंगे तो वे एक खास तरह की आवाज़ निकालते होंगे। शायद इसके वाद मज़दूरों की बोलियाँ शुरू हुईं। जव वहुत से आदमी एक साथ कोई काम करते हैं तो वे मिल कर एक तरह का शोर मचाते हैं। क्या तुमने आदमियों को कोई चीज़ खींचते या कोई भारी बोझ उठाते नहीं देखा है ? ऐसा मालूम होता है कि एक साथ हाँक लगाने से उन्हें कुछ सहारा मिलता है। यही बोलियाँ पहले-पहल आदमी के मुंह से निकली होंगी।

धीरे-धीरे और शब्द वनते गए होंगे—जैसे, पानी, आग, घोड़ा, भालू। पहले शायद सिर्फ़ नाम ही थे, क्रियाएं न थीं। अगर कोई आदमी यह कहना चाहता होगा कि मैंने भालू देखा है तो वह एक

la lingua

भाषा

o idioma

la langue

ভাষা

die Sprache
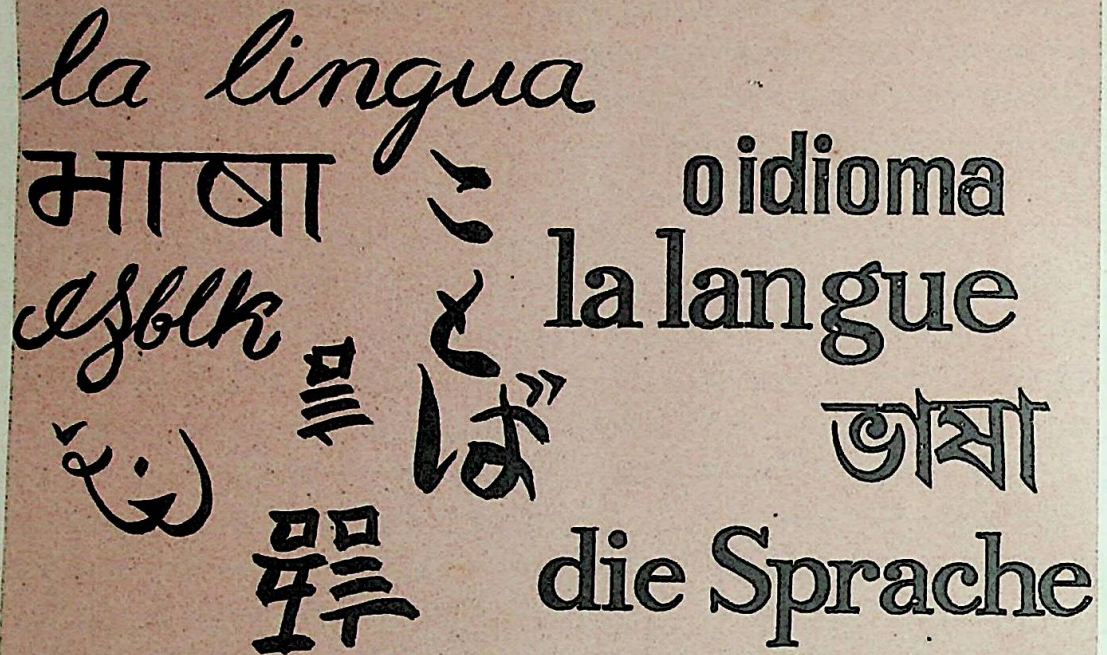
शब्द "भालू" कहता होगा और वच्चों की तरह भालू की तरफ़ इशारा करता होगा। उस वक्त लोगों में वहुत कम वातचीत होती होगी।

धीरे-धीरे भाषा तरक्क़ी करने लगी। पहले छोटे-छोटे वाक्य पैदा हुए, फिर वड़े-वड़े। किसी ज़माने में भी शायद सभी जातियों की एक ही भाषा न थी। लेकिन कोई ज़माना ऐसा ज़रूर था जव वहुत-सी तरह-तरह की भाषाएं न थीं। मैं तुमसे कह चुका हूं कि तव थोड़ी-सी भाषाएं थीं। मगर वाद को, उन्हीं में से हर एक की कई-कई शाखायें पैदा हो गईं।

सभ्यता शुरू होने के ज़माने तक, जिसका हम जिक्र कर रहे हैं भाषा ने वहुत तरक्क़ी कर ली थी। वहुत से गीत वन गए थे और भाट व गवैये उन्हें गाते थे। उस ज़माने में न लिखने का वहुत रिवाज था और न वहुत किताबें थीं। इसलिए लोगों को अव से कहीं ज्यादा वातें याद रखनी पड़ती थीं। तुकवन्दियों और छन्दों को याद रखना ज्यादा सहल है। यही सवव है कि उन मुल्कों में जहां पुराने ज़माने में सभ्यता फैली हुई थी, तुकवन्दियों और लड़ाई के गीतों का वहुत रिवाज था।

भाटों और गवैयों को मरे हुए वीरों की बहादुरी के गीत बहुत अच्छे लगते थे। उस ज़माने में आदमी की ज़िन्दगी का खास काम लड़ना था, इसलिए उनके गीत भी लड़ाइयों ही के हैं। हिन्दुस्तान ही नहीं, दूसरे मुल्कों में भी, यही रिवाज था।

लिखने की शुरुआत भी बहुत मज़ेदार है। मैं चीनी लिखावट का बयान कर चुका हूं। सभी में लिखना तसवीरों से शुरू हुआ होगा। जो आदमी मोर के बारे में कुछ कहना चाहता होगा, उसे मोर की तसवीर या खाका बनाना पड़ता होगा। हाँ, इस तरह कोई बहुत ज्यादा न लिख सकता होगा। धीरे-धीरे तसवीरें सिर्फ़ निशानियाँ रह गई होंगी। इसके बहुत दिनों पीछे वर्णमाला निकली होगी और उसका रिवाज हुआ होगा। इससे लिखना बहुत सहल हो गया और जल्दी-जल्दी तरक्क़ी होने लगी।

अदद और गिनती का निकलना भी बड़े मार्के की बात रही होगी। गिनती के बग़ैर कोई रोज़गार करने का ख्याल भी नहीं किया जा सकता। जिस आदमी ने गिनती निकाली वह बड़ा दिमाग़ वाला या बहुत होशियार आदमी रहा होगा। यूरोप में पहले अंक बहुत बेढंगे थे। रोमन अंकों को तुम जानती हो I, II, III, IV, V, VI, VII, IX, X इत्यादि। ये बहुत बेढंगे हैं और इन्हें काम में लाना मुश्किल है। आजकल हम, हर एक भाषा में, जिन अंकों को काम में लाते हैं वे बहुत अच्छे हैं। मैं १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० वग़ैरा अंकों को कह रहा हूं। इन्हें अरबी अंक कहते हैं क्योंकि यूरोप वालों ने उन्हें अरब जाति से सीखा। लेकिन अरब वालों ने उन्हें हिन्दुस्तानियों से सीखा था। इसलिए उन्हें हिन्दुस्तानी अंक कहना ज्यादा मुनासिब होगा।

लेकिन मैं तो सरपट दौड़ा जा रहा हूं। अभी हम अरब जाति तक नहीं पहुंचे हैं।

आदमियों के अलग-अलग दरजे

लड़के, लड़कियों और सयानों को भी इतिहास अकसर एक अजीब ढंग से पढ़ाया ज़ाता है। उन्हें राजाओं और दूसरे आदमियों के नाम और लड़ाइयों की तारीखें याद करनी पड़ती हैं। लेकिन दरअसल इतिहास लड़ाइयों का, या थोड़े से राजाओं या सेनापतियों का नाम नहीं है। इतिहास का काम यह है कि हमें किसी मुल्क के आदमियों का हाल बतलाए, कि वे किस तरह रहते थे, क्या करते

थे और क्या सोचते थे, किस बात से उन्हें खुशी होती थीं, किस बात से रंज होता था, उनके सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं और उन लोगों ने कैसे उन पर क़ाबू पाया। अगर हम इतिहास को इस तरीक़े से पढ़ें तो हमें उससे बहुत सी बातें मालूम होंगी। अगर उसी तरह की कोई कठिनाई या आफ़त हमारे सामने आए, तो इतिहास के जानने से हम उसपर विजय पा सकते हैं। पुराने ज़माने का हाल पढ़ने से हमें यह पता चल जाता है, कि लोगों की हालत पहले से अच्छी है या खराब, उन्होंने कुछ तरक्क़ी की है या नहीं।

यह सच है कि हमें पुराने ज़माने के मर्दों और औरतों के चरित्र से कुछ न कुछ सबक़ लेना चाहिए। लेकिन हमें यह भी जानना चाहिए कि पुराने ज़माने में भिन्न-भिन्न जाति के आदमियों का क्या हाल था।

मैं तुम्हें बहुत से खत लिख चुका हूं। यह चौबीसवाँ खत है लेकिन अब तक हमने बहुत पुराने ज़माने ही की चर्चा की है, जिसके बारे में हमें थोड़ी ही सी बातें मालूम हैं। इसे हम इतिहास नहीं कह सकते। हम इसे इतिहास की शुरुआत, या इतिहास का उदय कह सकते हैं। जल्द ही हम बाद के ज़माने का ज़िक्र करेंगे, जिससे हम ज्यादा वाक़िफ़ हैं और जिसे ऐतिहासिक काल कह सकते हैं। लेकिन उस पुरानी सभ्यता का ज़िक्र छोड़ने के पहले आओ हम उसपर फिर एक निगाह डालें और इसका पता लगावें कि उस ज़माने में आदमियों की कौन-कौन-सी क़िस्में थीं।

हम यह पहले देख चुके हैं कि पुरानी जातियों के आदमियों ने तरह-तरह के काम करने शुरू किए। काम या पेशे का बंटवारा हो गया। हमने यह भी देखा है कि जाति के सरपंच या सरग़ना ने अपने परिवार को दूसरों से अलग कर लिया और काम का इन्तज़ाम करने लगा। वह ऊंचे दरजे का आदमी बन बैठा, या यों समझ लो कि उसका परिवार औरों से ऊंचे दरजे में आ गया। इस तरह आदमियों के दो दरजे हो गए—एक इन्तज़ाम करता था और हुक्म देता था, और दूसरा असली काम करता था। और यह तो ज़ाहिर है कि इन्तज़ाम करनेवाले दरजे का इख्तियार ज्यादा था और इसके ज़ोर से उन्होंने वह सब चीज़ें ले लीं जिन पर वह हाथ बढ़ा सके। वे ज्यादा मालदार हो गए और काम करनेवालों की कमाई को दिन-दिन ज्यादा हड़पने लगे।

इसी तरह ज्यों-ज्यों काम की बाँट होती गई और और दरजे पैदा होते गए। राजा और उसका परिवार तो था ही, उसके दरबारी भी पैदा हो गए। वे मुल्क का इन्तज़ाम करते थे और दुश्मनों से उसकी हिफ़ाज़त करते थे। वे आम तौर पर कोई दूसरा काम न करते थे।

मन्दिरों के पुजारियों और नौकरों का एक दूसरा दरजा था। उस ज़माने में इन लोगों का बहुत रोबदाब था और हम उनका ज़िक्र फिर करेंगे।

तीसरा दरजा व्यापारियों का था। ये वे सौदागर लोग थे जो एक मुल्क का माल दूसरे मुल्क में ले जाते थे, माल खरीदते थे और बेचते थे और दूकानें खोलते थे।

चौथा दरजा कारीगरों का था, जो हरएक क़िस्म की चीज़ें बनाते थे, सूत कातते और कपड़े बुनते थे, मिट्टी के बरतन बनाते थे, पीतल के बरतन गढ़ते थे, सोने और हाथी दाँत की चीज़ें बनाते थे और बहुत से और काम करते थे। ये लोग अकसर शहरों में या शहरों के नज़दीक रहते थे लेकिन

बहुत से देहातों में भी बसे हुए थे।

सबसे नीचा दरजा उन किसानों और मजदूरों का था जो खेतों में या शहरों में काम करते थे। इस दरजे में सबसे ज्यादा आदमी थे। और सभी दरजों के लोग उन्हीं पर दाँत लगाए रहते थे और उनसे कुछ न कुछ ऐंठते रहते थे।

राजा, मन्दिर और पुजारी

हमने पिछले खत में लिखा था कि आदमियों के पाँच दरजे बन गए। सबसे बड़ी जमाअत मज़दूर और किसानों की थी। किसान ज़मीन जोतते थे और खाने की चीज़ें पैदा करते थे। अगर किसान या और लोग ज़मीन न जोतते और खेती न होती तो अनाज पैदा ही न होता, या होता तो बहुत कम। इसलिए किसानों का दरजा बहुत ज़रूरी था। वे न होते तो सब लोग भूखों मर जाते। मज़दूर भी खेतों या शहरों में बहुत फ़ायदे के काम करते थे। लेकिन इन अभागों को इतना ज़रूरी काम करने और हर एक आदमी के काम आने पर भी मुश्किल से गुज़ारे भर को मिलता था। उनकी कमाई का बड़ा हिस्सा दूसरों के हाथ पड़ जाता था खास कर राजा और उसके दरजे के दूसरे आदमियों और अमीरों के हाथ। उसकी टोली के दूसरे लोग जिनमें दरबारी भी शामिल थे उन्हें बिलकुल चूस लेते थे।

हम पहले लिख चुके हैं कि राजा और उसके दरबारियों का बहुत दबाव था। शुरू में जब जातियाँ बनीं, तो ज़मीन किसी एक आदमी की न होती थी, जाति भर की होती थी। लेकिन जब राजा और उसकी टोली के आदमियों की ताक़त बढ़ गई तो वे कहने लगे कि ज़मीन हमारी है। वे ज़मींदार हो गए और बेचारे किसान जो छाती फाड़ कर खेती-बारी करते थे, एक तरह से महज़ उनके नौकर हो गए। फल यह हुआ कि किसान खेती करके जो कुछ पैदा करते थे वह बंट जाता था और बड़ा हिस्सा ज़मींदार के हाथ लगता था।

प्राचीन मिस्र के कतिपय देवता

वाज़ मन्दिरों के क़ब्ज़े में भी ज़मीन थी, इसलिए पुजारी भी ज़मींदार हो गए। मगर ये मन्दिर और उनके पुजारी थे कौन। मैं एक खत में लिख चुका हूं कि शुरू में जंगली आदमियों को ईश्वर और मजहब का ख्याल इस वजह से पैदा हुआ कि दुनिया की वहुत-सी वातें उनकी समझ में न आती थीं और जिस वात को वे समझ न सकते थे, उससे डरते थे। उन्होंने हर एक चीज़ को देवता या देवी वना लिया, जैसे नदी, पहाड़, सूरज, पेड़, जानवर और वाज़ ऐसी चीज़ें जिन्हें वे देख तो न सकते थे पर कल्पना करते थे, जैसे भूत-प्रेत। वे इन देवताओं से डरते थे, इसलिए उन्हें हमेशा यह ख्याल होता था कि वे उन्हें सज़ा देना चाहते हैं। वे अपने देवताओं को भी अपनी ही तरह क्रोधी और निर्दयी समझते थे और उनका ग़ुस्सा ठंडा करने या उन्हें खुश करने के लिए क़ुरवानियाँ दिया करते थे।

इन्हीं देवताओं के लिए मन्दिर वनने लगे। मन्दिर के भीतर एक मंडप होता था जिसमें देवता की मूर्ति होती थी। वे किसी ऐसी चीज़ की पूजा कैसे करते जिसे वे देख ही न सकें। यह ज़रा मुश्किल है। तुम्हें मालूम है कि छोटा वच्चा उन्हीं चीज़ों का ख्याल कर सकता है जिन्हें वह देखता है। शुरू ज़माने के लोगों की हालत कुछ वच्चों की सी थी। चूंकि वे मूर्ति के विना पूजा ही न कर सकते थे, वे अपने मन्दिरों में मूर्तियाँ रखते थे। यह कुछ अजीव वात है कि ये मूर्तियाँ वरावर डरावने, कुरूप जानवरों की होती थीं, या कभी-कभी आदमी और जानवर की मिली हुई। मिस्र में एक ज़माने में विल्ली की पूजा होती थी, और मुझे याद आता है कि एक दूसरे ज़माने में वन्दर की। समझ में नहीं आता कि लोग ऐसी भयानक मूर्तियों की पूजा क्यों करते थे। अगर मूर्ति ही पूजना चाहते थे तो उसे खूवसूरत क्यों न वनाते थे? लेकिन शायद उनका ख्याल था कि देवता डरावने होते हैं इसीलिए वे उनकी ऐसी भयानक मूर्तियाँ वनाते थे।

उस ज़माने में शायद लोगों का यह ख्याल न था कि ईश्वर एक है, या वह कोई वड़ी ताकत है जैसा लोग आज समझते हैं। वे सोचते होंगे कि वहुत से देवता और देवियाँ हैं, जिनमें शायद कभी-कभी लड़ाइयाँ भी होती हों। अलग-अलग शहरों और मुल्कों के देवता भी अलग-अलग होते थे।

मन्दिरों में वहुत से पुजारी और पुजारिनें होती थीं। पुजारी लोग आम तौर पर लिखना पढ़ना जानते थे और दूसरे आदमियों से ज्यादा पढ़े-लिखे होते थे। इसलिए राजा लोग उनसे सलाह लिया करते थे। उस ज़माने में किताबों को लिखना या नक़ल करना पुजारियों का ही काम था। उन्हें कुछ विद्याएं आती थीं इसलिए वे पुराने ज़मांने के ऋषि समझे जाते थे। वे हक़ीम भी होते थे और अक्सर महज़ यह दिखाने के लिए कि वे लोग कितने पहुंचे हुए हैं वे लोगों के सामने जादू के करतव किया करते थे। लोग सीधे और मूर्ख तो थे ही वे पुजारियों को जादूगर समझते थे और उनसे थर-थर काँपते थे।

पुजारी लोग हर तरह से आदमियों की ज़िन्दगी के कामों में मिले-जुले रहते थे। वही उस ज़माने के अक्लमन्द आदमियों में थे और हर एक आदमी मुसीवत या वीमारी में उनके पास जाता था। वे आदमियों के लिए वड़े-वड़े त्योहारों का इन्तज़ाम करते थे। उस ज़माने में पत्रे न थे, खास कर ग़रीव आदमियों के लिए। वे त्योहारों ही से दिनों का हिसाव लगाते थे।

पुजारी लोग प्रजा को ठगते और धोखा देते थे। लेकिन इनके साथ कई वातों में उनकी मदद

भी करते और उन्हें आगे भी बढ़ाते थे।

मुमकिन है कि जब लोग पहले-पहल शहरों में बसने लगे हों तो उन पर राज्य करनेवाले राजा न रहे हों, पुजारी ही रहे हों। बाद को राजा आए होंगे और चूंकि वे लोग लड़ने में ज्यादा होशियार थे, उन्होंने पुजारियों को निकाल दिया होगा। बाज़ जगहों में एक ही आदमी राजा और पुजारी दोनों ही होता था, जैसे मिस्र के फ़िरऊन। फ़िरऊन लोग अपनी ज़िन्दगी ही में आधे देवता समझे जाने लगे थे, और मरने के बाद तो वे पूरे देवताओं की तरह पुजने लगे।

पीछे की तरफ एक नजर

तुम मेरी चिट्ठियों से ऊब गई होगी! ज़रा दम लेना चाहती होगी। खैर, कुछ अरसे तक मैं तुम्हें नई बात न लिखूंगा। हमने थोड़े से खतों में हज़ारों लाखों बरसों की दौड़ लगा डाली है। मैं चाहता हूं कि जो कुछ हम देख आए हैं उस पर तुम ज़रा ग़ौर करो। हम उस ज़माने से चले थे जब ज़मीन सूरज ही का एक हिस्सा थी, तब वह उससे अलग होकर धीरे-धीरे ठंडी हो गई। उसके बाद चाँद ने उछाल मारी और ज़मीन से निकल भागा—मुद्दतों तक यहाँ कोई जानवर न था। तब लाखों, करोड़ों बरसों में, धीरे-धीरे जानदारों की पैदाइश हुई। दस लाख बरसों की मुद्दत कितनी होती है, इसका तुम्हें कुछ अन्दाज़ा होता है? इतनी बड़ी मुद्दत का अन्दाजा करना निहायत मुश्किल है। तुम अभी कुल दस बरस की हो और कितनी बड़ी हो गई हो! खासी कुमारी हो गई हो। तुम्हारे लिए सौ साल ही बहुत हैं। फिर कहाँ हज़ार, और कहाँ लाख जिसमें सौ हज़ार होते हैं। हमारा छोटा-सा सिर इसका ठीक अन्दाज़ा कर ही नहीं सकता। लेकिन हम अपने आपको बहुत बड़ा समझते हैं और ज़रा-ज़रा सी बातों पर झुंझला उठते हैं, और घबरा जाते हैं। लेकिन दुनियाँ के इस पुराने इतिहास में इन छोटी-छोटी बातों की हकीकत ही क्या? इतिहास के इन अपार युगों का हाल पढ़ने

और उन पर विचार करने से हमारी आंखें खुल जायंगी और हम छोटी-छोटी बातों से परेशान न होंगे।

ज़रा उन बेशुमार युगों का ख्याल करो जब किसी जानदार का नाम तक न था। फिर उस लम्बे ज़माने की सोचो जब सिर्फ़ समुद्र के जन्तु ही थे। दुनिया में कहीं आदमी का पता नहीं है। जानवर पैदा होते हैं और लाखों साल तक बेखटके इधर-उधर क़ुलेलें किया करते हैं। कोई आदमी नहीं है जो उनका शिकार कर सके। और अन्त में जब आदमी पैदा भी होता है तो बिलकुल बित्ते भर का, नन्हा-सा, सब जानवरों से कमज़ोर ! धीरे-धीरे हज़ारों बरसों में वह ज्यादा मज़बूत और होशियार हो जाता है, यहाँ तक कि वह दुनिया के जानवरों का मालिक हो जाता है। और दूसरे जानवर उसके ताबेदार और गुलाम हो जाते हैं और उसके इशारे पर चलने लगते हैं।

तब सभ्यता के फैलने का ज़माना आता है। हम इसकी शुरूआत देख चुके हैं। अब हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि आगे चलकर उसकी क्या हालत हुई। अब हमें लाखों बरसों का ज़िक्र नहीं करना है। पिछले खतों में हम तीन-चार हज़ार साल पहले के ज़माने तक पहुंच गए थे। लेकिन इधर के तीन-चार हज़ार बरसों का हाल हमें उधर के लाखों बरसों से ज्यादा मालूम है। आदमी के इतिहास की तरक्क़ी दरअसल इन्हीं तीन हज़ार बरसों में हुई है। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम इतिहास के बारे में बहुत कुछ पढ़ोगी। मैं इनके बारे में कुछ थोड़ा-सा लिखूंगा जिससे तुम्हें कुछ ख्याल हो जाय कि इस छोटी सी दुनिया में आदमी पर क्या-क्या गुज़री।

'फ़ॉसिल' और पुराने खंडहर

मैंने अरसे से तुम्हें कोई खत नहीं लिखा। पिछले दो खतों में हमने उस पुराने ज़माने पर एक नज़र डाली थी जिसका हम अपने खतों में चर्चा कर रहे हैं। मैंने तुम्हें पुरानी मछलियों की हड्डियों के चित्र पोस्टकार्ड भेजे थे जिससे तुम्हें ख्याल हो जाय कि ये 'फ़ॉसिल' कैसे होते हैं। मसूरी में जब तुमसे मेरी मुलाक़ात हुई थी तो मैंने तुम्हें दूसरे क़िस्म के 'फ़ॉसिल' की तसवीरें दिखाई थीं।

पुराने रेंगनेवाले जानवरों की हड्डियों को खास तौर से याद रखना। साँप, छिपकली, मगर और कछुवे वग़ैरा जो आज भी मौजूद हैं, रेंगने वाले जानवर हैं। पुराने ज़माने के रेंगने वाले जानवर भी इसी जाति के थे पर क़द में बहुत बड़े थे और उनकी शक्ल में भी फ़र्क़ था। तुम्हें उन देव के से जन्तुओं की याद होगी जिन्हें हमने साउथ केन्सिंगटन के अजायबघर में देखा था। उनमें से एक ३० या ४० फ़ीट लम्बा था। एक क़िस्म का मेंढ़क भी था जो आदमी से बड़ा था और एक कछुवा भी उतना ही बड़ा था। उस ज़माने में बड़े भारी-भारी चमगादड़ उड़ा करते थे और एक जानवर जिसे इगुआनोडान कहते हैं, खड़ा होने पर वह एक छोटे से पेड़ के बराबर होता था।

तुमने खान से निकले हुए पौधे भी पत्थर की सूरत में देखे थे। चट्टानों में 'फ़र्न' और पत्तियों और ताड़ों के खूबसूरत निशान थे।

रेंगनेवाले जानवरों के पैदा होने के बहुत दिन बाद वे जानवर पैदा हुए जो अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। ज्यादातर जानवर जिन्हें हम देखते हैं, और हम लोग भी, इसी जाति में हैं। पुराने ज़माने के दूध पिलाने वाले जानवर हमारे आजकल के बाज़ जानवरों से बहुत मिलते थे उनका क़द अकसर बहुत बड़ा होता था लेकिन रेंगनेवाले जानवरों के बराबर नहीं। बड़े-बड़े दाँतों वाले हाथी और बड़े डीलडौल के भालू भी होते थे।

तुमने आदमी की हड्डियाँ भी देखी थीं। इन हड्डियों और खोपड़ियों के देखने में भला क्या मज़ा आता। इससे ज्यादा दिलचस्प वे चकमक के औज़ार थे जिन्हें शुरू ज़माने के लोग काम में लाते थे।

मैंने तुम्हें मिस्र के मक़बरों और ममियों की तसवीरें भी दिखाई थीं। तुम्हें याद होगा इनमें से बाज़ बहुत खूबसूरत थीं। लकड़ी की ताबूतों पर लोगों की बड़ी-बड़ी कहानियाँ लिखी हुई थीं। थीब्स के मिस्री मक़बरों की दीवारों की तसवीरें बहुत ही खूबसूरत थीं।

तुमने मिस्र के थीब्स नामी शहर में महलों और मन्दिरों के खंडहरों की तसवीरें देखी थीं। कितनी बड़ी-बड़ी इमारतें और कितने भारी-भारी खम्भे थे। थीब्स के पास ही मेमन की बहुत बड़ी मूर्ति है। ऊपरी मिस्र में कार्नक के पुराने मन्दिरों और इमारतों की तसवीरें भी थीं। इन खंडहरों से

भी तुम्हें कुछ अन्दाज़ा हो सकता है कि मिस्र के पुराने आदमी मेमारी के काम में कितने होशियार थे। अगर उन्हें इंजीनियरी का अच्छा ज्ञान न होता तो वे ये मन्दिर और महल कभी न बना सकते।

हमने सरसरी तौर पर पीछे लिखी हुई बातों पर एक नज़र डाल ली। इसके बाद के खत में हम और आगे चलेंगे।

आर्यों का हिन्दुस्तान में आना

अब तक हमने बहुत ही पुराने ज़माने का हाल लिखा है। अब हम यह देखना चाहते हैं कि आदमी ने कैसे तरक्क़ी की और क्या-क्या काम किए। उस पुराने ज़माने को इतिहास के पहले का ज़माना कहते हैं। क्योंकि उस ज़माने का हमारे पास कोई सच्चा इतिहास नहीं है। हमें बहुत कुछ अन्दाज़ से काम लेना पड़ता है। अब हम इतिहास के शुरू में पहुंच गए हैं।

पहले हम यह देखेंगे कि हिन्दुस्तान में कौन-कौन-सी बातें हुईं। हम पहले ही देख चुके हैं कि बहुत पुराने ज़माने में मिस्र की तरह हिन्दुस्तान में भी सभ्यता फैली हुई थी। रोज़गार होता था और यहाँ के जहाज़ हिन्दुस्तानी चीज़ों को मिस्र, मेसोपोटैमिया और दूसरे देशों को लेजाते थे। उस ज़माने में हिन्दुस्तान के रहने वाले द्रविड़ कहलाते थे। ये वही लोग हैं जिनकी सन्तान आजकल दक्षिणी हिन्दुस्तान में मद्रास के आसपास रहती हैं।

उन द्रविड़ों पर आर्यों ने उत्तर से आकर हमला किया, उस ज़माने में मध्य एशिया में बेशुमार आर्य रहते होंगे। मगर वहाँ सब का गुज़र न हो सकता था इसलिए वे दूसरे मुल्कों में फैल गए। बहुत से ईरान चले गए और बहुत से यूनान तक और उससे भी बहुत पश्चिम तक निकल गए। हिन्दुस्तान में भी उनके दल के दल कश्मीर के पहाड़ों को पार करके आए। आर्य एक मज़बूत लड़नेवाली जाति थी और उसने द्रविड़ों को भगा दिया। आर्यों के रेले पर रेले उत्तर-पश्चिम से हिन्दुस्तान में आए होंगे। पहले द्रविड़ों ने उन्हें रोका लेकिन जब उनकी तादाद बढ़ती ही गई तो वे द्रविड़ों के रोके न रुक सके। बहुत दिनों तक आर्य लोग उत्तर में सिर्फ़ अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब में रहे। तब वे और आगे बढ़े और उस हिस्से में आए जो अब संयुक्त प्रान्त* कहलाता है, जहाँ हम रहते हैं। वे इसी तरह बढ़ते-बढ़ते मध्य भारत के विन्ध्य पहाड़ तक चले गए। उस ज़माने में इन पहाड़ों को पार करना मुश्किल था क्योंकि वहाँ घने जंगल थे। इसलिए एक मुद्दत तक आर्य लोग विन्ध्य पहाड़ के उत्तर तक ही रहे। बहुतों ने तो पहाड़यों को पार कर लिया और दक्षिण में चले गए। लेकिन उनके झुण्ड के झुण्ड न जा सके इसलिए दक्षिण द्रविड़ों का ही देश बना रहा।

आर्यों के हिन्दुस्तान में आने का हाल बहुत दिलचस्प है। पुरानी संस्कृत किताबों में तुम्हें उनका बहुत-सा हाल मिलेगा। उनमें से बाज़ किताबें जैसे वेद उसी ज़माने में लिखी गयी होंगी। ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है और उससे तुम्हें कुछ अंदाज़ा हो सकता है कि उस वक्त आर्य लोग हिन्दुस्तान के किस हिस्से में आबाद थे। दूसरे वेदों से और पुराणों और दूसरी संस्कृत की पुरानी किताबों से मालूम होता है कि आर्य फ़ैलते चले जा रहे थे। शायद इन पुरानी किताबों के बारें में तुम्हारी जानकारी बहुत कम है। जब तुम बड़ी होगी तो तुम्हें और बातें मालूम होंगी। लेकिन अब भी तुम्हें बहुत

*अब उत्तर प्रदेश

सी कथाएं मालूम हैं जो पुराणों से ली गई हैं। इसके बहुत दिनों बाद रामायण लिखी गई और उसके बाद महाभारत।

इन किताबों से हमें मालूम होता है कि जब आर्य लोग सिर्फ़ पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान में रहते थे, तो वे इस हिस्से को ब्रह्मावर्त कहते थे। अफ़ग़ानिस्तान को उस समय गान्धार कहते थे। तुम्हें महाभारत में गान्धारी का नाम याद है। उसका यह नाम इसलिए पड़ा कि वह गान्धार या अफ़ग़ानिस्तान की रहनेवाली थी। अफ़ग़ानिस्तान अब हिन्दुस्तान से अलग है लेकिन उस ज़माने में दोनों एक थे।

अब आर्य लोग और नीचे, गंगा और जमुना के मैदानों में आए, तो उन्होंने उत्तरी हिन्दुस्तान का नाम आर्यवर्त रखा।

पुराने ज़माने की दूसरी जातियों की तरह वे भी नदियों के किनारे पर बसे शहरों में ही आबाद हुए। काशी या बनारस, प्रयाग और बहुत से दूसरे शहर नदियों के ही किनारे हैं।
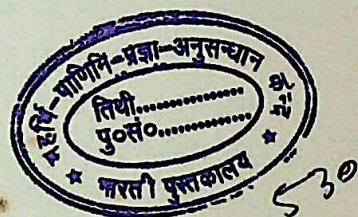
हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे

आर्यों को हिन्दुस्तान आए बहुत ज़माना हो गया। सब के सब तो एक साथ आए नहीं होंगे, उनकी फ़ौज़ों पर फ़ौजें, जाति पर जाति और कुटुम्ब पर कुटुम्ब सैकड़ों बरस तक आते रहे होंगे। सोचो कि वे किस तरह लम्बे क़ाफ़िलों में सफ़र करते हुए, गृहस्थी की सब चीज़ें गाड़ियों और जानवरों पर लादे हुए आए होंगे। वे आजकल के यात्रियों की तरह नहीं आए। वे फिर लौट कर जाने के लिए नहीं आए थे। वे यहाँ रहने के लिए या लड़ने और मर जाने के लिए आए थे। उनमें से ज्यादातर तो उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियों को पार करके आए; लेकिन शायद कुछ लोग समुद्र से ईरान की खाड़ी होते हुए आए और अपने छोटे-छोटे जहाजों में सिन्ध नदी तक चले गए।

ये आर्य कैसे थे ? हमें उनके बारे में उनकी लिखी हुई किताबों से बहुत-सी बातें मालूम होती हैं। उनमें से कुछ किताबें, जैसे वेद, शायद दुनिया की सबसे पुरानी किताबों में से हैं। ऐसा मालूम होता है कि शुरू में वे लिखी नहीं गई थीं। उन्हें लोग ज़बानी याद करके दूसरों को सुनाते थे। वे ऐसी सुन्दर संस्कृत में लिखी हुई हैं कि उनके गाने में मज़ा आता है। जिस आदमी का गला अच्छा हो और वह संस्कृत भी जानता हो उसके मुंह से वेदों का पाठ सुनने में अब भी आनन्द आता है। हिन्दू वेदों को बहुत पवित्र समझते हैं। लेकिन "वेद" शब्द का मतलब क्या ? इसका मतलब है "ज्ञान" और वेदों में वह सब ज्ञान जमा कर दिया गया है जो उस ज़माने के ऋषियों और मुनियों ने हासिल किया था। उस ज़माने में रेल गाड़ियाँ और तार और सिनेमा न थे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस ज़माने के आदमी मूर्ख थे। कुछ लोगों का तो यह ख्याल है कि पुराने ज़माने में लोग जितने अक्लमन्द होते थे, उतने अब नहीं होते। लेकिन चाहे वे ज्यादा अक्लमन्द रहे हों या न रहे हों उन्होंने बड़े मार्के की किताबें लिखीं जो आज भी बड़े आदर से देखी जाती हैं। इसी से मालूम होता है पुराने ज़माने के लोग कितने बड़े थे।

मैं पहले ही कह चुका हूं कि वेद पहले लिखे न गए थे। लोग उन्हें याद कर लिया करते थे और इस तरह वे एक पुश्त से दूसरी पुश्त तक पहुंचते गए। उस ज़माने में लोगों की याद रखने की ताक़त भी बहुत अच्छी रही होगी। हममें से अब कितने आदमी ऐसे हैं जो पूरी किताबें याद कर सकते हैं ?

जिस ज़माने में वेद लिखे गए उसे वेद का ज़माना कहते हैं। पहला वेद ऋग्वेद है। इसमें वे भजन और गीत हैं जो पुराने आर्य गाया करते थे। वे लोग बहुत खुश मिज़ाज रहे होंगे, रूखे और उदास नहीं। बल्कि जोश और हौसले से भरे हुए। अपनी तरंग में वे अच्छे-अच्छे गीत बनाते थे और अपने देवताओं के सामने गाते थे।

उन्हें अपनी जाति और अपने आप पर बड़ा ग़रूर था। "आर्य" शब्द के माने हैं "शरीफ़ आदमी" या "ऊंचे दरजे का आदमी"। और उन्हें आज़ाद रहना बहुत पसन्द था। वे आजकल की हिन्दुस्तानी सन्तानों की तरह न थे जिनमें हिम्मत का नाम नहीं और न अपनी आज़ादी के खो जाने का रंज है। पुराने ज़माने के आर्य मौत को ग़ुलामी या बेइज्ज़ती से अच्छा समझते थे।

वे लड़ाई के फ़न में बहुत होशियार थे। और कुछ-कुछ विज्ञान भी जानते थे। मगर खेती-बारी का ज्ञान उन्हें बहुत अच्छा था। खेती की क़द्र करना उनके लिए स्वाभाविक बात थी। और इसलिए जिन चीज़ों से खेती को फ़ायदा होता था उनकी भी वे बहुत क़द्र करते थे। बड़ी-बड़ी नदियों से उन्हें पानी मिलता था इसलिए वे उन्हें प्यार करते थे और उन्हें अपना दोस्त और उपकारी समझते थे। गाय और बैल से भी उन्हें अपनी खेती में और रोज़मर्रा के कामों में बड़ी मदद मिलती थी, क्योंकि गाय दूध देती थी जिसे वे बड़े शौक से पीते थे। इसलिए वे इन जानवरों की बहुत हिफ़ाज़त करते थे और उनकी तारीफ़ के गीत गाते थे। उसके बहुत दिनों के बाद लोग यह तो भूल गये कि गाय की इतनी हिफ़ाज़त क्यों की जाती थी और उसकी पूजा करने लगे। भला सोचो तो इस पूजा से किसका क्या फ़ायदा था। आर्यों को अपनी जाति का बड़ा घमंड था और इसलिए वे हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों में मिलजुल जाने से डरते थे। इसलिए उन्होंने ऐसे क़ायदे और क़ानून बनाये कि मिलावट

न होने पाए। इसी वजह से आर्यों को दूसरी जातियों में विवाह करना मना था। बहुत दिनों के बाद इसी ने आजकल की जातियाँ पैदा कर दीं। अव तो यह रिवाज़ बिलकुल ढोंग हो गया है। कुछ लोग दूसरों के साथ खाने या उन्हें छूने से भी डरते हैं। मगर यह बड़ी अच्छी बात है कि यह रिवाज़ कम होता जा रहा है।
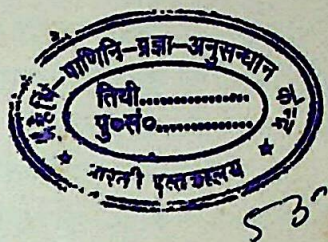
रामायण और महाभारत

वेदों के ज़माने के वाद काव्यों का ज़माना आया। इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि इसी ज़माने में दो महाकाव्य, रामायण और महाभारत लिखे गए, जिनका हाल तुमने पढ़ा है। महाकाव्य पद्य की उस बड़ी पुस्तक को कहते हैं, जिसमें वीरों की कथा वयान की गई हो।

काव्यों के ज़माने में आर्य लोग उत्तरी हिन्दुस्तान से विन्ध्य पहाड़ तक फैल गए थे। जैसा मैं तुमसे पहले कह चुका हूं इस मुल्क को आर्यावर्त कहते थे। जिस सूबे को आज हम *संयुक्त प्रदेश कहते हैं वह उस ज़माने में मध्य प्रदेश कहलाता था, जिसका मतलव है बीच का मुल्क। बंगाल को बंग कहते थे।

यहाँ एक वड़े मज़े की वात लिखता हूं जिसे जान कर तुम खुश होगी। अगर तुम हिन्दुस्तान के नक्शे पर निगाह डालो और हिमालय और विन्ध्य पर्वत के बीच के हिस्से को देखो, जहाँ आर्यावर्त रहा होगा तो तुम्हें वह दूज के चांद के आकार का मालूम होगा। इसीलिए आर्यवर्त को इन्दु देश कहते थे। इन्दु चांद को कहते हैं।

आर्यों को दूज के चाँद से वहुत प्रेम था। वे इस शक्ल की सभी चीज़ों को पवित्र समझते थे। उनके कई शहर इसी शक्ल के थे जैसे वनारस। मालूम नहीं तुमने ख्याल किया है या नहीं, कि इलाहावाद में गंगा भी दूज के चाँद की सी हो गई है।

यह तो तुम जानती ही हो कि रामायण में राम और सीता की कथा, और लंका के राजा रावण

*अब उत्तर प्रदेश

के साथ उनकी लड़ाई का हाल बयान किया गया है। पहले इस कथा को वाल्मीकि ने संस्कृत में लिखा था। बाद को वही कथा बहुत-सी दूसरी भाषाओं में लिखी गई। इनमें तुलसीदास का हिन्दी में लिखा हुआ रामचरित मानस सबसे मशहूर है।

रामायण पढ़ने से मालूम होता है कि दक्खिनी हिन्दुस्तान के बन्दरों ने रामचन्द्र की मदद की थी और हनुमान उनका बहादुर सरदार था। मुमकिन है कि रामायण की कथा आर्यों और दक्खिन के आदमियों की लड़ाई की कथा हो, जिनके राजा का नाम रावण रहा हो। रामायण में बहुत-सी सुन्दर कथायें हैं; लेकिन यहाँ मैं उनका ज़िक्र न करूंगा, तुमको खुद उन कथाओं को पढ़ना चाहिए।

महाभारत इसके बहुत दिनों बाद लिखा गया। यह रामायण से बहुत बड़ा ग्रन्थ है। यह आर्यों और दक्खिन के द्रविड़ों की लड़ाई की कथा नहीं; बल्कि आर्यों के आपस की लड़ाई की कथा है। लेकिन इस लड़ाई को छोड़ दो, तो भी यह बड़े ऊंचे दरजे की किताब है जिसके गहरे विचारों और सुन्दर कथाओं को पढ़कर आदमी दंग रह जाता है। सबसे बढ़कर हम सब को इसलिए इससे प्रेम है कि इसमें वह अमूल्य ग्रन्थरत्न है जिसे भगवद्गीता कहते हैं।

ये किताबें कई हज़ार बरस पहले लिखी गई थीं। जिन लोगों ने ऐसी-ऐसी किताबें लिखीं वे ज़रूर बहुत बड़े आदमी थे। इतने दिन गुज़र जाने पर भी ये पुस्तकें अब तक ज़िन्दा हैं, लड़के उन्हें पढ़ते हैं और सयाने उनसे उपदेश लेते हैं।